चिंतन

इजराइल-लेबनान युद्ध खत्म करवाने को आगे आए दुनिया

इजराइल और फिलिस्तीन के बीच पिछले एक साल से चल रही जंग खतरनाक मोड़ पर पहुंच चुकी है। जंग में फिलिस्तीन के पक्ष में खड़ा लेबनान भी पूरी तरह से चपेट में आ चुका है। इजराइल ने गुरुवार को दक्षिणी लेबनान में इजराइली टैंकों ने यूएन की एक इमारत पर अटैक किया। इस हमले में यूएन पीसकीपिंग फोर्स के 2 सदस्य घायल हो गए थे। ये दोनों इंडोनेशिया के नागरिक हैं। 1978 से लेबनान में तैनात यूएनआईएफआईएल के सदस्य यहां खतरों की निगरानी करने और जरूरत पड़ने पर लोगों को मानवीय सहायता पहुंचाने का काम करते हैं। इजराइल ने लेबनान की राजधानी बेरूत में एक इमारत पर हवाई हमले किए। लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि हमले में 22 लोगों की मौत हो गई, जबकि 177 लोग घायल हुए हैं। इजराइल ने हमले पर फिलहाल कोई बयान जारी नहीं किया है। इससे पहले लेबनान में ऐसे धमाके हो चुके हैं, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। इन विस्फोटों में जिस तरह से पेजर और वॉकी-टॉकी जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, जो आधुनिक युग की तुलना में पुराने हो चुके हैं का इस्तेमाल किया गया। लेबनान में एक सौर ऊर्जा यंत्र में भी विस्फोट किया गया। इन तीन तरह के धमाकों में कम से कम 90 लोगों की मौत हो गई और 3500 लोग जख्मी हो गए। लेबनान पर इन हमलों ने साबित कर दिया कि युद्ध के लिए न केवल मिसाइलों, लड़ाकू विमानों, तोप, पनडुब्बियों और लाखों सैनिकों की जरूरत है, बल्कि हमारी जेब में मौजूद इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी शस्त्र में बदल सकते हैं। कहा गया है कि इजराइल ने ये धमाके आतंकी संगठन हिजबुल्लाह को सबक सिखाने के लिए किए थे, जिसने ईरान के समर्थन से लेबनान से इजराइल पर हमला किया था। ऐसा नहीं है कि लेबनान और इजराइल में यह पहली बार हो रहा है। 2006 युद्ध इजराइल व लेबनान के मध्य लड़ा गया था। युद्ध के तुरंत बाद दोनों देशों ने अपने आप को विजयी बताया था, परंतु बाद में इजराइली पक्ष ने हार स्वीकार कर ली। इस युद्ध में इजराइल को हिजबुल्लाह ने अपनी सैन्य क्षमता का बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए पहली बार हार का स्वाद चखाया था। इसके बाद से ही इजराइल हिजबुल्लाह को ईरान के बाद अपना सबसे बड़ा दुश्मन मानता है, जबकि हिजबुल्लाह आज मध्य पूर्व की सबसे मजबूत और प्रशिक्षित सेनाओं में से एक है। इस युद्ध के बाद हसन नसरूल्लाह मध्य पूर्व के हीरो बन गए थे, लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। इजराइल पहले से कहीं ज्यादा ताकतवर है। उसके पास आधुनिक हथियारों व सुरक्षा उपकरणों की भरमार है। यही कारण है कि वो एक के बाद एक प्रहार कर रहा है। गुरुवार को हुए इजराइली हमले से दुनिया में चिंता की लहर है। सऊदी अरब, कतर और यूएई जैसे कई खाड़ी देश ईरान के तेल भंडारों पर इजराइली हमला रोकने के लिए अमेरिका पर दबाव बना रहे हैं। इन देशों का कहना है कि वे ईरान पर हमले के लिए इजराइल को अपना एयरस्पेस इस्तेमाल नहीं करने देंगे। इजराइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने अपनी सिक्योरिटी कैबिनेट के साथ एक मीटिंग की थी। दावा किया जा रहा है कि नेतन्याहू ने यह बैठक ईरान पर हमले के प्लान को फाइनल करने के लिए की थी। इससे पहले इजराइली प्रधानमंत्री ने ईरान पर पलटवार के लिए 9 अक्टूबर को अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन से भी फोन पर बात की थी। इस दौरान बाइडेन ने दोहराया कि इजराइल को अपनी सुरक्षा का पूरा अधिकार है। उसे ईरान के तेल और परमाणु ठिकानों पर हमला करने से बचना चाहिए। पूरी दुनिया समेत अमेरिका को युद्ध खत्म करवाने के प्रयास करने चाहिए। युद्ध किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता।

आस्था

जी.वी. अंशुमान राव

कांची की कामाक्षी शक्ति पीठ हैं भगवान राम की कुल देवी

नवरात्रि पर्व के दौरान संपूर्ण उत्तर भारत में दुर्गा पूजा की उमंग हर जगह दिखाई देती है, पर शक्ति स्वरूप देवी के अनेक रूपों की पूजा और महत्ता दक्षिण भारत में भी कम नहीं है। तमिलनाडु के कांची में स्थित देवी कामाक्षी के अत्यंत प्राचीन शक्ति पीठ की मान्यता और ख्याति ऐसी ही है। कामाक्षी मंदिर में पराशक्ति, विष्णु, शिव, मुरुगा आदि की पूजा की जाती है। आदिशंकराचार्य द्वारा स्थापित कांची कामकोटि पीठ की प्रसिद्धि और मान्यता सर्वविदित है। वास्तव में कांचीपुरम दक्षिण भारत के माथे के आभूषण की तरह है जिसे सात मोक्ष क्षेत्रों में से एक माना जाता है और सबसे पवित्र वाराणसी के बाद दूसरे स्थान पर है। प्राचीन कामाक्षी मंदिर का इतिहास भी गौरवशाली है जिसे पल्लव वंश के राजाओं ने देवी कामाक्षी को समर्पित करके बनवाया था। आदि शंकराचार्य ने कामाक्षी मंदिर में मुख्य देवता के सामने शक्तिशाली श्रीचक्र की स्थापना की थी। कांची कामकोटि पीठ के 68वें शंकराचार्य स्वामी चंद्रशेखरेंद्र सरस्वती महास्वामीगल जिन्हें परमाचार्य और महापेरियवा के नाम से भी जाना जाता है ने कामाक्षी मंदिर की गरिमा और पवित्रता को संरक्षित रखते हुए दक्षिण ही नहीं उत्तर भारत के श्रद्धालुओं के बीच शक्ति पीठ के प्रति भक्तिभाव को नया आयाम दिया। महापेरियवा

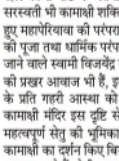

के ज्ञान और ओजस्विता की ख्याति ऐसी थी कि देश के तमाम राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों, राजाओं, राजकुमारों, गुरुओं से लेकर आम लोग उनके पास ज्ञान और शांति के लिए आते अक्सर आते थे। कामाक्षी मंदिर में पूजा-अर्चना में सनातन परंपरा के साथ वैदिक मंत्रों और विधि-विधानों की परंपरा को सुदृढ़ करने में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा। कांची पीठ के वर्तमान 70वें पीठाधिपति शंकराचार्य स्वामी विजयेंद्र सरस्वती भी कामाक्षी शक्ति पीठ की पवित्रता और परंपरा को अक्षुण्ण रखते हुए महापेरियवा की परंपरा को ही आगे बढ़ा रहे हैं। उत्तर और दक्षिण भारत की पूजा तथा धार्मिक परंपराओं के बीच समन्वय और सेतु के सूत्रधार माने जाने वाले स्वामी विजयेंद्र सनातन में आस्था रखने वालों में सदभाव बढ़ाने की प्रखर आवाज भी हैं, इसलिए वे कहते भी हैं कि उत्तर भारत में गो-सेवा के प्रति गहरी आस्था को दक्षिण भारत में अपनाने की आवश्यकता है। कामाक्षी मंदिर इस दृष्टि से उत्तर और दक्षिण की परंपराओं को जोड़ने में महत्वपूर्ण सेतु की भूमिका निभा रहा है। तिरुपति मंदिर आने वाले श्रद्धालु कामाक्षी का दर्शन किए बिना अपनी तीर्थ यात्रा को पूरा नहीं मानते और यहां अवश्य आते हैं। देवी कामाक्षी गर्भगृह में पद्मासन मुद्रा में विराजमान हैं और उन्हें ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव के साथ विराजमान "परब्रह्मस्वरूपिणी" कहा जाता है। आदि शंकराचार्य द्वारा देवी के सामने स्थापित श्रीचक्रम की अर्चना और पूजा की जाती है। गर्भगृह के आसपास अर्धनारीश्वर, सौंदर्यलक्ष्मी, कलत्रर और वाराही के लिए छोटे मंदिर हैं। जिस गर्भगृह में कामाक्षी की मूर्ति स्थापित है, उसे गायत्री मंडपम कहा जाता है, जिसमें 24 स्तंभ हैं जो प्रतीकात्मक रूप से सर्वशक्तिमान गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कहा जाता है कि चांदी की प्लेट से ढका संथानासटंभ राजा दशरथ द्वारा संतान प्राप्ति हेतु प्रार्थना करने के लिए पवित्र किया गया था। कामाक्षी भगवान राम और उनके वंशजों की कुलदेवी भी हैं। देवी कामाक्षी त्रिपुर सुंदरी का एक रूप हैं जो देवी की सार्वभौमिक मां हैं। राज-राजेश्वरी और पराशक्ति के रूप में पूजी जाने वाली देवी अपने उपासकों को ज्ञान और ब्रह्मांड की मां के रूप में हमेशा के लिए सभी वरदान प्रदान करती हैं। कामाक्षी मंदिर में 50 वर्षों से अधिक से पुजारी नीलकलएन रामचंद्र शास्त्री के अनुसार उनका नाम कामाक्षी अपने आप में सरस्वती का प्रतीक है और लक्ष्मी के पहलू उनकी आंखों में हैं। देवी कामाक्षी शक्ति के रूप में सृजन, पालन तथा संहार में संलग्न हैं। कामाक्षी विलासम में श्रीकामाक्षी अम्मन की महिमा और प्रभावों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। किंवदंती है कि देवी लक्ष्मी, हयग्रीव, मनु, चक्रवर्ती, राजा दशरथ और श्रुंडीरा महाराजा उन लोगों में से थे जिन्होंने देवी कामाक्षी की पूजा की थी। पुरातात्विक

(लेखक वरिष्ठ लेखकार और कांची मठ के अनुयायी हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

शताब्दी वर्ष

लोकेन्द्र सिंह

राजसत्ता को संयमित करता संघ

हालांकि, आरएसएस विशुद्ध सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठन है। इसके बाद भी संघ के संबंध में कहा जाता है कि भारतीय राजनीति में उसका गहरा प्रभाव है। आरएसएस को निकटता से नहीं जानने वाले लोग इस विषय पर भ्रम फैलाने का काम करते हैं। राजनीति का जिक्र होने पर संघ के साथ भाजपा को नत्थी कर दिया जाता है। भाजपा, संघ परिवार का हिस्सा है, इस बात से किसी को इनकार नहीं है, लेकिन भाजपा के कंधे पर सवार होकर संघ राजनीति करती है, यह धारणा बिलकुल गलत है। आरएसएस राष्ट्र की संप्रभुता के विषयों पर चिंतन करता रहता है। संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा भारतीय राजनीति को संदेश देने के प्रस्ताव पारित कर चुके हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ(आरएसएस) इस दशहरे पर अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है। महान स्वतंत्रता सेनानी डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने वर्ष 1925 में जो बीज बोया था, आज वह वटवृक्ष बन चुका है। उसकी अनेक शाखाएं समाज में सब दूर फैली हुई हैं। संघ लगातार दसों दिशाओं में बढ़ रहा है। 100 वर्ष की अपनी यात्रा में संघ ने समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में राष्ट्रीय भाव का जागरण किया है, जिसमें राजनीतिक क्षेत्र भी शामिल है। हालांकि, आरएसएस विशुद्ध सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठन है। इसके बाद भी संघ के संबंध में कहा जाता है कि भारतीय राजनीति में उसका गहरा प्रभाव है। जब 'संघ और राजनीति' की बात निकलती है तो बहुत दूर तक नहीं जाती। दरअसल, आरएसएस को निकटता से नहीं जानने वाले लोग इस विषय पर भ्रम फैलाने का काम करते हैं। राजनीति का जिक्र होने पर संघ के साथ भारतीय जनता पार्टी को नत्थी कर दिया जाता है। भाजपा, संघ परिवार का हिस्सा है, इस बात से किसी को इनकार नहीं है, लेकिन भाजपा के कंधे पर सवार होकर संघ राजनीति करती है, यह धारणा बिलकुल गलत है। देश के उत्थान के लिए संघ का अपना एजेंडा है, सिद्धांत है, जब राजनीति उससे भटकती है तब संघ समाज से प्राप्त अपने प्रभाव का उपयोग करता है। सरकार चाहे किसी की भी हो। यानी संघ समाज शक्ति के आधार पर राजसत्ता को संयमित करने का प्रयास करता है। हैरान की बात यह है कि कई विद्वान संघ के विराट स्वरूप की अनदेखी करते हुए मात्र यह साबित करने का प्रयास करते हैं कि भाजपा ही संघ है और संघ ही भाजपा है।

आरएसएस ने 1925 से 1948 तक राजनीतिक क्षेत्र में काम करने के विषय में सोचा भी नहीं था। राजनीति, संघ की प्राथमिकता में आज भी नहीं है। संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार से जब किसी ने पूछा कि संघ क्या करेगा? तब उन्होंने उत्तर दिया- "संघ व्यक्ति निर्माण करेगा"। अर्थात संघ समाज के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने के लिए ऐसे नागरिकों का निर्माण करेगा, जो अनुशासित, संस्कारित और देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत हों। महात्मा गांधी की हत्या के बाद जब संघ को कुचलने के लिए राजनीति का उपयोग किया गया, तब पहली बार यह विचार ध्यान में आया कि संसद में संघ का पक्ष रखने वाला कोई राजनीतिक दल भी होना चाहिए, क्योंकि स्वयंसेवकों को बार-बार यह बात कचोट रही थी कि गांधीजी की हत्या के झूठे आरोप लगाकर विरोधियों ने सत्ता की ताकत से जिस प्रकार संघ को कुचलने का प्रयास किया है, भविष्य में इस तरह फिर से संघ को परेशान किया जा सकता है। राजनीतिक प्रताड़ना के बाद ही इस बहस ने जन्म लिया कि संघ को राजनीति में हस्तक्षेप करना चाहिए। विचार-मंथन शुरू हुआ कि आरएसएस स्वयं को राजनीतिक दल में बदल ले या राजनीति से पूरी तरह दूर रहे या किसी राजनीतिक दल को सहयोग करे या फिर नया राजनीतिक दल बनाए। स्वयं को राजनीतिक दल में परिवर्तित करने पर संघ का विराट लक्ष्य कहीं छूट जाता। इसी बीच, कांग्रेस की नीतियों से मर्माहत होकर 8 अप्रैल, 1950 को केन्द्रीय

मंत्रिमंडल से इस्तीफा देने वाले डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी संघ के सरसंघचालक श्रीगुरुजी के पास सलाह-मशविरा करने के लिए आए थे। वे नया राजनीतिक दल बनाने के लिए प्रयास कर रहे थे। श्रीगुरुजी से संघ के कुछ कार्यकर्ता लेकर डॉ. मुखर्जी ने अक्टूबर, 1951 में जनसंघ की स्थापना की। वर्ष 1952 के आम चुनाव में जनसंघ ने नए राजनीतिक दल के रूप में भाग लिया।

जनसंघ को मजबूत करने में संघ के प्रचारक नानाजी देशमुख, बलराज मधोक, भाई महावीर, सुंदरसिंह भंडारी, जगन्नाथराव जोशी, लालकृष्ण आडवाणी, कुशाभाऊ ठाकरे, रामभाऊ गोडबोले, गोपालराव ठाकुर और अटल बिहारी वाजपेयी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चूंकि संघ के कार्यकर्ता ही जनसंघ का संचालन कर रहे थे, इसलिए संघ ने जनसंघ को स्वतंत्र छोड़कर दूसरे आयामों पर अधिक ध्यान देना जारी रखा। साल में एक बार दीनदयाल उपाध्याय और श्रीगुरुजी बैठते थे। दीनदयालजी, गुरुजी को जनसंघ के संबंध में जानकारी देते थे। श्रीगुरुजी कुछ आवश्यक सुझाव भी पंडितजी को देते थे। जनसंघ से भाजपा तक आपसी संवाद की यह परम्परा आज तक कायम है। अब इसे कुछ लोग 'संघ की क्लास में भाजपा' कहें, तो यह उनकी अज्ञानता ही है। इस संदर्भ में श्रीगुरुजी के कथन को भी देखना चाहिए। उन्होंने 25 जून, 1956 को 'ऑर्गनाइजर' में लिखा था- "संघ कभी भी किसी राजनीतिक दल का स्वयंसेवी संगठन नहीं बनेगा। जनसंघ और संघ के बीच निकट का संबंध है। दोनों कोई बड़ा निर्णय परामर्श के बिना नहीं करते, लेकिन इस बात का ध्यान रखते हैं कि दोनों की स्वायत्तता बनी रहे।" वर्ष 1975 लोकतंत्र के लिए काला अध्याय लेकर आया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश पर आपातकाल लाद दिया। संघ ने इसका पुरजोर तरीके से विरोध किया। संघ के कार्यकर्ताओं पर आपातकाल में बड़ी क्रूरता से अत्याचार किए गए। वर्ष 1977 में जनता पार्टी का गठन किया गया। जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया। लेकिन, कम्युनिस्टों ने ऐसी परिस्थितियां खड़ी कर दी की जनसंघ के नेताओं को जनता पार्टी से बाहर आना पड़ा। सन 1980 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की। आज भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के नाते देश चला रही है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र की संप्रभुता के विषयों पर लगातार चिंतन करता रहता है। संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा और अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल अनेक अवसर पर भारतीय राजनीति को संदेश देने के प्रस्ताव पारित कर चुके हैं। राष्ट्रीय भाषा-नीति-1958, गोवा आदि का संलग्न प्रांतों में विलय-1964, साम्प्रदायिक दंगे और राष्ट्रीय एकता परिषद-1968, राष्ट्र एक अखंड इकाई-1978, विदेशी घुसपैठिये-1984, पूर्वी उत्तरांचल 'इनर लाइन आवश्यक-1987, अलगाववादी षड्यंत्र-1988, आतंकवाद और सरकार की ढुलमुल नीति-1990, सांप्रदायिक आधार पर आरक्षण न हो-2005 जैसे अनेक प्रस्ताव हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय दिशा से भटकती राजनीति को सचेत किया है। संघ के प्रयत्नों के कारण ही देश में आज समान नागरिक संहिता पर बहस जारी है।

हम समझ सकते हैं कि संघ राजनीति का उपयोग इतना भर ही करता है कि उसके मार्ग में बेवजह अड़चन खड़ी न की जाएं। मिथ्या आरोप संघ पर न लगाए जाए। संघ के पास राजनीतिक शक्ति नहीं है, वह सोचकर कोई उसके वैचारिक आग्रह की अनदेखी न कर सके। एक बात स्पष्ट तौर पर समझ लेनी चाहिए कि संघ सीधे चुनाव में भाग नहीं लेता है और भविष्य में भी नहीं लेगा। संघ का राजनीति में प्रभाव अपनी उस ताकत से है, जो अपने 100 वर्ष के कार्यकाल में जनता के भरोसे से हासिल हुई है। देश के खिलाफ कोई ताकत खड़ी होने का प्रयास करती है तब सम्पूर्ण समाज संघ की ओर उम्मीद से देखता है। संकट के समय में भी संघ से ही मदद की अपेक्षा समाज करता है।

(लेखक पत्रकार एवं मीडिया शिक्षक हैं, वे उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

उपकार

संकलित

दर्शन

किसी संकट एवं कष्ट के समय हर क्षण हमारी जिह्वा पर प्रभु का नाम होता है। मन, कर्म एवं वचन से भी हमें उनके अनुनय-विनय की मुद्रा में ही रहते हैं। फिर एक दिन जब हम प्रभु की अनुकंपा से उन बुरे दिनों की चपेट से उबर जाते हैं तो उन्हें भूल जाते हैं। इस प्रकार जन्म से लेकर आज तक हमारे ऊपर ईश्वर के ऐसे उपकारों का सिलसिला अनंत है। प्रभु के उपकार रूपी ऋण से उऋण होना हम मनुष्यों के लिए जीवनपर्यंत असंभव है। धन्य हैं वे करुणानिधान, जिन्होंने विशेष कृपा कर हमें बनाया। हाथ, कान, नाक, पांव, बुद्धि एवं घ्राण क्षमता-सब कुछ कार्योपयोगी। यदि वह एकाध अंग-उपांग से अथवा अनेक जीवनोपयोगी शारीरिक क्षमताओं से वंचित कर विपरीत परिस्थितियों में जन्म दे देते तब भी हमें जीवन जीना ही पड़ता। तो क्या फिर हम अपनी शक्ति एवं सामथ्र्य पर इतना इतरा पाते? बिल्कुल नहीं। तब पल-पल संघर्ष एवं परिश्रम कर सब कुछ ढोलना ही होता। प्रभु ने कुछ तो समझ-बूझकर हम मनुष्यों को जीवन की वे तमाम अनुकूलताएं दी होंगी। भगवान ने इतनी सुविधाएं दीं तो बदले में हमने क्या विलक्षण किया? वास्तव में ईश्वर ने हमें ये सारी अनुकूलताएं एवं सुविधाएं कुछ विशेष कार्य करने के लिए दी हैं, न कि केवल व्यर्थ में कुछ विशेष होने-समझने के लिए। समस्या यह है कि औरों के कल्याण एवं हित के लिए प्रभु-दरबार से अनुकंपा पर मिली वस्तुओं को हमने भूलवश नितांत अपना ही समझ लिया।

मृत्यु अटल है, जो ये बात समझते हैं, वे प्रसन्न रहेंगे

संकलित

प्रेरणा

एक प्रवचन के बाद एक व्यक्ति तुकाराम के पास आया और बोला कि आप इतने आनंद में और शांत कैसे रहते हैं? तुकाराम जी ने उस व्यक्ति की बातें ध्यान से सुनीं और अचानक बोले कि भाई सात दिनों के बाद तुम्हारी मृत्यु होने वाली है। ये बात सुनते ही तुरंत ही उस व्यक्ति की हालत खराब हो गई। क्योंकि वह मानता था कि तुकाराम जी बहुत सिद्ध संत हैं, इनकी बात गलत नहीं हो सकती है। उसने तब किया कि जीवन के सात दिन बचे हैं तो अब आनंद के साथ ही जीना चाहिए। उस व्यक्ति ने अपनी जीवन शैली ही बदल दी। सभी के साथ प्रेम से रहने लगा। उसने जो गलतियां की थीं, उनमें सुधार किया। जिन लोगों को उसकी वजह से नुकसान हुआ था, उनसे क्षमा मांगी। हर पर प्रसन्न रहने लगा। इसी तरह सातवां दिन आ गया। उनसे सोचा कि अंतिम दिन अपने गुरु से भी मिल लेना चाहिए। वह तुरंत ही तुकाराम जी के पास पहुंच गया। उसने कहा कि जैसा आपने कहा था कि मेरी सात दिन बात मृत्यु होगी। आज सातवां दिन है। अंतिम दिन मैं आपसे मिलने आया हूं। तुकाराम जी ने उसकी बात सुनी और कहा कि जुग-जुग जियो। ये बात सुनकर उस व्यक्ति ने कहा कि गुरु जी मैं अगले दिन तो मैं मर जाऊंगा तो आप ऐसा आशीर्वाद क्यों दे रहे हैं? तुकाराम जी ने कहा कि मैंने तो तुम्हारे ही सवाल का जवाब दिया था, तुमने मेरे प्रसन्न रहने का रहस्य पूछा था।

अंतर्मन

आज की पाती

मतदाता का डबल इंजन पर भरोसा कायम

हरियाणा के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने जीत की हैट्रिक मार ली। कांग्रेस और आम आदमी पार्टी को हार का सामना करना पड़ा। कांग्रेस को अपनी हार पर गंभीरता से मंथन जरूर करना चाहिए। लोकतंत्र में हर चुनाव में ऊंट किस करवट मतदाता बिठा दे, इसका अंदाजा लगाया नहीं जा सकता। आम चुनाव में मतदाता राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों को ध्यान में रखता है, जबकि स्थानीय विधायक और विधानसभा चुनाव में मूलभूत सुविधाओं और अन्य स्थानीय मुद्दों को।

-सोहन यादव, कांग्रेस

ट्रेंड

चिकित्सा को मजबूती मिलेगी

स्वस्थ और मजबूत भारत की दिशा में एक बड़ा कदम पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, हमारी सरकार ने देशभर में 10 हॉस्पिटल्स मेडिकल कॉलेजों को मंजूरी दी है। इससे हमारी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में वृद्धि होगी और चिकित्सा कर्मचारी को मजबूती मिलेगी।

-मनसुख मांडविया, केंद्रीय मंत्री

लैंगिक समानता जरूरी

सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रगति के लिए लैंगिक समानता जरूरी है। इस वर्ष डे ऑफ द गर्ल की थीम 'भविष्य के लिए लड़कियों की ट्रस्ट' है, जो लड़कियों की अवसर की समान और भविष्य के लिए ट्रस्ट से प्रेरित, बराबरी को बढ़ावा करती है।

-मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस अध्यक्ष

निहोन को बधाई

नौ नोबेल शांति पुरस्कार के विजेता निहोन हिडानकाओ को बधाई देता हूं। हम परमाणु हथियारों के खतरा होने वाले दर्द के गवाह रहे हैं। परमाणु हथियारों से मुक्त दुनिया बनाने के लिए इस संगठन के अथक प्रयास हमें बेहतर कल की आशा देते हैं।

-कैलाश सत्यार्थी, नोबेल विजेता

फौलादी आदमी, दिल दयालु

एक फौलादी आदमी, शिर भी दिल इतना दयालु, प्रत्येक शिरा में, उद्देश्य स्फोटित होता है। उन्होंने सपनों से निर्माण किया, जिनका किया उसने अर्पित किया, हर कोने में अपनी छाप छोड़ गई है।

-हर्ष मोयनका, उद्योगपति

करंट अफेयर

ट्रंप के पास अमेरिकियों की जरूरत पूरी करने योजना नहीं

अमेरिका में बराबर में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार कमला हैरिस ने अपने प्रतिद्वंदी और रिपब्लिकन पार्टी के प्रत्याशी डोनाल्ड ट्रंप पर निशाना साधते हुए कहा कि वह (ट्रंप) केवल अपने बारे में ही सोचते हैं और अमेरिकियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए उनके पास कोई योजना नहीं है। परिजीत में अपने हजारों समर्थकों को संबोधित करते हुए हैरिस ने बृहस्पतिवार को कहा कि ट्रंप ने पांच नवंबर को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव से पहले किसी भी तरह की बहस करने से आधिकारिक तौर पर इनकार कर दिया है। उन्होंने इसे मायूसजनक बताया है। हैरिस ने कहा, 'मुझे भी लगता है कि यह उनका बहुत ही कमजोर कदम है। लेकिन अगर वह बहस नहीं भी करते हैं, तो भी इस चुनाव में अंतर पहले से ही स्पष्ट नजर आ रहा है।' हैरिस ने कहा कि देश के लोगों के लिए कई मुद्दे महत्वपूर्ण हैं, लेकिन ट्रंप के पास इस बारे में कहने के लिए कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा, हम अपने देश को सुरक्षित रखने के लिए हमेशा संघर्ष करते रहेंगे और अपने सैनिकों का सम्मान करेंगे। इनके अलावा ऐसे कई और मुद्दे हैं, जो आपके और आपके परिवार के लिए महत्वपूर्ण हैं... लेकिन हम डोनाल्ड ट्रंप को ऐसा कहते हुए नहीं सुनते हैं।

ऑफ बीट

क्या कौए सचमुच चतुर होते हैं?

यह कोई रहस्य नहीं है कि कौए उल्लेखनीय संज्ञानात्मक क्षमताओं से संपन्न होते हैं। इंटरनेट कौए की आवाज को नकल करने या दिमाग लगाने वाले जटिल मेल को हल करने के वीडियो से भरा पड़ा है। लेकिन क्या ये पक्षी उतने ही बुद्धिमान हैं जितना उन्हें समझा जाता है? कठोर आवरणयुक्त फल तोड़ने वाली पहेली। कौए में बेहतर बुद्धि की अवधारणा का समर्थन करने के लिए सबसे अधिक उद्धृत अध्ययनों में से एक कौए द्वारा फल के कठोर आवरण युक्त फल (नट) को तोड़ने के लिए कारों का इस्तेमाल करना है। 1978 में, कैलिफोर्निया के शोधकर्ताओं ने देखा कि अमेरिकी कौए सड़क पर अखरोट फेंकते थे, फिर उनके किसी कार से कुचले जाने का इंतजार करते थे और फिर टूटे हुए फल खाते थे। हालांकि, शोधकर्ताओं ने पाया कि जब कोई कार आ रही थी तो कौए अपने आवरणयुक्त फल सड़क पर नहीं फेंकते थे। इसके अलावा अध्ययन किए गए 200 मामलों में से, शोधकर्ताओं ने कभी भी किसी कार को किसी फल के आवरण को कुचलते हुए नहीं देखा। इससे पता चला कि यह सिद्धांत कि कौए जानबूझकर कार को अखरोट तोड़ने के रूप में उपयोग कर रहे थे, वास्तव में गलत था।

अपने विचार
हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

दैनिक जागरण
सत्य का मार्ग ही विजय का मार्ग है

आनलाइन सट्टेबाजी

यह अच्छी खबर है कि आनलाइन सट्टेबाजी में लिप्त रहे महादेव सट्टा एप के संचालक सौरभ चंद्राकर को दुबई में गिरफ्तार कर लिया गया और शीघ्र ही उसे भारत लाया जाएगा, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या इससे आनलाइन सट्टेबाजी पर लगाम लग सकेगी? यह प्रश्न इसलिए, क्योंकि आनलाइन सट्टेबाजी का धंधा बेलगाम हो रहा है। न जाने कितने ऐसे एप हैं, जो लोगों को सट्टा खेलकर लाखों-करोड़ों रुपये जीतने का प्रलोभन देते हैं। अमर तीर पर लोग पैसा पाने के बजाय गंवाते ही हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि आनलाइन सट्टेबाजी का पूरा तंत्र इस तरह काम करता है कि सट्टा खेलने वाला ही घाटे में रहे। यही कैसिनो में होता था, लेकिन वे सीमित थे और उनमें चुनिंदा लोग ही जाते थे। स्मार्टफोन के जरिये आनलाइन सट्टेबाजी की सुविधा तो हर किसी को उपलब्ध है। हालांकि आनलाइन सट्टा कंपनियां यह चेतावनी देती हैं कि इसमें जोखिम है और लत लग सकती है, लेकिन प्रायः लोग इसकी परवाह नहीं करते। अंततः इसके दुष्परिणाम वे ही भुगतते हैं। इसका कारण यह है कि आनलाइन सट्टा कंपनियों को नियंत्रित करने के लिए जैसे नियम-कानून चाहिए, उनका अभाव ही अधिक है। समस्या केवल यह नहीं है कि आनलाइन सट्टा कंपनियां लोगों को लती बनाकर उनका पैसा हजम कर रही हैं, बल्कि यह भी है कि वे मनी लांड्रिंग का काम कर रही हैं। संदेह है कि महादेव सट्टा एप के संचालक ने छह हजार करोड़ रुपये का घोटाला किया। यह कहना कठिन है कि आनलाइन सट्टेबाजी के जरिये मनी लांड्रिंग का यह एकलौता मामला है।

यदि सरकार आनलाइन सट्टेबाजी के कारण हो रहे आर्थिक-मानसिक नुकसान से वास्तव में चिंतित है तो फिर उसे सक्रियता दिखानी होगी। वह इससे अनभिज्ञ नहीं हो सकती कि आनलाइन सट्टेबाजी के कई रूप हैं। आनलाइन गेमिंग भी सट्टेबाजी का जरिया बन गई है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि आनलाइन सट्टेबाजी और गेमिंग को साफ तौर पर परिभाषित नहीं किया गया है। सट्टेबाजी का जरिया बने कुछ आनलाइन गेम इसलिए बेरोक-टोक खिलाए जा रहे हैं, क्योंकि उन्हें कौशल का पर्याय मान लिया गया है। निःसंदेह कुछ आनलाइन गेम कौशल का पर्याय हो सकते हैं और हैं भी, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वे जुआ खिलाने वालों के हथियार बन जाएं। सरकार को चेतना होगा और आनलाइन गेमिंग का नियमन इस तरह करना होगा कि वे लोगों की गाढ़ी कमाई लूटने का जरिया न बनें। यह ठीक नहीं कि संदिग्ध किस्म की आनलाइन गेमिंग कंपनियों का प्रचार जाने-माने खिलाड़ी और कलाकार कर रहे हैं। इसका कोई मतलब नहीं कि हेय दृष्टि से देखा जाने वाला जुआ यदि तकनीक के सहारे मोबाइल पर खिलाया जाने लगे तो उसे वैध और स्वीकार्य मान लिया जाए। बुराई बुराई ही होती है, वह चाहे जिस रूप में हो। इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि महादेव एप संचालक को गिरफ्तार कर लिया गया है।

वंचितों का सम्मान

संतों की कोई जाति नहीं होती और पूर्व में भी महामंडलेश्वर जैसे पदों पर कई दलित संत आसीन हो चुके हैं, लेकिन उनकी संख्या कम ही रही है। अब जूना अखाड़ा ने यह निर्णय लेकर कि उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुंभ में वंचित समाज के 71 संत महामंडलेश्वर बनाए जएंगे, सामाजिक समरसता के अपने प्रयासों को व्यापक दिशा दी है। जूना अखाड़े का यह कदम इस प्रचलित धारणा को भी खत्म करेगा कि संत समाज में महत्वपूर्ण पदों पर उच्च वर्ग के लोग ही आसीन होते हैं। इसी अखाड़े ने अनुसूचित जाति के संत स्वामी महेंद्रानंद गिरि को सबसे पहले जगद्गुरु की संज्ञा दी थी और अब उन्हीं को यह जिम्मेदारी भी दी थी कि वे वंचित समाज में धर्म का प्रचार-प्रसार बढ़ाएं और उन्हें धार्मिक रूप से शिक्षित करें। इन्हीं में योग्य लोगों का चयन कर सनातन धर्म में प्रतिष्ठित महत्वपूर्ण पदों पर आसीन किया जाएगा और उन्हें मठ-मंदिरों की जिम्मेदारी दी जाएगी। सनातन धर्म की मूल अवधारणा भी यही है कि सभी वर्गों को सम्मान और अधिकार मिले। जूना अखाड़े ने अब तक अनुसूचित जाति के पांच हजार से अधिक लोगों को संन्यास दिलाया है जिससे अन्य अखाड़े भी प्रेरणा लेंगे। इस अभियान के उद्देश्य दूरगामी हैं, क्योंकि सनातन धर्म के समक्ष मतांतरण एक बड़ी समस्या के रूप में उभर रहा है। इसका एक प्रमुख कारण धार्मिक व सामाजिक उपेक्षा भी है। ईसाई मिशनरियां आदिवासी व अनुसूचित जाति बहुल क्षेत्रों में अधिक सक्रिय हैं और लोगों को प्रलोभन देकर मतांतरण करा रही हैं। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद भी मतांतरण को एक बड़ा संकट मानता है और इस पर प्रभावी रोक तभी लग सकती है, जब संत समाज सक्रिय हो। वंचित समाज के लोगों को संन्यास लेने और धार्मिक पदों पर आसीन होने से सनातन धर्म की एकजुटता और मजबूत होगी।

अब भी अराजकता से घिरा बांग्लादेश

तसलीमा नसरीन

अंतरिम सरकार के गठन के दो माह बाद भी बांग्लादेश में अराजकता फैली है, लेकिन मोहम्मद यूनुस को इसकी परवाह नहीं है

बांग्लादेश में अंतरिम सरकार का गठन हुए दो माह से अधिक का समय हो गया है, लेकिन वहां से विचलित और चिंतित करने वाली खबरें आने का सिलसिला थम नहीं रहा है। यदि कभी मोहम्मद यूनुस से भेंट होती है तो पूछूंगी कि ऐसा क्यों है? 2005 में जब फ्रांस में उनसे मुलाकात हुई थी तो उन्होंने बार-बार मुझसे कहा था, 'बांग्लादेश लौट आइए।' मैंने कहा था, 'कैसे लौटूं? मुझे तो वहां की सरकार आने ही नहीं देगी।' इस पर उन्होंने कहा था, 'आने न देने का क्या मतलब है? वह तो आपका ही देश है। अपने देश में जाना और रहना आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। इस अधिकार को बाधित करने का अधिकार किसी सरकार के पास नहीं है।' मैंने दुखी मन से कहा था, 'मैं तो कितनी बार दूतावास जा चुकी हूं। न तो मुझे वीजा दिया जाता है, न ही मेरा पासपोर्ट रीन्यू होता है।' उन्होंने मेरी मदद करने का वादा किया था। अब यह जानने की इच्छा हो रही है कि उन्होंने मेरे लिए क्या कुछ किया होगा? शायद तब कई कारणों से मेरे हित में कुछ करना उनके लिए संभव नहीं रहा होगा, लेकिन अब तो वह सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर हैं। अब तो सब कुछ उनके ही हाथ में है। क्या वह डर रहे हैं? उनके आसपास जो लोग हैं, वे सब कट्टरपंथी हैं। यह बात मुझसे बेहतर वह जानते हैं। क्या उन्हें डर लग रहा है कि मेरी मदद करने पर नए जिहादी दोस्त कहीं उनसे नाराज न हो जाएं। आखिर इस उम्र में वह किनके साथ खेले हैं? क्या उन्हें अफसोस नहीं हो रहा? मेरे तो तीस साल निर्वासन में बीत गए। बाकी जितनी उम्र बची है, वह भी इसी तरह गुजर जाएगी। कम से कम मैं इस गर्व के साथ मर सकूंगी कि अपनी सुख-सुविधा के लिए कभी मैंने अपने शत्रु के साथ समझौता नहीं किया। क्या वह भी इस तरह गर्व कर सकेंगे?

सबको पता है कि मोहम्मद यूनुस मेरी बातों का जवाब नहीं देंगे। बांग्लादेश में हो क्या रहा है? जो भी आदमी पसंद नहीं आ रहा, उसे हत्या के झूठे मामले में फंसाकर गिरफ्तार किया जा रहा है। भिन्न राजनीतिक विचार को बर्दाश्त नहीं किया जा रहा। विरोधियों को या तो मार डाला जा रहा है या जेल में डाल दिया जा रहा है। विभ्रमता-विरोधी छात्रों ने अपने मेधावी होने का नकाब उतार फेंका है। वे न तो मेधावी छात्र हैं और न ही विभ्रमता-विरोधी। उलटे वे विभ्रमता के ही पक्षधर हैं। इसीलिए हिंदुओं समेत अन्य अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न जारी है। हसीना सरकार की जगह जमात-इस्लामपंथी-एनजीओ सरकार ने ले ली है। इस सरकार के लोग अपने असल चेहरे के साथ सामने हैं। ये जमात-ए-इस्लामी के छात्र संगठन शिबिर और हिजबुत तहरीर संगठन के लोग हैं। जर्मनी, रूस, आस्ट्रिया, अमेरिका, मिस्र, जार्डन, सऊदी अरब, कजाखस्तान, उज्बेकिस्तान और ताजिकिस्तान समेत अनेक देशों ने हिजबुत तहरीर पर प्रतिबंध लगा रखा है। इस संगठन पर गत दिवस भारत सरकार ने भी प्रतिबंध लगाया। यह ध्यान रहे कि यूनुस ने सत्ता में आने के बाद हिजबुत तहरीर पर लगा प्रतिबंध हटा लिया था। यूनुस हिजबुत तहरीर के नेताओं को साथ लेकर अमेरिका गए थे। वहां ऐसे ही एक नेता महफूज आलम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कह रहे थे कि बांग्लादेश के जनांदोलन की पटकथा इन्होंने ही लिखी। साफ है कि यह कथित जनांदोलन अचानक हुई कोई क्रांति नहीं है।

बिडंबना यह है कि इस्लामी आतंकियों का सफाया करने के लिए जिस अमेरिका ने लाखों डालर खर्च किए, वही इस कथित क्रांति पर ताली बजा रहा है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन कुछ ज्यादा ही खुश हैं। महफूज आलम ने छात्र का वेश धरकर पूरे बांग्लादेश को मूर्ख बनाया और यूनुस उसे महान क्रांतिकारी बताकर लोगों को मूर्ख बना रहे हैं। आखिर वह यह कैसे नहीं देख रहे कि बांग्लादेश के दुर्गा पूजा पंडालों में इस्लामिक कट्टरपंथी जिहादी तराने गा रहे हैं। बांग्लादेश की जेलों में बंद तमाम अतिवादियों-आतंकियों को यूनुस सरकार ने रिहा कर दिया। कुछ दिन पहले ही आतंकी संगठन जमायतुल अंसार फिल हिंदाल शरकीया के 32 सदस्यों को रिहा किया गया। अगर यूनुस सचमुच बांग्लादेश से प्यार करते, तो वहां जारी माब लिंचिंग के सिलसिले को खत्म करने के बारे में सोचते।

अवधेश राजपूत

यह याद रहे कि बांग्लादेश से घृणा करने वाले और 1971 में बांग्लादेश को बाटमलेस बास्केट कहने वाले हेनरी किसिंजर को भी नोबेल पुरस्कार मिला था। यूनुस भी नोबेल पुरस्कार विजेता हैं, मगर इसका मतलब यह कतई नहीं है कि वह बांग्लादेश से बहुत प्यार करते हैं। हिजबुत तहरीर का सरगना महफूज आलम क्या मोहम्मद यूनुस का विशेष सहयोगी है या यूनुस ही महफूज आलम के विशेष सहयोगी हैं? जो भी हो, यह साफ है कि बांग्लादेश में अब भी अराजकता फैली है। यूनुस को इसकी परवाह ही नहीं है।

शेख हसीना अपने पिता की हत्या का बदला लेने के लिए गद्दी पर बैठी थीं। पिता का नाम, उनकी तस्वीरों और प्रतिमाओं को उन्होंने देश भर में फैला दिया और लोगों के मन-मस्तिष्क को इस्लाम से भर दिया था। उन्होंने सोचा था कि इससे देशवासियों के सौचने-समझने की शक्ति कुंद हो जाएगी और वह अनंत काल तक सत्ता पर बैठी आराम फरमाएंगी। उन्होंने सोचा भी नहीं था कि मजहबी कट्टरता के नशे में बेसुध तमाम लोग एक दिन जब जिहादी बन जाएंगे, तब गोली चलाकर उनमें से कुछ को तो मारा जा सकता है, लेकिन सबको नहीं।

यदि यूनुस ने पंथनिरपेक्षता बहाल करने की कोशिश की, तो जिहादी सांप उन्हें भी डसेंगे। हसीना से बदला लिए जाने के बाद चुनाव की व्यवस्था करके जितनी जल्दी वह अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाएं, उनके लिए उतना ही अच्छा होगा। उन्हें याद रखना चाहिए कि 30 लाख शहीदों के खून के बदले बांग्लादेश को आजादी मिली थी। उस आजादी को उलट देने की वह चाहे कितनी भी कोशिश कर लें, वह सफल नहीं होगी। उनके नाम पर देश चला रहे जिहादियों को तो लाभ मिल ही रहा है, जमात, शिबिर और रजाकार समूहों समेत दूसरे कट्टरपंथी संगठनों को भी लाभ मिल रहा है। ये लोग जिस-तिस को देश छोड़कर चले जाने के लिए बाध्य कर रहे हैं। लगता नहीं कि यूनुस अतिबाद पर अंकुश लगाना जानते हैं। अगर जानते तो बांग्लादेश इतना अशांत नहीं होता।

(स्तंभकार बांग्लादेश से निर्वासित लेखिका हैं)

response@jagran.com

श्रीराम के आदर्शों को अपनाने का उत्सव

गिरीश्वर मिश्र

विजयदशमी की सार्थकता उन मूल्यों को अपनाने में है, जिनकी अभिव्यक्ति श्रीराम के चरित्र में प्रकट होती है

किसी भी समाज के विकास में नेतृत्व की विशेष भूमिका होती है। नेतृत्व के प्रतिमानों की भारतीय परंपरा में श्रीराम एक ऐसे प्रजावत्सल और पराक्रमी शासक के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जो नैतिक मानदंडों के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं और उनकी रक्षा में कोई कसर नहीं छोड़ते। उनके रामराज्य की छवि इसलिए प्रसिद्ध और लोकप्रिय है कि उसमें आम जन को किसी भी तरह के ताप या कष्ट नहीं अनुभव करने पड़ते थे-न भौतिक, न दैहिक और न दैविक। यदि आज की शब्दावली में कहें तो 'जीवन की गुणवत्ता' उच्च स्तर की थी और 'मानव विकास सूचकांक' भी आदर्श स्तर का था। लोग सुखी और समृद्ध थे। श्रीराम लोक जीवन के प्रति अत्यंत संवेदनशील थे और लोक हित ही उनका सर्वोपरि सरोकार था। इसी कारण जब अयोध्या में उनके नाम का मंदिर निर्मित हुआ तो समस्त विश्व का हिंदू समाज उल्लास से भर उठा। राम का नेतृत्व पाकर सभी वर्ग धन्य थे। ऐसा नेतृत्व प्रदान करने के लिए बड़ी तैयारी हुई थी। विभिन्न कौशलों में सक्षम श्रीराम को बाल्यावस्था से ही प्रशिक्षण मिल रहा था। वह एक तपस्वी की भांति साधना कर रहे थे। उन्हें एक लंबे कंटकाकीर्ण जीवन-पथ पर चलना पड़ा और प्रतिरोध की क्षमता भी विकसित करनी पड़ी।

श्रीराम ने जीवन में सभी विपर्ययों को बड़ी सहजता से स्वीकार किया और किसी के प्रति कुंठा या क्षोभ का भाव नहीं पाला। ये अनुभव उनको और परिपक्व करने वाले सिद्ध हुए। श्रीराम की निर्मिति में उनके विषम बनवासी जीवन के विभिन्न अनुभवों की विशेष भूमिका रही। इस दौरान वह विभिन्न वर्गों से मिले। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में तमाम कठिनाइयों को झेला। अनेक मित्र बनाए और साथ ही राजकाज की बारीकियों का अभ्यास भी किया। उन्हें मनुष्य जीवन की सीमाओं और संभावनाओं को पहचानने का और उनकी जटिलताओं को सीखने का अवसर मिला। इससे उनमें त्याग, संयम और संतोष के साथ आत्मनियंत्रण विकसित हुआ। मित्र, शत्रु, गुरु, भ्राता और पत्नी सबकी भूमिकाओं को देखते-परखते श्रीराम की भांति-भांति के निर्णय भी लेने पड़े। इससे उनकी शक्ति और क्षमता संबर्धित होती रही। भिन्न-भिन्न समूहों से जुड़ना उनकी जीवन यात्रा का मुख्य उपक्रम था।

जन-उल्लास की अभिव्यक्ति है विजयदशमी। प्रेट्र

असत्य के प्रतीक रावण पर सत्य की प्रतिमूर्ति श्रीराम की विजय उनके नेतृत्व और शक्ति संधान की परिणति थी। श्रीराम की शक्ति-पूजा लोक प्रसिद्ध हुई। यह अवसर जन-जन के उल्लास का एक अप्रतिम और अविस्मरणीय आख्यान बन गया। विजयदशमी का पर्व उसी जन-उल्लास की अभिव्यक्ति है। वस्तुतः रावण का विनाश श्रीराम की लोक यात्रा का एक मुख्य प्रस्थान बिंदु है, जहां से उस यात्रा का नया अध्याय शुरू होता है। रावण पर विजय पाने के बाद श्रीराम को लोक-कल्याण के लक्ष्य भेदने थे और उसके लिए वे मनोयोग से लगे रहे। यह कार्य सुगम नहीं था, परंतु राजा श्रीराम ने जो अनुकरणीय शासन संचालन किया, वह जन-जन के मन में बस गया। उनका शासन स्वस्ति और आश्वस्ति का प्रतीक था। रामराज्य सुशासन का प्रतिमान बन गया। शासक श्रीराम के जीवन का एक बड़ा महत्वपूर्ण अध्याय उनके द्वारा किए जाने वाले लोक-संग्रह के कार्य से जुड़ा है। शासन से जुड़कर लोक-जीवन को उत्तम बनाने और सामाजिक उन्नति के लिए उनका सक्रिय और कर्मठ जीवन लोक स्मृति का अंग बनकर मानवता के लिए प्रेरक बन गया। महात्मा गांधी के मन में रामराज्य की एक प्रीतिकर छवि बनी और उन्होंने स्वाधीन भारत में उसकी स्थापना का स्वप्न देखा।

नेतृत्व गुण और नेतृत्व की प्रक्रियाएं प्रत्येक संगठन को संचालित करने के लिए अपरिहार्य हैं। आधुनिक प्रबंध विज्ञान के दृष्टिकोण से बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में पश्चिमी जगत में अनुसंधान और विचार-विमर्श की पहल शुरू हुई। व्यक्ति, परिस्थिति और उनके बीच की अंतःक्रिया को केंद्र में रखकर नेतृत्व के माडल, सिद्धांत और प्रशिक्षण के उपाय ढूंढ़े जाते रहे। जैसे जापान की संस्कृतिक संवेदना भिन्न किस्म की थी और वहां उसका उपयोग कर अलग नेतृत्व शैली अपनाई गई। उसके बड़े सार्थक परिणाम पाए गए। वहां की उत्पादकता और आर्थिक उन्नति आश्चर्यजनक ढंग से दर्ज हुई है। क्षरणशील परिस्थितिकी एवं असुरक्षा और महायुद्ध की विभीषिका सहने के बाद भी वहां की असाधारण उन्नति चकित करने वाली है। इसने विश्व के समक्ष प्रगति का एक नया स्वरूप सामने रखा। वहीं, भारतीय सांस्कृतिक परंपराएं पारिस्थितिकी भिन्न प्रकार की है।

आज लोक-कल्याण के साथ प्रतिबद्धता की जगह मात्र स्वार्थ-सिद्ध वाली राजनीति आम बात हो गई है। यह किसी भी तरह श्रेयस्कर नहीं है। आज राजनीति भरोसा तोड़ रही है। अधिकांश नेता अविश्वसनीय होते जा रहे हैं, क्योंकि वे असत्य का सहारा ले रहे हैं। उन्होंने यह विस्मृत कर दिया है कि प्रजा के सुख में ही राजा का सुख निहित होता है। आज के राजनीतिक वर्ग को देश और समाज का ख्याल नहीं। वह अपने स्वार्थ के लिए तर्क गढ़ता रहता है। विजयदशमी का पर्व केवल चकाचौंध पैदा कर पटाखों के शोर में रावण दहन करने का अवसर नहीं है। वह अपनी कमजोरियों पर विजय के लिए भी आमंत्रित करता है। हमें अपने भीतर के रावण पर विजय पानी होगी। ऐसा न करना हमारे लिए आत्मघाती होगा। भारतवासियों को वेद में अमृतपुत्र कहा गया है। इस अमृतत्व की रक्षा का संकल्प लेना ही श्रीराम के स्मरण की सार्थक बनाएगा। इसलिए विजयदशमी का उत्सव मनाने की सार्थकता उन मूल्यों का स्मरण करने व जीवन में प्रतिष्ठित करने में है, जिनकी अभिव्यक्ति श्रीराम के कार्यों में प्रकट होती है।

(लेखक पूर्व कुलपति हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

चारित्रिक दृढ़ता

रावण के अत्याचार एवं अनाचार से समस्त सृष्टि पीड़ित थी, किंतु कोई उसे चुनौती देकर उससे युद्ध करने का साहस नहीं बटोर पा रहा था। देवमंडल तक उससे भयाक्रांत रहता था। ग्रहों को भी उसने बंदी बना रखा था। रावण की इस शक्ति से भगवान श्रीराम न परिचित रहे हों, यह संभव नहीं। इसके बावजूद श्रीराम ने रावण से युद्ध करने का निर्णय किया तो इसी कारण कि किसी भी तरह के युद्ध को जीतने की उनके पास विश्वस्तता थी।

श्रीराम के चरित्र में प्रथम दृढ़ता उस समय प्रत्यक्ष होती है जब वह रावण वध के लिए शक्तिस्वरूपा मां दुर्गा की आराधना के लिए उन्मुख हुए। इस प्रसंग के अनुसार मां दुर्गा को अर्पित करने के लिए रखे 108 कमल पुष्पों में एक कम पड़ गया तब श्रीराम ने तय किया कि बचपन में मां कौशल्या उनकी आंखों की तुलना कमलनयन से करती थीं। अतः श्रीराम ने एक नेत्र खुद अपने तीर से निकाल कर मां दुर्गा को चढ़ाना चाहा, लेकिन ऐसा करने से पहले मां दुर्गा ने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा, 'श्रीराम, आप परीक्षा में सफल हुए'। इस प्रकार मां दुर्गा ने उन्हें 'विजयी भव' का आशीर्वाद दिया और वह रणभूमि में अपना लक्ष्य पूरा कर सके।

इस प्रसंग में बहुत गहरे अर्थ छिपे हुए हैं। इस पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि जब कोई कार्य किया जाए तो उसमें पूरा समर्पण एवं एकाग्रता होनी चाहिए। श्रीराम द्वारा एक आंख मां दुर्गा को अर्पित करने का उद्देश्य यही दर्शाता है कि सत्य का पथ एक ही होता है। इसमें अनेकता का रास्ता नहीं ढूंढ़ना चाहिए। जबकि रावण के दस शीश का अर्थ ही है कि वह जिस-जिस दिशा में जाता था, उस-उस दिशा में उसका सिद्धांत बदल जाता था। चूंकि दिशाएं दस हैं, इसलिए वह हर दिशाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार का आचरण करता था। यही कारण है कि उसमें एकाग्रता नहीं थी और वह श्रीराम के हाथों मारा गया।

सलिल पांडेय

यूरोपा पर जीवन की तलाश

प्रदीप

बृहस्पति के एक उपग्रह पर जीवन संभव होने की उम्मीद जगी है, जिसकी वास्तविकता जल्दी ही सामने आ सकती है

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा बृहस्पति ग्रह के चंद्रमा (उपग्रह) 'यूरोपा' पर जीवन की तलाश के लिए अपने महत्वाकांक्षी 'यूरोपा क्लिपर मिशन' को लांच करने की तैयारी में है। यूरोपा क्लिपर मिशन का स्पेसक्राफ्ट नासा का अब तक का सबसे हाईटेक और उन्नत वैज्ञानिक उपकरणों से लैस अंतरिक्षयान है। बृहस्पति के प्रमुख चंद्रमाओं में से एक यूरोपा विज्ञानियों के लिए लंबे समय से रुचि का विषय रहा है। दावा है कि यूरोपा की बर्फीली सतह के नीचे एक विशाल तरल पानी का महासागर है, जो जीवन के लिए अनुकूल हो सकता है, क्योंकि पृथ्वी पर जीवन के लिए आवश्यक तत्व जैसे- पानी, ऊर्जा स्रोत और अन्य रासायनिक पोषक तत्व यहां विद्यमान हो सकते हैं।

वस्तुतः हमारे सौर मंडल में मंगल ही एक ऐसा ग्रह है, जिसे लेकर प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के विज्ञानियों ने तरह-तरह के जीवन विद्यमान होने की कल्पना की है। हालांकि इधर हाल के वर्षों में हुए खोजों के बाद खगोलीय जीव विज्ञानियों का यह मानना है कि हमारे सौर मंडल के तमाम ग्रहों के चंद्रमाओं में जीवन होने की संभावना मंगल से अधिक है। फिलहाल इस समय सौरमंडल में जीवन की मौजूदगी के मामले में बृहस्पति चंद्रमा यूरोपा अन्य सभी चंद्रमाओं से काफी आगे है। कुछ विज्ञानियों का मानना है कि जितना खर्च मंगल की जांच-पड़ताल पर किया जा रहा है, उसकी जगह यह पैसा यूरोपा पर जीवन की संभावना की तलाशने के लिए अंतरिक्ष अभियानों पर खर्च किया जाना चाहिए।

वर्ष 1995 में नासा का गैलीलियो अंतरिक्षयान यूरोपा के नजदीक से गुजरा। उसके द्वारा लिए गए चित्रों का जब विज्ञानियों ने विश्लेषण किया तो यह पता चला कि उस पर पृथ्वी के सभी समुद्रों में मौजूद पानी से भी अधिक पानी है। यूरोपा क्लिपर मिशन का उद्देश्य विशालकाय समुद्रों से भरपूर बृहस्पति के इस बर्फीले चंद्रमा की खोजबीन करना है और यह पता लगाना है कि क्या यह पृथ्वी से इतर जीवन के लिए उपयुक्त है। इस मिशन को इसी महीने के आखिर में लांच किया जा सकता है। यूरोपा क्लिपर को बृहस्पति तक पहुंचने में लगभग छह साल का समय लगेगा और वह वर्ष 2030 के आसपास यूरोपा की कक्षा में प्रवेश करेगा।

प्रसिद्ध विज्ञान कथा लेखक सर आर्थर क्लार्क ने काफी समय पहले ही यह भविष्यवाणी कर दी थी कि यूरोपा पर जीवन है। यह भविष्यवाणी आज सच साबित हो चुकी है। वैसे यूरोपा पर किसी तरह का जीवन अभी रहस्य के अंधेरे में है। इसी रहस्य का पर्दाफाश करने के लिए ही नासा यूरोपा क्लिपर मिशन को अंजाम देने की योजना बना रहा है। उम्मीद है इस मिशन से बृहस्पति के इस अद्भुत चंद्रमा की असलियत जल्द ही सामने आएगी।

(लेखक विज्ञान संचारक हैं)

भारत के 'अनमोल रतन'

'देश के सच्चे रत्न' शीर्षक से लिखी संपादकीय टिप्पणी में देश के दिग्गज उद्योगपति एवं टाटा समूह के मानद चेयरपर्सन रतन टाटा के व्यक्तित्व और कृतित्व के विषय में जो कुछ भी कहा गया है, वह एक बानगी भर है। वस्तुतः पद्म विभूषण रतन टाटा के बहुआयामी विराट व्यक्तित्व को कुछ शब्दों में समेट पाना मुश्किल है। एक उद्यमशील उद्योगपति के साथ देश के नव-निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाने वाले वह सच्चे देशभक्त भी थे। मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं से उनका गहरा सरोकार था। कोरोना के संकटकाल में भारत सरकार को 1,500 करोड़ रुपये का दान देने वाले वह देश के दूसरे 'भामाशाह' बन गए। वर्षों में भीगते हुए बाइक सवार दैवती को देखकर उपजी संवेदना ने रतन टाटा को लखटकिया नैनो कार बनाने के लिए प्रेरित किया। टीसीएस जैसी कंपनियों को अंतरराष्ट्रीय ख्याति पर पहुंचाकर उन्होंने न केवल देश का मान बढ़ाया, अपितु भारत के उद्योग जगत को नई ऊंचाई प्रदान की। इस महान उद्योगपति के निधन पर यदि हर आंख नम हुई तो केवल इसलिए, क्योंकि वह भारत के चहुंमुखी विकास के लिए समर्पित ऐसे संवेदनशील उद्योगपति थे, जिनके सोच में भारत की वैश्विक पहचान कुलांचे भरती रहती थी। इस महानायक ने आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने में जो योगदान किया है, उसे भुलाया नहीं जा सकता। ऐसे में देश के इस अनमोल रतन को मरणोपरांत 'भारत रत्न' से सम्मानित कर, कृतज्ञ राष्ट्र द्वारा अपनी सच्ची श्रद्धांजलि देनी चाहिए।

डा. बीपी पाण्डेय, अलीगढ़

मेलबाक्स

रचनात्मक सहयोग जरूरी

जम्मू-कश्मीर के चुनौतीपूर्ण चुनाव को सफलतापूर्वक अंजाम देने के लिए केंद्र सरकार, चुनाव आयोग, राजनीतिक दलों एवं जम्मू-कश्मीर की जनता की जितनी तारीफ की जाए, वह कम है। देखा जाए तो जम्मू-कश्मीर की जनता ने लोकतंत्र को मजबूत करने की जिम्मेदारी बखूबी निभाई है। चुनाव परिणाम आने के बाद जम्मू-कश्मीर में सरकार बनाने की गतिविधियां जारी हैं और नेशनल कांफ्रेंस एवं कांग्रेस गठबंधन यहां पर सरकार बनाने की तैयारी में है, जिसका नेतृत्व उमर अब्दुल्ला करने जा रहे हैं। नई सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती राज्यपाल एवं प्रशासनिक अधिकारियों के साथ तालमेल बैठाना है और केंद्र सरकार के साथ समन्वय व संवाद स्थापित कर पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाना है। नई सरकार के सामने आतंकी गतिविधियों पर नियंत्रण की बड़ी जिम्मेदारी भी है, जिसके लिए केंद्र सरकार के साथ मिलकर काम करना होगा।

वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

सराहनीय निर्णय

प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुंभ के ठीक पहले जूना अखाड़ा द्वारा लिया गया यह निर्णय कि इस महाकुंभ में वंचित समाज के 71 संत महामंडलेश्वर बनाए जाएंगे, एक बहुत ही सराहनीय कदम है। इसके अत्यंत दूरगामी परिणाम होंगे। अक्सर यह आरोप लगाए जाते हैं कि संत समाज में उच्च पदों पर ऊंची जातियों के लोग ही आसीन हो पाते हैं। ऐसा है तो नहीं, पर उच्च पदों पर वंचित समाज का प्रतिनिधित्व कम तो है ही। वास्तविकता में पुरातन सनातन में केवल कर्म के आधार पर वर्ग बने थे। कालांतर में हिंदुओं को विभाजित कर उन पर राज करने की नीति रची गई। भेदभाव पैदा किया गया एवं यह प्रयास भी किया गया कि सब एक-दूसरे के विरुद्ध खड़े दिखाई दें। सनातन की इसी बिगड़ी छवि को निखारने में वंचित समाज के 71 संतों को महामंडलेश्वर बनाने का निर्णय महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इन महामंडलेश्वरों से यह भी अपेक्षा रहेगी कि वे वंचित समाज में धर्म का प्रचार-प्रसार बढ़ाएं और उन्हें धार्मिक रूप से शिक्षित करें। इससे समाज में समरसता बढ़ेगी एवं अन्य धर्मों में जाने की आशंका में कमी आएगी। वंचित वर्ग में धर्म के प्रति इससे जागरूकता आएगी और स्वयं को वे धर्म की मुख्यधारा में अधिक समाहित पा सकेंगे।

धर्मेंद्र नाथ रस्तोगी, गाजियाबाद

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें:
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

30 हजार करोड़ रुपये से अधिक की बैंक धोखाधड़ी की शिकायतें देश भर में दर्ज की गईं, वित्त वर्ष 2022-2023 के दौरान, भारतीय रिजर्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार।

लालजी जायसवाल
लोकनीति विश्लेषक

आजकल

साइबर ठगी की बढ़ती घटनाओं पर नियंत्रण

इंटरनेट तकनीक ने लोगों के काम को आसान अवश्य बनाया, परंतु ठगी के कार्यों को भी आसान कर दिया है। यह चिंता का विषय है कि देश में साइबर अपराध के मामले निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। पिछले दिनों भारत सरकार ने भी चेतावनी जारी की थी कि डिजिटल अरेस्ट के मामलों की संख्या बढ़ रही है। हम जितनी तेजी से डिजिटल दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं, उतनी ही तेजी से साइबर अपराध की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। वैसे हम अपनी ओर से थोड़ी सतर्कता बरतें, तो साइबर ठगी की घटनाओं को आसानी से घटाया या उन पर पूरी तरह नियंत्रण किया जा सकता है

प्रतीकात्मक

वर्तमान में भारत की बड़ी आबादी इंटरनेट नेटबैंकिंग साइट्स का उपयोग करती है। भारत में इंटरनेट नेटबैंकिंग साइट्स के उपयोग के प्रति लोगों में जानकारी का अभाव है। इसके साथ ही अधिकतर नेटबैंकिंग साइट्स के सर्वर विदेश में हैं, जिससे भारत में साइबर अपराध घटित होने की स्थिति में इनकी जड़ तक पहुंच पाना कठिन होता है। मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग की आबादी में गिने-चुने लोग ही ऐसे हैं जिनके पास मोबाइल फोन नहीं है और जिनके पास हैं, उनमें से बहुत कम ऐसे लोग होंगे जिन तक पहुंचने की कोशिश साइबर अपराधियों ने नहीं की हो। इन्हीं में से कुछ न कुछ इन अपराधियों की चालों का शिकार बन जाते हैं।

सतर्कता से ही संभव बचाव : भारत इंटरनेट का तीसरा सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है और हाल के वर्षों में साइबर अपराध कई गुना बढ़ गए हैं। साइबर सुरक्षा उपलब्ध कराने के लिए सरकार की ओर से कई कदम उठाए गए हैं। कैशलेस अर्थव्यवस्था को अपनाने की दिशा में बढ़ने के कारण भारत में साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। डिजिटल भारत कार्यक्रम की सफलता काफी हद तक साइबर सुरक्षा पर निर्भर करेगी। अतः भारत को इस क्षेत्र में तीव्र गति से कार्य करना होगा। वहीं दूसरी ओर इंटरनेट मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है। आज प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर के इंटरनेट मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है और उसे लाखों लोगों तक पहुंचा सकता है, परंतु इंटरनेट मीडिया का सावधानी से उपयोग आनलाइन ठगी से बचा सकता है।

साइबर ठगी : साइबर ठगी के मामले निरंतर बढ़त पर हैं। रिजर्व बैंक आफ इंडिया के अनुसार, साल 2018-19 में डिजिटल बैंकिंग फ्राड 74 प्रतिशत बढ़कर 71,543 करोड़ रुपये का हो गया है। इससे एक साल पहले वित्त वर्ष यानी 2017-18 तक यह आंकड़ा 41,168 करोड़ रुपये हुआ करता था। बैंकों ने 2018-19 में 6,801 फ्राड के मामलों की जानकारी दी, जो वर्ष 2017-18 में 5,916 थी। बैंकिंग धोखाधड़ी के मामले में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक सबसे आगे हैं। धोखाधड़ी के कुल मामलों में 55.4 प्रतिशत सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों से जुड़े थे। वहीं निजी क्षेत्र और विदेशी बैंकों की धोखाधड़ी में कुल धोखाधड़ी में हिस्सेदारी 30.7 प्रतिशत और 11.2 प्रतिशत रही। पिछले 11 वित्त वर्ष में बैंक फ्राड के कुल 53,334 मामले सामने आए हैं, जबकि इनके जरिये 2.05 लाख करोड़ रुपये की धोखाधड़ी हुई है। आरबीआइ की रिपोर्ट के अनुसार, 2022-2023 में 30 हजार करोड़ रुपये की बैंक धोखाधड़ी की शिकायतें देश में दर्ज की गई हैं। अभी तक साइबर अपराधी यूपीआइ, ओटीपी धोखाधड़ी, नौकरी के नाम पर ठगी, सामान आपूर्ति ठगी आदि के जरिए लोगों को ठगते आ रहे हैं। अब 'डिजिटल अरेस्ट' भी साइबर अपराधियों का बड़ा हथियार बनकर सामने आ रहा है।

साइबर ठगी में नवाचार : आज अपराधियों के फ्राड का तरीका भी नवाचार से युक्त है, जहां पहले अपराधी किसी भी बैंक ट्रांजिक्शन के लिए बैंक अकाउंट धारक के रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर ओटीपी भेज कर अपनी किसी चालबाजी से ओटीपी को प्राप्त कर व्यक्ति के बैंक का पूरा रुपया पल भर में खाली कर देता था, लेकिन आज अपराध का तरीका बदला हुआ प्रतीत होता है। वर्तमान में अपराधी फोन पे, टू-कालर और भीम एप आदि के यूपीआइ माध्यम से व्यक्ति को लालच देकर एक बड़ी राशि का रिक्वेस्ट मैसेज करता है और व्यक्ति को फोन करके उसे एक्टिवेट करने पर रिझाई की बात करता है। जैसाकि मनुष्य स्वभाव से ही लालची प्रकृति का होता है, इसी वजह से वह अपराधी के रिक्वेस्ट को एक्टिवेट कर देता है, जिससे व्यक्ति स्वयं ही अपराधी द्वारा बुने गए जाल में फंस जाता है और इस अपराध की जिम्मेदारी पीड़ित व्यक्ति स्वयं ले लेता है और पुलिस में शिकायत भी नहीं करता है और यदि करता भी है, तो हम सब देश के प्रशासनिक अधिकारियों के ढुलमुल रवैये से अच्छी तरह वाकिफ ही है। इसलिए लोगों को साइबर सुरक्षा के प्रति अधिक से अधिक जागरूक किया जाए, जिससे लोगों में डिजिटल इंडिया के प्रति सतर्कता लाई जा सके।

आज प्रत्येक डिजिटल उपभोक्ता को 'फिशिंग' एवं 'विशिंग' से सावधान रहना होगा। फिशिंग ऐसी ईमेल्स को कहते हैं जो बैंक या किसी लोकप्रिय शापिंग वेबसाइट या संस्थान से भेजी हुई लगती हैं। इनसे ग्राहक की व्यक्तिगत जानकारियां हासिल करने की कोशिश की जाती है। इन पर दिए गए लिंक को क्लिक करने पर वास्तविक जैसी दिखने वाली नकली वेबसाइट खुल जाती है। उस पर अपना यूजर आइडी और पासवर्ड दर्ज करते ही आपकी आनलाइन सुरक्षा पर खतरा बढ़ जाता है। इससे मोबाइल नंबर, लाग-इन आइडी, पासवर्ड, डेबिट कार्ड संबंधी जानकारी, सीवीवी, जन्म तिथि जैसी लोगों की अहम जानकारियां चोरी की जा सकती हैं। अज्ञात स्रोतों से प्राप्त ईमेल, काल और एसएमएस के प्रति सतर्क रहना चाहिए। साथ में, सभी लोगों को जागरूक किया जा सके। इसके लिए जरूरत इस बात की है कि ग्रामीण पंचायतों में एक ऐसे व्यक्ति की नियुक्ति की जाए जो ग्रामकार्मियों को डिजिटल मिशन के प्रति प्रेरित भी करें और धोखाधड़ी से अपने धन की सुरक्षा के उपाय बाबत प्रशिक्षण भी किसानों, मजदूरों या कम शिक्षित लोगों को प्रदान करें। परिणामस्वरूप अब प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान रखना होगा कि अंजान बीडियो काल को स्वीकार न किया जाए। अन्यथा डिजिटल अरेस्ट के शिकार बन सकते हैं। जागरूकता रहेगी तो साइबर अपराध से आसानी से बचा जा सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सामाजिक सरोकार

राजकुमार जैन
एआइ विशेषज्ञ

एआइ में हर क्षेत्र में क्रांति लाने की अद्भुत क्षमता है, जो लंबे समय से चली आ रही समस्याओं का अधिक कुशल और प्रभावी समाधान उपलब्ध करा सकती है। एक के बाद एक लगभग सभी उद्योगों और व्यवसायों में एआइ के लागू होने से हमारे सामाजिक तानेबाने पर खासा असर पड़ना अपेक्षित है। एआइ अपने कौशल और क्षमताओं के दम पर हाशिए पर पड़े समुदायों या वंचित तबके के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने में प्रभावी भूमिका निभा सकता है। वर्तमान में कई वंचित समुदायों के लिए दुर्लभ स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और परिवहन व्यवस्था को एआइ सामान्य व्यक्ति की पहुंच में ला सकता है, जो उन्हें सशक्त बनाकर एक स्वस्थ और अधिक सफल जीवन जीने में मदद कर सकते हैं।

इन समुदायों की विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने के लिए एआइ की असीमित क्षमताओं का दोहन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, एआइ-संचालित टेली मेडिसीन या दूरस्थ स्वास्थ्य सेवा समाधान वंचित तबके और शेष आबादी के बीच स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच के अंतर को कम करने में मदद कर सकती हैं। एआइ-संचालित शिक्षा समाधान हाशिए पर पड़े छात्रों को शिक्षा पाने के ऐसे अवसर प्रदान कर सकते हैं जो उनकी व्यक्तिगत जरूरतों के अनुरूप ढालकर उनके शैक्षणिक परिणामों में अनपेक्षित सुधार ला सकते हैं। साथ ही परिवहन क्षेत्र में फैली असमानताओं को कम करने में मदद करके एआइ हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए परिवहन की लागत को कम करने में मदद कर सकते हैं।

गरीबी के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए एआइ का उपयोग लोगों की व्यक्तिगत गोपनीयता पर हानिकारक प्रभाव डाल सकता है और भेदभाव को बढ़ावा दे सकता है। इसके अलावा एआइ के उपयोग के लिए बड़े निवेश की आवश्यकता होगी, क्योंकि एआइ सिस्टम को प्रभावी होने के लिए बड़ी मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है और यह डेटा प्राप्त करना महंगा हो सकता है। इसके अलावा, वृहद एआइ सिस्टम को अत्यधिक कंप्यूटिंग शक्ति की आवश्यकता होती है जिसे सुचारु रूप से बनाए रखना महंगा हो सकता है। चुनौतियों के बावजूद इस बात पर सहमति बढ़ती जा रही है कि गरीबी और असमानता के खिलाफ लड़ाई में एआइ एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है। इस क्षमता का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए जरूरी है कि सरकारें, संगठन और कारोबारी मिलकर यह सुनिश्चित करें कि तकनीक का उपयोग जिम्मेदारी से हो।

सही निवेश और सतर्क विनियमन के साथ एआइ दुनिया भर में फैली गरीबी और असमानता को कम करने में मदद कर सकता है। सरकारें, अंतरराष्ट्रीय संगठन और नागरिक ऐसे समाधानों की तलाश कर रहे हैं जो टिकाऊ, लागत प्रभावी और प्रभावशाली हों। एआइ का उपयोग ऐसे अभिनव और प्रभावी समाधान विकसित करने के लिए किया जा सकता है जो विभिन्न देशों और संदर्भों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप हों।

चूंकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अपरिहार्य रूप से सर्वव्यापी होना तय है, अतः इसके अंधाधुंध विकास और अनियंत्रित उपयोग के नैतिक प्रभावों पर विचार कर यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है कि किसी भी एआइ-आधारित एप्लिकेशन को कुछ इस तरह से बनाया और उपयोग किया जाए जो मानवाधिकारों का सम्मान करता हो और जो निष्पक्षता एवं समानता को बढ़ावा देता हो। ऐसा करने से हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग जिम्मेदारी से हो और इसका समाज पर लाभकारी प्रभाव पड़े। इसमें एआइ के उपयोग के लिए स्पष्ट नियम, नीतियां और नैतिक दिशानिर्देश विकसित करना शामिल है।

खरी-खरी

रावण जिंदा है

अलंकार रस्तोगी

रावण के पुतले ने अपने विशालकाय कद को देख्रा और फिर वह एक असीम गर्व की अनुभूति में खो गया। अपने गौरव पर मुग्ध रावण अपने चिर परिचित अट्टहास के मूड में आ चुका था। अट्टहास करने के लिए उसने अंदर से पूरा दम भरा, लेकिन उसके मुंह से तनिक भी आवाज नहीं निकल सकी। अब उसे भान हो चला था कि वह मात्र पुतला है और पुतलों के पास अट्टहास करने की सुविधा उपलब्ध नहीं होती है।

उस पुतले के चारों ओर मेले का जोर था। तभी कुछ असामाजिक तत्व एक निरीह खोमचे वाले से गुंडा टैक्स न मिलने पर उसका सामान जमीन पर गिराने के बाद उसी रावणीय शैली में अट्टहास करते हुए दिख रहे थे, जिसके लिए रावण आतुर हुए जा रहा था। रावण ने उनकी हंसी सुनते ही चौंन और हैरत की सांस ली कि इतने वर्षों बाद भी अभी तक अट्टहास करने वाले जीवित हैं। इस उपलब्धि को हासिल करने के बाद अब उसे स्वयं अट्टहास न कर पाने का कोई मलाल नहीं हो रहा था।

उधर राम लीला का मंचन भी पूरे उत्कर्ष पर था। भीड़ राम लीला के हर रोमांच को देख्रा लेने को आतुर थी। सीता हरण का दृश्य चल रहा था। रावण का पुतला उस दृश्य को देखते ही अपनी यादों में खो गया। उसके हाथ फिर किसी सीता की अस्मिता से खेलने को आतुर हो रहे थे। लेकिन पुतलों की सीमाएं होती हैं। उसके हाथ बंधे थे। तभी भीड़ का फायदा उठाकर कुछ शरारती लड़के एक लड़की को छेड़ने लगे। वह लड़की असहाय सी खड़ी वहां पर उपस्थित हर कथित धार्मिक और सामाजिक रूप से समृद्ध इंसान से मदद की गुहार लगा रही थी।

लेकिन वह भूल रही थी कि यह त्रेता युग नहीं है, जहां हनुमान जैसा बानर भी किसी स्त्री की मदद कर सकता है। यह तो कलयुग था, जहां इंसान भी सारी विसंगतियों के आगे आंख, कान और मुंह बंद किए बैठा रहता है। रावण के पुतले ने इस घटना को देखते ही अपने ऊपर गर्व किया कि उसके अनुयायियों की संख्या तो भगवान राम के अनुयायियों से भी अधिक है। उसने महसूस किया कि यहां तो हर बंदे के अंदर रावण दिख रहा है।

पोस्ट

शीश महल से 'आप' जितना दूर रहेगी उतना बेहतर है, अन्यथा उसकी तबाही तय है। पैसे ही पावर स्टार नेताओं ने 'आप' को खत्म करने की सुपारी ले रखी है।
आशुतोष@ashutosh83B

भारत और पाकिस्तान में मुस्लिम आबादी करीब-करीब बराबर है। इसके बावजूद पाकिस्तान में तो हजारों लोग जाकिर नाइक के खिलाफ बोल रहे हैं, लेकिन भारत में समुग्लिकल कोई इक्का-दुक्का ही उसके विरुद्ध आवाज उठाता हुआ दिखता है। जफर@Zaffar_Nama

टाटा एक ऐसा नाम, जिसने देश को गर्व करना सिखाया और एक भरोसा दिलाया कि भारत भी कुछ कर सकता है। टाटा को हर भारतीय अपना मानता है, उससे एक भावनात्मक जुड़ाव महसूस करता है।
सत्या चौधरी@satyagodara

टाटा समूह के पितामह और भारतीय उद्योग के पुरोधा जमशेदजी की तरह रतन टाटा भारत रत्न से कहीं बड़े थे। जिस देश को विकास और रोजगार के लिए निजी उद्यमी की बसबे ज्यादा जरूरत है, उसने उद्यमी को आज तक 53 में से केवल एक भारत रत्न दिया और वह भी मरणोपरांत। देश में उद्यम विरोधी मानसिकता का इससे बड़ा सुबूत और क्या होगा?
शिवकांत@shivkant

जागरण जनमत कल का परिणाम

क्या रतन टाटा को भारत रत्न से सम्मानित किया जाना चाहिए?

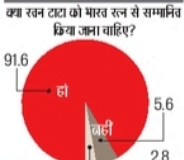

सभी आंकड़े प्रतिशत में

आज का सवाल

कांग्रेस को हरियाणा में हार के लिए जिम्मेदार नेताओं के विरुद्ध कार्रवाई करनी चाहिए?

परिणाम जागरण हेल्पलाइन सर्वेक्षण के पाठकों का मत है।

जनपथ

टाटा होना है नहीं बिल्कुल भी आसान,
बिजनेस की टेशन लिये चेहरे पर मुस्कान।
चेहरे पर मुस्कान न देखा 'केवल' पैसा,
शायद कोई और न होगा उनके जैसा!
नवपीढ़ी का पाठ बनेगी उनकी गाथा,
वनप्रेरणा याद रहेगी हरदम टाटा।
- ओमप्रकाश तिवारी

विकाश चन्द्र पाण्डेय
vikash@pat.jagran.com

बिहार डायरी

प्रदेश भाजपा को हरियाणा की हवा से सुकून

हरियाणा की जीत से भाजपा उछाह में है। मलाल तो उसे जम्मू-कश्मीर की हार का भी नहीं, क्योंकि वहां भी उसका प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ रहा है। दोनों राज्यों में जबरदस्त चुनौती के बावजूद मिली यह सफलता इतराने का स्वाभाविक आधार है, लिहाजा भाजपा झूम रही। इस उत्साह में उसने बिहार में भी खूब पटाखे फोड़े हैं, लेकिन इतना ख्याल जरूर रखा कि पड़ोसी की नींद में खलल न पड़े। हालांकि यहां विधानसभा के चुनाव में अभी साल भर की देरी है, फिर भी राजनीति को करवट लेते समय नहीं लगता। करवट फेरने की इस पीड़ा को अब तक सबसे अधिक भाजपा ने ही झेला है। ऐसे में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के अस्तित्व के लिए सबंधित चिंता उसे ही करनी है, जबकि यह चिंता अपने विस्तार की संभावनाओं को संकुचित कर देती है। बिहार में इस द्वंद्व से भाजपा आज तक उबर नहीं पाई, लेकिन अब अकुलाहट से निकल वह हरियाणा जैसी खुली हवा में सांस लेने को आतुर प्रतीत हो रही। इसी अकुलाहट में वह अपने रूठे-छूटे सहयोगियों को साध रही, तो साथ चलने वालों को भी पुचकारने से परहेज नहीं कर रही।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि सत्ता की लगातार दो पारियों के बावजूद हरियाणा में भाजपा ने अब तक का सर्वश्रेष्ठ चुनावी प्रदर्शन किया है। बिहार के संदर्भ में भी उसकी मंशा कुछ ऐसी ही है। वर्ष 2010 के प्रदर्शन से आगे बढ़ने की। हालांकि यहां जदयू की सशक्त उपस्थिति उसकी कई इच्छाओं को नियंत्रित कर देती है। वहीं बिहार में राजग में घटक दलों की संख्या भी अधिक है, जिनके नेताओं का अपना जातीय आधार है। इसीलिए हरियाणा जैसी एकतरफा राजनीति के बजाय वह बिहार में मिश्रित रणनीति का ताना-बाना बुन रही। अपनी नीतियों को आगे रखते हुए वह जातियों के उस प्लेटफार्म से सत्ता के शीर्ष तक पहुंचना चाहती है, जिनसे सहयोगी दलों को अधिक सीटों की दावेदारी का संबल मिल रहा है। दूसरी बात यह कि हरियाणा में भाजपा की जीत का बड़ा कारण कांग्रेस का ओवर कान्फिडेंस रहा है। जातियों के आधार पर गुटों में बंटे विरोधी खेमे के नेताओं ने भाजपा के मैनेजमेंट को और तगड़ा बना दिया।

हरियाणा में विधानसभा चुनाव में प्राप्त जीत का पटना में जश्न मनाते भाजपा के नेता। जागरण

बिहार में ह-ब-ह ऐसी स्थिति तो नहीं, लेकिन विरोधाभास यहां भी खूब है। वैसे भी यहां भाजपा के लिए विरोधी खेमे से लड़ाई कभी कठिन नहीं रही, क्योंकि लालू प्रसाद के बहाने नैरेटिव ही ऐसा बन जाता है। समस्या राजग में समन्वय की होती है। यही बड़े भाई की भूमिका का निर्धारण करेगी, लिहाजा बड़ी चतुराई से भाजपा इस बार भी कुछ ऐसा ही माहौल बनाने की जुगत में है। जीतन राम मांझी को केंद्रीय मंत्री बनाना हो या पिछले दो बार से लोकसभा चुनाव में पराजित हो रहे उपेंद्र कुशवाहा को राज्यसभा भेजना, भाजपा एक साधी हुई रणनीति पर आगे बढ़ रही। राजनीतिक अवसान तक पहुंच चुके पशुपति कुमार पारस का अचानक मुखर हो जाना इस रणनीति का ही एक हिस्सा है। जदयू इसे भलीभांति समझ रहा। इसीलिए वह हरियाणा की जीत पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बधाई देते हुए बगलगीर झारखंड में हिस्सेदारी की मांग को भी आगे बढ़ा देता है। जदयू जानता है कि बिहार के चुनावी माहौल को हरियाणा से अधिक झारखंड व दिल्ली का परिणाम प्रभावित करेगा, उससे भी अधिक बिहार में विधानसभा की चार सीटों पर होने वाला उप चुनाव। उप चुनाव में राजग के साथ महागठबंधन और जन सुराज पार्टी की भी औकात का पता चल जाना है।

बहरहाल राजग के जो छोटे घटक दल इतरा रहे, उनके पास जमीनी स्तर पर संगठन का अभाव है। एकमात्र जातीय आधार उन्हें बिहार की राजनीति में स्थापित किए हुए हैं। पिछले चुनावों में जाति की यह जकड़न कुछ ढीली हुई है। ऐसे में मोल-तोल करने वाले सहयोगियों को भी इसका अहसास तो है कि चुनाव के लिहाज से बूथ और माइक्रो मैनेजमेंट में भाजपा का कोई जोड़ नहीं। घटक दलों के जातीय आधार से जब इस चुनावी प्रबंधन की जुगलबंदी होती है, तो जीत की राह सहज निकल आती है।

विकासशील इंसान पार्टी की विधानसभा चुनाव में जीत व लोकसभा चुनाव में हार हो या लोजपा की विधानसभा चुनाव में हार और लोकसभा चुनाव में जीत, केंद्र में भाजपा ही रही है। इस रणनीति का लाभ उसे चुनाव परिणाम के बाद भी मिलता रहा है। हाथ से दो बार निकल चुकी बिहार की सत्ता में वह अपनी इन्हीं रणनीतियों से पुनर्वापसी करती रही है। हालांकि एकछत्र राज का उसका सपना अधूरा है। ऐसे में बड़े भाई की भूमिका को लेकर अनिर्णय की स्थिति में ही वह अपनी संभावनाओं का विस्तार करना चाहे तो कोई आश्चर्य नहीं।

मंथन

जनगणना के दीर्घकालिक लाभ

कोविड जनित कारणों से इस बार जनगणना समय से नहीं हो सकी। इसकी महत्ता एवं नागरिकों का एक केंद्रीय डाटाबेस बनाने की आवश्यकता को देखते हुए जल्द इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए

मनु गौड़
सदस्य, विशेषज्ञ समिति, समान नागरिक संहिता, उत्तराखंड

किसी भी देश के विकास के लिए जनगणना कराना आवश्यक है। किसी भी वर्ग या समुदाय के लिए नीति निर्धारण करने हेतु उसकी वास्तविक जनसंख्या की जानकारी होना जरूरी है। हमारे देश में पहली बार जनगणना वर्ष 1872 में प्रारंभ की गई और वर्ष 1881 में हमारी पहली पूर्ण जनगणना की गई। आजादी के बाद पहली जनगणना वर्ष 1951 में की गई और तब से प्रत्येक दस वर्षों के अंतराल पर 2011 तक भारत में कुल सात बार जनगणना की गई है। लेकिन आजादी के बाद ऐसा पहली बार हुआ है कि 2021 में होने वाली जनगणना को कोविड महामारी के कारण रोक दिया गया, जो अभी तक नहीं कराई जा सकी है। कैबिनेट द्वारा हाल ही में 'वन नेशन वन इलेक्शन' पर आई कोविन्द समिति की रिपोर्ट को हरी झंडी दिखाए जाने पर अब जनगणना कराए जाने की उम्मीद बढ़ चली है।

वर्तमान में देश में जातिगत जनगणना के लिए आवाज उठाई जा रही है। जो राजनीतिक दल आज जातिगत जनगणना के पक्षधर हैं, उनके द्वारा वर्षों 2011 में कराई गई जातिगत जनगणना के आंकड़ों को सार्वजनिक नहीं किया गया था? आज देश को जातिवादी राजनीति के दलदल में धकेलने का प्रयास किया जा रहा है। जातिगत जनगणना अब एक राजनीतिक मुद्दा बन चुका है, क्योंकि इसी के आधार पर निशुल्क योजनाओं के द्वारा वोटों को प्रभावित करके सरकार में आने के लिए रास्ते सफल होते हैं। जिन करदाताओं के पैसों से ये सभी योजनाएं संचालित होती हैं या वोटों को प्रभावित करने के लिए चुनावी बादे किए जाते हैं, यदि उन करदाताओं के द्वारा भी कभी करदाताओं के मध्य जातिगत हिस्सेदारी की गणना कराने की मांग उठ खड़ी हुई तो राजनीतिक दल बड़े ही असमंजस में फंस जाएंगे। समाज को जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि के चश्मे से न देखकर इन विघटनकारी नीतियों को समाप्त करके ही हम एक सशक्त भारत बना सकते हैं। इसके लिए सरकारों को अंतर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन देने हेतु योजनाएं बनानी चाहिए और साथ ही सरकारी योजनाओं का लाभ जातिगत आधार पर न देकर आर्थिक आधार पर उपलब्ध कराना चाहिए।

नेशनल डेटाबेस : नागरिकों से जुड़े वास्तविक आंकड़ों का आज भी अभाव है और सरकार का हर विभाग अपनी योजनाओं के लिए अलग-अलग सर्वे कराता है, पहचान पत्र जारी करता है, आंकड़े तैयार करता है और उन पर हजारों करोड़ रुपये खर्च करता है। उदाहरण के लिए सरकार यदि विधवा महिलाओं के लिए कोई योजना लागू करना चाहे तो उसे किसी भी आंकड़ों से यह जानकारी नहीं मिल सकती कि हमारे देश में कितनी विधवा महिलाएं हैं? जब वास्तविक आंकड़े ही नहीं होंगे तो सही और प्रभावी नीतियों का निर्माण कैसे संभव है? इस बार के बजट में जनगणना हेतु लगभग 1,310 करोड़ रुपये की धनराशि निर्धारित की गई है। आधार कार्ड बनाने पर वर्ष 2009 से 2024 के मध्य 17 हजार करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि खर्च की गई है। उसी प्रकार ब्रीथ्रीएल सर्वे, एनएचएफएस सर्वे, बाल गणना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान योजना, खाद्य योजना, किसान सम्मान निधि, मतदाता पहचान पत्र, राशन कार्ड, परिवार रजिस्टर, परिवार पहचान पत्र, जाति प्रमाण पत्र जैसी अनेक अन्य योजनाओं और सुविधाओं के सर्वे एवं लाभार्थियों की पहचान के लिए केंद्र सरकार व राज्य सरकारें लाखों करोड़ रुपये खर्च करती हैं। भारत सरकार द्वारा यदि प्रत्येक व्यक्ति का एक केंद्रीय डेटाबेस तैयार किया गया होता, जिसके आधार पर

प्रतीकात्मक

सभी प्रकार की सरकारी सुविधाओं का लाभ मिलता, तो प्रत्येक वर्ष सर्वे और लाभार्थियों की पहचान के नाम पर खर्च होने वाले हजारों करोड़ रुपये की बचत होती और इन सुविधाओं का लाभ लेने हेतु नागरिकों को अलग-अलग सरकारी कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ते।

इस बार की जनगणना कराते समय केंद्र सरकार यदि जनगणना को सभी नागरिकों के आधार नंबर से पुष्टि करके आनलाइन कराती है और साथ ही इसे पैन, मतदाता पहचान पत्र, परिवार रजिस्टर, परिवार पहचान पत्र, जाति प्रमाण पत्र, जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र, विवाह-तलाक पंजीकरण आदि से भी जोड़ दिया जाता है, तो भविष्य में किसी प्रकार के सर्वे या लाभार्थी की पहचान के लिए हजारों करोड़ रुपये खर्च करने की जरूरत नहीं होगी। इस तरह हमारे पास भविष्य के लिए हर प्रकार के रियल टाइम आंकड़े उपलब्ध रहेंगे।

इसलिए भारत सरकार को चाहिए कि इस जनगणना के माध्यम से एक ऐसा नेशनल डेटाबेस तैयार किया जाए, जिसमें सीआरएस पोर्टल के माध्यम से जन्म एवं मृत्यु प्रमाण पत्र जारी होने पर संबंधित परिवार में संख्या स्वतः ही घट या बढ़ सके। साथ ही, यदि इसी जनगणना के माध्यम से ही सभी के विवाह एवं तलाक का भी अनिवार्य रूप से पंजीकरण करा लिया जाए, तो प्रत्येक परिवार से संबंधित हर प्रकार के आंकड़े हमारे पास उपलब्ध रहेंगे। नीति निर्माण करने और देश की प्रगति के लिए आवश्यक है कि भारत सरकार इस ओर ध्यान दे।

****

दैनिक ट्रिब्यून
स्थापना 15 अगस्त 1978

महंगाई की फिक्र

चिंता में आरबीआई के ठिठके कदम

पुष्परंजन

ऐसे वक्त में जब भारतीय बाजार त्योहार की रंगत में रंगने लगे हैं और कारोबारियों को बेहतर कारोबार की उम्मीद है, भारतीय रिजर्व बैंक महंगाई को लेकर फिक्रमंद है। उसे चिंता है कि महंगाई बढ़ी तो त्योहार की रौनक प्रभावित हो सकती है। तभी मौद्रिक नीति की घोषणा करते वक्त केंद्रीय बैंक ने रेपो दर को यथावत बनाये रखा है। बहरहाल, ये आने वाला वक्त बताएगा कि रिजर्व बैंक किस हद तक महंगाई पर नियंत्रण रखने में सफल हो पाता है। दरअसल, केंद्रीय बैंक का लक्ष्य है कि महंगाई की दर को चार फीसदी से नीचे रखी जाए। चिंता जतायी जा रही है कि आने वाले दो वर्ष में यह दर चार फीसदी से ऊपर रह सकती है। जब दो साल पहले खुदरा महंगाई की दर सात फीसदी के करीब पहुंच गई थी तो केंद्रीय बैंक ने मौद्रिक उपायों से महंगाई पर काबू पाने का प्रयास किया। बैंक ने धीरे-धीरे रेपो दर में वृद्धि की थी। फिलहाल छह बार की बढ़ोतरी से फिलहाल इस दर में करीब ढाई फीसदी की वृद्धि हो चुकी है। अब महंगाई बढ़ने की फिक्र में केंद्रीय बैंक ने दसवीं बार रेपो दर को यथावत रखा है। जो फिलहाल साढ़े छह फीसदी है। दरअसल, बैंक का आकलन है कि आने वाले दो वर्षों में महंगाई की दर चार फीसदी से ऊपर रह सकती है। केंद्रीय बैंक यदि उद्यमियों के दबाव के बावजूद बैंक दरों में कमी नहीं कर रहा है तो उसकी वजह महंगाई की फिक्र में थमे कदम हैं। बैंक का आकलन है कि यदि हम महंगाई की दर को अपने लक्ष्य चार फीसदी से कम लाने में कामयाब हो जाते हैं तो देश की विकास दर के ऊंचे लक्ष्य हासिल किये जा सकते हैं। इतना ही नहीं, विकास दर दो अंकों का आंकड़ा छू सकती है। वैसे जिस तरह कोविड संकट से उबरती दुनिया को रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिम एशिया के संकट से जूझना पड़ रहा है, भारत उससे अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने में कामयाब रहा है।

यह एक हकीकत है कि जहां दुनिया के अन्य विकसित देश मंदी के संकट से जूझ रहे हैं, भारत मंदी के दुष्प्रभाव से अर्थव्यवस्था को बचा पाया है। निस्संदेह, हमारी मौद्रिक नीतियां आर्थिकी को स्थायित्व प्रदान करने में किसी हद तक सफल रही हैं। यही वजह है कि संवेदनशील आर्थिकी के वैश्विक परिदृश्य में केंद्रीय बैंक ने मौद्रिक नीतियों में बदलाव से परहेज किया है। निस्संदेह, भारत इस समय दुनिया में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शुमार है। इस स्थिति को बनाए रखने के लिये खासी सावधानी भी जरूरी है। लेकिन ऊंची रेपो दर का नुकसान देश के उन उपभोक्ताओं को उठाना पड़ रहा है, जो घर-वाहन लोन की ईएमआई कम होने की उम्मीद लगाए बैठे हैं। हालांकि, देश के बुजुर्गों को बचत खाते में अधिक ब्याज मिलने से लाभ जरूर हो रहा है। लेकिन महंगाई का प्रभाव तो समाज के हर वर्ग पर पड़ रहा है। वहीं थोक व फुटकर की महंगाई के आंकड़े भले ही इसके कम होने की बात कर रहे हों, लेकिन व्यवहार में फल-सब्जी व खाद्य पदार्थों की महंगाई उपभोक्ताओं के बजट को प्रभावित कर रही है। दूसरी ओर कर्ज लेने वाले लोगों को बढ़ी किस्तें भी परेशान कर रही हैं। कारोबारी और कामकाजी लोग काफी समय से आस लगाए बैठे थे कि यदि रिजर्व बैंक रेपो दरों में कुछ कमी करता है तो ऋण सस्ते होने से उनके कर्ज की किस्त कुछ हल्की हो जाएगी। लेकिन महंगाई की चिंता कर रहा केंद्रीय बैंक ऐसे किसी कदम को उठाने से परहेज कर रहा है। लेकिन एक बात तो तय है कि महंगाई दर में कमी के दावों का अहसास आम आदमी को भी होना चाहिए। सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि महंगाई के आंकड़ों पर काबू पाने का वास्तविक लाभ आम उपभोक्ता को कैसे और कब मिलेगा। कोशिश की जानी चाहिए कि त्योहार के मौसम में आम आदमी को दैनिक उपभोग की वस्तुएं मसलन खाद्यान्न, सब्जी-फल, डेरी उत्पाद व खाद्य तेल वाजिब दामों में मिले। तभी महंगाई पर नियंत्रण के सरकारी दावे सिरे चढ़ सकेंगे।

इस समय ज़ाकिर नाइक का हेट स्पीच पाकिस्तान में महंगाई, ग़रीबी, बेरोज़गारी से ध्यान हटाने में कामयाब हो रहा है। संभव है शाहबाज़ शरीफ़ इस 'धार्मिक मिसाइल' को अपनी सियासत के लिए इस्तेमाल करें।

आज का विचार

मनुष्य उतना ही महान होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शक्ति का विकास करेगा। **- स्वेट मार्डेन**

एकदा

नारी का गुरुत्व

एक बार तुलसीदास जी के नारी को हठी तथा परुषव का कारक कहने पर कुछ समतावादी उनके रचे हुए पर काफी तीखी प्रतिक्रिया करने लगे। लोग उनके समीप जाकर उन पर आरोपण भी करने लगे कि तुलसीदास जी ने जानकी महिमा तो खूब गाई मगर बाकी नारियों का अपमान किया। इन आरोपों पर तुलसीदास जी ने अपने शांत भाव से कहा कि ऐसा नहीं है मैं तो नारी को अपना गुरु मानता हूं। आप सभी को विदित है कि मेरी अपनी पत्नी रत्नावली से ही मुझे अनंत प्रेम भी था और उसी ने तो मुझे फटकार कर सही राह भी सुझाई। अगर वह न होती तो जीवन में प्रबोधन न हो सकता था। **प्रस्तुति : पूनम पांडे**

40 साल पहले

दैनिक ट्रिब्यून

पाक के परमाणु कार्यक्रम से भारत को खतरा : इंदिरा

नयी दिल्ली, 11 अक्तूबर (प्रेट्र, वार्ता)। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने आज घोषणा की कि देश की प्रतिरक्षा तैयारी करते समय पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम से देश की सुरक्षा को उत्पन्न खतरों और कुछ देशों में सांठगांठ को ध्यान में रखा जाना होगा। सैनिक कमांडरों के पांच दिन के द्विवार्षिक सम्मेलन को संबोधित करते हुए श्रीमती गांधी ने इस बात के लिए अमेरिका की आलोचना की कि वह पाकिस्तान के परमाणु अस्त्र कार्यक्रम के बारे में प्रमाण मिल जाने के बावजूद उसे सैनिक सहायता दे रहा है।

भाजपा अन्य विपक्षी दलों से सीटों का तालमेल करेगी

पुणे (वार्ता, प्रेट्र)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आज लोकदल के साथ अपने 14 महीने पुराने राष्ट्रीय लोकतांत्रिक मोर्चे को जारी रखने का समर्थन करते हुए लोकसभा चुनावों में अन्य विपक्षी दलों के साथ भी सीटों का तालमेल करने का निर्णय किया है। पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की दो दिन की बैठक के अंत में सर्वसम्मति से इस आशय का फैसला किया गया। बैठक में पार्टी महासचिव लालकृष्ण आडवाणी द्वारा तैयार किये गये 11 पृष्ठों के 'चुनाव पूर्व सर्वेक्षण' के आधार पर पार्टी की चुनावी रणनीति के बारे में विचार-विमर्श हुआ।

ज़ाकिर के जरिये खेल करने की ताक में पाक

आप एक टिकट में दो फिक्चर देखिये। मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम 3 अक्तूबर, 2024 को पाकिस्तान पहुंचे, और इसके ठीक तीन दिन पहले, 30 सितम्बर को इंडिया का मोस्ट वांटेड ज़ाकिर नाइक राजकीय अतिथि के रूप में पंद्रह दिनों के वास्ते पाकिस्तान आता है और पीएम शहबाज़ शरीफ से मिलता है। अनवर इब्राहिम और शाहबाज़ शरीफ ने जो साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस की, उसमें ज़ाकिर नाइक का ज़िक्र नहीं था। बल्कि इसका आदर किया गया कि मांस, चावल और पाम ऑयल के आयात सहित व्यापार और कृषि प्रौद्योगिकी के सभी क्षेत्रों में सहयोग बढ़ेगा, और दोनों देश आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), डिजिटल और सेमीकंडक्टर जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों के माध्यम से कुशल श्रमिक क्षेत्र में भी उभयपक्षीय सहयोग करेंगे।

अगस्त, 2024 के तीसरे हफ्ते मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर बिन इब्राहिम तीन दिवसीय भारत दौरे पर भी आये थे। मोदी-इब्राहिम मुलाकात का मुख्य फोकस व्यापार और निवेश का विस्तार करना और सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में सहयोग तलाशना था। लेकिन, ज़ाकिर नाइक की पूरी नज़र थी कि भारत उसके प्रत्यर्पण की मांग न कर दे। उस अवसर पर उग्रवाद को कैसे काबू करें, उसपर दोनों नेताओं ने चिंता व्यक्त की थी, लेकिन प्रत्यक्ष रूप से ज़ाकिर नाइक के प्रत्यर्पण का सवाल तब भी उठा नहीं था।

ज़ाकिर नाइक पाकिस्तान क्यों, और किसलिए आया है, यह बीच बहस नहीं है। इधर भारत में भी अख्यारों, सत्ता को सलाम करने वाले चैनलों में यह केवल छोटी सी ख़बर बनकर रह गई है। लेकिन खेल बड़ा है, जिसे समझने में समय लग सकता है। पाकिस्तान को ज़ाकिर नाइक की ज़रूरत क्यों आन पड़ी? और क्या ज़ाकिर नाइक अब अपना ठिकाना शिफ्ट करने वाला है? दो बड़े सवाल हैं।

ज़ाकिर नाइक अपने बेटे शेख़ फ़रीक़ नाइक के साथ पाकिस्तान आया हुआ है। डॉ. नाइक का स्थानत प्रधानमंत्री के युवा कार्यक्रम के अध्यक्ष राणा मशहूद ने एयरपोर्ट पर किया था। ज़ाकिर नाइक कराची में ज्ञान बांट चुका। 12-13 अक्तूबर को लाहौर में, और इस्लामाबाद में 19-20 अक्तूबर को प्रवचन देगा। ज़ाकिर नाइक ने शुक्रवार को कराची में पत्ते खोले कि सितम्बर, 2019 के आख़िरी सप्ताह पीएम मोदी का एक दूत पुजनया आया, और प्रस्ताव दिया कि यदि मैं 370 खारिज किये जाने का समर्थन करूंगा, तो भारत आने के वास्ते 'सेफ पैसेज' दिया जायेगा।

ढाका आतंकी हमले के बाद, 10 जुलाई 2016 को बांग्लादेश में पीस टीवी बैन कर दिया गया। 21 अप्रैल, 2019 को श्रीलंका में ईस्टर बम धमाकों के लिए ज़िम्मेदार समूह नेशनल तौहीद जमात के नेता ज़हरान हाशिम ने ज़ाकिर नाइक की प्रशंसा करते हुए श्रीलंकाई मुसलमानों से पूछा था, कि वे उनके लिए क्या कर सकते हैं। लगभग 260 लोगों की जान लेने वाले आतंकी हमलों के बाद, श्रीलंका ने भी ज़ाकिर नाइक के पीस टीवी के प्रसारण पर प्रतिबंध लगा दिया। 'हेट क्रिमिनल' ज़ाकिर नाइक के पीस टीवी चैनल पर भारत, कनाडा, बांग्लादेश, श्रीलंका और ब्रिटेन में प्रतिबंध है। लेकिन बांग्लादेश से ताज़ा अपडेट है कि वहां का शासन, 'पीस टीवी' के प्रसारण को दोबारा से चालू करने पर विचार कर रहा है। जून, 2009 से पाकिस्तान में 'पीस टीवी उर्दू' लोग देख रहे हैं। ज़ाकिर नायक के चाहने वाले बांग्लादेश में माहौल बनाये, इस वास्ते दोबारा कोशिशें वाया पाकिस्तान शुरू हो गई हैं।

इस बार भारत-पाकिस्तान के बीच कूटनीति के दरवाज़े 'खुल जा सिमसिम' हो रहे हैं। मरियम नवाज़ ने बुधवार को कहा था, 'दोनों पंजाब में पराली जलाने की समस्या है, भारत-पाक को अब पर्यावरण कूटनीति की ज़रूरत है।' ज़ाकिर नाइक को इंडिया अच्छा लगने लगा है। पाक एयरपोर्ट पर उतरते उसे भारतीय एयरलाइंस की याद आई जो अतिरिक्त सामान के पैसे माफ़ कर दिया करता था। 15-16 अक्तूबर को शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गेनाइज़ेशन की बैठक के वास्ते एस जयशंकर यदि पाकिस्तान में होते हैं, मोस्ट वांटेड ज़ाकिर नाइक का प्रत्यर्पण क्या करा पाएंगे? यह प्रश्न शायद उन्हें असहज करे। दरअसल, ज़ाकिर नाइक डिप्लोमेसी की रहस्यमय बिसात का पैसा मोहरा है, जिसे ज़रूरत के हिसाब से रखा-लुढ़काया जाता है।

मलेशिया में शरिया और सरकार के बीच द्वंद्व का माहौल है। मलेशिया, सलाफ़ीवादियों या वहाबियों के कब्ज़े में 1980 से ही है। इनके संरक्षक सऊदी, यमनी और कुवैती हैं। 2018 में महाथिर मोहम्मद आये भी सलाफियों के समर्थन से। मलेशिया में मुफ़्ती असरी जैनल आबिदीन के प्रभाव के कारण सलाफ़ीवाद ताक़तवर बना है, जिसे राजशाही, स्थानीय राजनेताओं, मस्जिद नेटवर्क और विद्यादसद्द उपदेशक ज़ाकिर नाइक सरीखे विदेशी संरक्षकों से समर्थन मिलता है।

मलेशिया, कठमुल्लों को कैसे काबू करे, यह मौजूदा सरकार के लिए भी बड़ी चुनौती बन चुकी है। लेकिन इसका बीजारोपण सत्ताधारियों का ही नुकसान नहीं हो सकेगा। इस समय भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है। भारत खाद्यान्न अधिशेष वाला देश है और देश के 80 करोड़ से अधिक कमजोर वर्ग के लोगों को निःशुल्क खाद्यान्न वितरित किया जा रहा है। भारत पर दुनिया का आर्थिक विश्वास बना हुआ है। नवीनतम आंकड़ों के मुताबिक 27 सितंबर को भारत के पास रिकॉर्ड स्तर पर 704 अरब डॉलर से अधिक का विदेशी मुद्रा भंडार है, जिससे भारत किसी भी आर्थिक जोखिम का सरलतापूर्वक सामना करने में सक्षम है।

फिर भी भारत को महंगाई पर सतर्क निगाहें रखनी होंगी। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के मुताबिक खुदरा महंगाई दर अगस्त महीने में मामूली बढ़कर 3.65 प्रतिशत रही। यह आरबीआई द्वारा निर्धारित लक्ष्य के दायरे में है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित खुदरा मुद्रास्फीति जुलाई, 2024 में 3.6 प्रतिशत थी। अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलते हुए दिखाई दी है।

अब सरकार को भी महंगाई नियंत्रण के लिए बहुआयामी रणनीति की डगर पर आगे बढ़ना होगा। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि **वर्ष 2024-25 के बजट के तहत शीघ्र खराब होने वाले** सामान की बाजार में समुचित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। बजट के तहत उपभोक्ता मामलों के विभाग को दाम स्थिरीकरण कोष (पीएसएफ) के लिए 10,000 करोड़ रुपये दिए गए हैं। जहां इस कोष का उपयोग दाल, प्याज और आलू के बफर स्टॉक को रखने के लिए किया जाएगा। वहीं जरूरी होने पर इन अन्य खाद्य वस्तुओं के बढ़े दामों को नियंत्रित करने के लिए भी इस कोष का इस्तेमाल किया जा सकेगा। इसके अलावा खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग के लिए खाद्य भंडारण और वेयरहाउसिंग के लिए ऋणों की राशि दोगुनी करके 50,000 करोड़ रुपये सुनिश्चित की गई है। जो वैश्विक चुनौती के मुकाबले में सहायक होगी।

लेखक अर्थशास्त्री हैं।

पश्चिम एशिया के संघर्षों के चलते भारत की आर्थिक स्थिति पर दबाव बढ़ रहा है। आरबीआई ने ब्याज दरों में बदलाव नहीं करने का निर्णय लिया है, जबकि वैश्विक तेल कीमतों में उछाल और अन्य आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

पश्चिम एशिया संघर्ष

महंगाई पर नियंत्रण रखने की चुनौती बढ़ी

डॉ. जयंतीलाल भंडारी

हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक की क्रेडिट पॉलिसी कमेटी बैठक में आरबीआई के गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि पश्चिम एशिया संघर्ष से निर्मित वैश्विक संकट से भारत में महंगाई बढ़ने की जोखिम के मद्देनजर ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया गया है। ये लगातार 10वीं बार है जबकि रिजर्व बैंक ने रेपो रेट में कोई बदलाव नहीं किया है। वैश्विक तेल की कीमतों में आए उछाल पर पेट्रोलियम मंत्री हरदीप पुरी ने कहा है कि पश्चिम एशिया में अधिक तनाव बढ़ने पर भारत कच्चे तेल के किसी भी संकट से निपटने में सक्षम होगा। पहले भारत 27 देशों से कच्चा तेल खरीदता था, अब इन देशों की संख्या बढ़कर 39 हो गई है।

इन दिनों ईरान और इस्राइल सहित पश्चिम एशिया में बढ़ते संघर्ष तथा रूस-यूक्रेन युद्ध के विस्तारित होने से भारत की आर्थिक चुनौतियां बढ़ गई हैं। ये चुनौतियां कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों, शेयर बाजार में गिरावट, माल ढुलाई की लागत बढ़ने, खाद्य वस्तुओं की महंगाई, भारत से चाय, मशीनरी, इस्पात, रत्न, आभूषण तथा फुटवियर जैसे क्षेत्रों में निर्यात आदेशों में कमी, निर्यात के लिए बीमा लागत में वृद्धि तथा इस्राइल और ईरान के साथ द्विपक्षीय व्यापार में कमी के रूप में दिखाई दे रही हैं। स्थिति यह है कि वैश्विक शेयर बाजार के साथ-साथ भारत के शेयर बाजार पर भी असर पड़ना शुरू हुआ है। पश्चिम एशिया संकट और चीन से सरकारी प्रोत्साहन के दम पर बाजार चढ़ने के मद्देनजर भारत के शेयर बाजार में कुछ विदेशी निवेशकों द्वारा जोखिम वाली संपत्तियां बेची जा रही हैं और वे अपना कुछ निवेश निकाल रहे हैं। स्थिति यह है कि सेंसेक्स और निफ्टी के लिए अक्तूबर, 2024 का पहला सप्ताह 4.5 फीसदी के नुकसान के साथ दो साल की सबसे बड़ी गिरावट का सप्ताह रहा है। पश्चिम एशिया संघर्ष के बीच निवेशक सुरक्षित निवेश के तौर पर सोने की खरीद का भी रुख कर रहे हैं। इससे भारत में भी सोने की खपत और सोने की कीमत बढ़ने लगी है।

अब यदि कच्चे तेल की कीमतें तेजी से बढ़ेंगी तो दुनियाभर में कई वस्तुओं के दाम बढ़ने के साथ-साथ भारत में भी कीमतें बढ़ने का सिलसिला शुरू हो सकता है। चूंकि ईरान दुनिया के सबसे बड़ा कच्चा तेल उत्पादकों में से एक है और यह देश पश्चिम एशिया के संवेदनशील इलाकों में स्थित है। ऐसे में ईरान के तेल बाजार में अस्थिरता से कच्चे तेल की कीमतें तेजी से बढ़ने पर पेट्रोल, डीजल और अन्य पेट्रोलियम उत्पाद महंगे होने लगेंगे। इसका असर 80 फीसदी आयात करने वाले भारत पर विशेष रूप से पड़ेगा।

आशंका है ईरान और इस्राइल के बीच संघर्ष का असर वैश्विक शिपिंग रूट्स पर भी पड़ सकता है, खासकर होर्मुज जलडमरूमध्य पर। दुनिया को मिलने वाला करीब एक-तिहाई तेल और खाद्य व कृषि उत्पादों का अधिकांश यातायात इसी मार्ग से होता है। ऐसे में इस क्षेत्र में शिपिंग बाधित होने से ग्लोबल सप्लाई चैन प्रभावित हो सकती है। इससे खाद्य पदार्थों, जैसे कि गेहूं, चीनी और अन्य कृषि उत्पादों की कीमतें बढ़ने लगेंगी। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि ईरान और इस्राइल के बीच युद्ध का अप्रत्यक्ष प्रभाव भारतीय फार्मास्यूटिकल उद्योग पर भी पड़ सकता है, क्योंकि भारत अभी भी ज्यादातर दवाओं के लिए कच्चे माल का बड़ा हिस्सा विदेश से आयात करता है। ऐसे में दवाओं की कीमतों में बढ़ोतरी की आशंका होगी।

इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि पश्चिम एशिया में युद्ध के बढ़ने पर बाजार में तेज गिरावट और महंगाई वृद्धि का दौर निर्मित होते हुए दिखाई दे सकता है। लेकिन भारत के कई ऐसे मजबूत आर्थिक पक्ष हैं जिनसे भारत के आम आदमी और भारतीय अर्थव्यवस्था को अधिक नुकसान नहीं हो सकेगा। इस समय भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है। भारत खाद्यान्न अधिशेष वाला देश है और देश के 80 करोड़ से अधिक कमजोर वर्ग के लोगों को निःशुल्क खाद्यान्न वितरित किया जा रहा है। भारत पर दुनिया का आर्थिक विश्वास बना हुआ है। नवीनतम आंकड़ों के मुताबिक 27 सितंबर को भारत के पास रिकॉर्ड स्तर पर 704 अरब डॉलर से अधिक का विदेशी मुद्रा भंडार है, जिससे भारत किसी भी आर्थिक जोखिम का सरलतापूर्वक सामना करने में सक्षम है।

फिर भी भारत को महंगाई पर सतर्क निगाहें रखनी होंगी। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के मुताबिक खुदरा महंगाई दर अगस्त महीने में मामूली बढ़कर 3.65 प्रतिशत रही। यह आरबीआई द्वारा निर्धारित लक्ष्य के दायरे में है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित खुदरा मुद्रास्फीति जुलाई, 2024 में 3.6 प्रतिशत थी। अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलते हुए दिखाई दी है।

अब सरकार को भी महंगाई नियंत्रण के लिए बहुआयामी रणनीति की डगर पर आगे बढ़ना होगा। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि **वर्ष 2024-25 के बजट के तहत शीघ्र खराब होने वाले** सामान की बाजार में समुचित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। बजट के तहत उपभोक्ता मामलों के विभाग को दाम स्थिरीकरण कोष (पीएसएफ) के लिए 10,000 करोड़ रुपये दिए गए हैं। जहां इस कोष का उपयोग दाल, प्याज और आलू के बफर स्टॉक को रखने के लिए किया जाएगा। वहीं जरूरी होने पर इन अन्य खाद्य वस्तुओं के बढ़े दामों को नियंत्रित करने के लिए भी इस कोष का इस्तेमाल किया जा सकेगा। इसके अलावा खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग के लिए खाद्य भंडारण और वेयरहाउसिंग के लिए ऋणों की राशि दोगुनी करके 50,000 करोड़ रुपये सुनिश्चित की गई है। जो वैश्विक चुनौती के मुकाबले में सहायक होगी।

लेखक अर्थशास्त्री हैं।

तिरछी नज़र

मोहब्बत की दुकान में जलेबी की मिठास

सहीराम

एक था लड्डू और एक थी जलेबी। यह दोनों क्योंकि एक ही खानदान से हैं यानी मीठे के खानदान से हैं तो भाई-बहन भी मान सकते हैं। लेकिन साथी तो अक्सर रहे हैं। पाले का जमाना होता तो जीवन साथी भी कहा जा सकता था। लेकिन दोनों एक साथ कम ही दिखाई देते हैं। वरना तो जी, एक जमाने में हरियाणा की शादियों में दोनों साथ होते थे। यह वह जमाना जब शादी-ब्याहों में भी पंगत लगती थी। अब बुफे के जमाने में जलेबी तो होती है, लेकिन लड्डू नहीं होते। हां, अलबत्ता जब शादी-वादी निपट लेती हैं तो विदाई में दिए जाने वाले मिठाई के डिब्बे में लड्डू बहुतायत में होता है और वहां से जलेबी वैसे ही गायब होती है जैसे खाने के मैन्यू से लड्डू गायब होता है।

वैसे लड्डू की व्यापित ज्यादा है, वह हर जगह होता है। वह शगुन से लेकर प्रसाद तक हर कहीं होता है। वह आम आदमी का भी प्रिय है और देवताओं का भी। गणेशजी तो मोदक से ही खुश होते हैं और गोपाल को लड्डू गोपाल बनने में ज्यादा वक्त नहीं लगता। लड्डू तो भाई मन में भी फूट जाता है और कहावत यह है कि मन के लड्डू हैं तो फिर फीके क्यों? जलेबी इतनी सर्वव्यापी नहीं है। देवताओं के भोग में जलेबी का होना कभी सुना नहीं। लेकिन इधर वह नेताओं की खूब प्रिय हो गयी है। इतनी कि अगर यह राहुलजी की इतनी प्रिय हो गयी है तो मोदीजी भी उसे कम नहीं चाहते।

असल में इधर लड्डू भी और जलेबी भी, दोनों ही राजनीति में कूद पड़े हैं। वैसे ही जैसे इधर एक ही परिवार के दो लोग और कई बार तो उससे भी ज्यादा लोग एक साथ चुनाव मैदान में कूद पड़ते हैं और आपस में गुत्थमगुत्था हो जाते हैं। फर्क यही है कि जो लड्डू कभी शगुन में काम आता था और कभी देवताओं के प्रसाद में, जो लड्डू कभी खुशी बांटने के काम आता था, देवताओं के भोग में काम आता था, उसी लड्डू का इस्तेमाल इधर कटुता बांटने के लिए करने की कोशिश हुई। अफवाह फैलाई गयी कि भगवान वेंकटेश्वर के प्रसाद के लड्डू में इस्तेमाल होने वाले में घी में चर्बी मिली है। जबकि परीक्षण में ऐसा कुछ भी नहीं पाया गया था।

लेकिन इससे पहले कि नफरत जीतती, अदालत ने नकेल कस दी और खुशी का, प्रसाद का, भोग का लड्डू नफरत का ग्रास बनने से बच गया। जलेबी इस मामले में भाग्यशाली निकली। उस पर किसी की बुरी नजर नहीं पड़ी। इसलिए नहीं कि वह सीधी नहीं थी। सीधी होती तो शायद वही होता कि जिसने डाली, बस बुरी नजर डाली। फिर वह रस से भी भरी हुई थी। शायद इसलिए वह मोहब्बत की दुकान में सज गयी।

जलेबी भाग्यशाली रही कि उस पर किसी की बुरी नजर नहीं पड़ी। इसलिए कि वह सीधी नहीं थी। सीधी होती तो शायद वही होता कि जिसने डाली, बस बुरी नजर डाली। फिर वह रस से भी भरी हुई थी।

आपकी राय

राजनीतिक खिलाड़ी

दस अक्तूबर के दैनिक ट्रिब्यून में ज्ञेश कौशल का लेख 'घमत्कार को नमस्कार' हरियाणा चुनावों के बाद एग्जिट पोल के विपरीत परिणाम दिखला कर राजनेताओं तथा आम लोगों को दंग करने वाला था। कांग्रेस पर्टी को पूरा विश्वास था कि इस बार हरियाणा में उनकी ही सरकार बनेगी परंतु भाजपा ने माइक्रो मैनेजमेंट द्वारा चुपके-चुपके कांग्रेस सरकार की जातीय कार्ड की रणनीति को फेल कर दिया। भाजपा सरकार की 10 साल की एंटी इन्कम्बेंसी को कांग्रेस नहीं भुना सकी। किसानों, जवानों तथा महिला पहलवानों के यौन शोषण का मुद्दा किसी काम नहीं आया। टिकटों के बंटवारे में भूपेंद्र सिंह हुड्डा को खुली छूट देना तथा मुख्यमंत्री पद की दावेदारी का विवाद कांग्रेस को ले डूबा। राहुल गांधी तथा प्रियंका गांधी के प्रचार का कोई फायदा नहीं हुआ। कांग्रेस के मुकाबले भाजपा वाले चतुर राजनीतिक खिलाड़ी निकले।

शामलाल कौशल, रोहतक

इस जीत के मायने

नौ अक्तूबर के दैनिक ट्रिब्यून का संपादकीय 'भाजपा की हैट्रिक' हरियाणा में संपन्न हुए विधानसभा चुनाव में सत्तारूढ़ भाजपा द्वारा तीसरी बार बेहतर प्रदर्शन करते हुए सत्ता पर कब्जा करने का विश्लेषण करने वाला था। बेशक लगभग सभी एग्जिट पोल भाजपा के मुकाबले कांग्रेस को बहुमत दिखा रहे थे, लेकिन भाजपा 48 सदस्यों के बलबूते सरकार बनाने को तैयार है। कांग्रेस 37 पर ही सिमट गई। ओबीसी तथा जाट वोट भाजपा तथा कांग्रेस में बंट गए। टिकटों के बंटवारे ठीक से न होने तथा मुख्यमंत्री के पद को लेकर सैलजा, सुरजेवाला तथा हुड्डा की सार्वजनिक दावेदारी भी कांग्रेस के लिये नुकसानदायक रही।

अनिल कौशिक, क्वोड़क, कैथल

मुइज्जू का यूटर्न

मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू भारत के दौरे पर आये। उन्होंने सत्ता हासिल करने के लिए भारत का जिन मुद्दों पर विरोध किया था, अब उन पर सम्झौते के लिए तैयार हैं। उन्होंने सम्झा लिया है कि भारत से अच्छा कोई पड़ोसी देश नहीं है। मालदीव के राष्ट्रपति की आंखें अब खुल रही हैं, भारत का महत्व समझ में आ रहा है।

हेमा हरि उपाध्याय, खाचरोद, म.प्र.

संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशनार्थ लेख इस ईमेल पर भेजें :-
dtmagzine@tribunemail.com

सम्पादकीय

जवान की अगवा कर हत्या आतंकियों की कायराना हरकत दिखा रही उनकी हताशा

जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग में आतंकवादियों ने एक बार फिर जैसी हरकत की है, उससे यही पता चलता है कि उनका मकसद देश में लोकतंत्र को बाधित करना है और इसमें नाकामी की वजह से उनके भीतर हताशा गहरा रही है। नतीजतन, वे और ज्यादा बेलगाम हो रहे हैं और सुरक्षा बलों पर हमले कर रहे हैं। गौरतलब है कि आतंकियों ने मंगलवार को अनंतनाग इलाके में 'टेरिटोरियल आर्मी' के दो जवानों का अपहरण कर लिया था। बाद में एक जवान किसी तरह आतंकवादियों के चंगुल से निकल भागा और एक का शव जंगल में मिला। निश्चित रूप से यह राज्य में आतंकी तत्वों के खिलाफ अभियान छेड़ने वाले सुरक्षा बलों सहित देश के लिए दुख की बात है। मगर इससे यही पता चलता है कि अपनी मंशा में नाकामी के नतीजे में आतंकवादियों ने सोच-समझ और लक्ष्य कर राज्य में सहायक सैन्य संगठन की भूमिका निभाने वाले 'टेरिटोरियल आर्मी' के जवानों को अगवा किया और उनमें से एक हत्या कर दी। दरअसल, पिछले कुछ समय से सुरक्षा बलों ने आतंकवादी समूहों के खिलाफ बेहद सख्त रुख अख्तियार किया हुआ है। हाल में चलाए गए अभियानों और मुठभेड़ों में कई आतंकियों को मार गिराने में सुरक्षा बलों को कामयाबी मिली। हालांकि इस बीच आतंकी हमलों में कई जवान भी शहीद हो गए। इसके बावजूद जम्मू-कश्मीर में लोकतंत्र को बहाल करने का काम नहीं रुका और कुछ दिन पहले राज्य की विधानसभा के लिए हुए चुनावों के नतीजे भी सामने आ गए। इसके बाद अब वहां बाकायदा लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत चुनी गई एक सरकार काम करेगी। जाहिर है, आतंकी हमलों के जरिए जिस तरह की उथल-पुथल पैदा करने और राज्य को अशांत बनाए रखने की कोशिश की जा रही थी, उसमें आतंकवादी समूहों को बड़ी नाकामी हाथ लगी है। यह बेवजह नहीं है कि राज्य में एक और चुनाव के परिणाम घोषित होने की प्रक्रिया जारी थी, दूसरी ओर उन्होंने दो जवानों को अगवा और उनमें से एक की हत्या करके यह संदेश देने की कोशिश की कि राज्य में आतंकवाद हावी है। मगर सच यह है कि उनकी यह हरकत उनकी हताशा को दर्शाता है।

यह ध्यान रखने की जरूरत है कि हाल ही में जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के गुगलधार में नियंत्रण रेखा पर सेना और पुलिस के जवानों ने घुसपैठ की कोशिश करते दो आतंकियों को मार गिराया था। उनके पास से भारी तादाद में हथियार और गोला-बारूद बरामद किया था। इसके अलावा भी सुरक्षा बलों के कई अभियानों में आतंकी मारे गए या उनके सहयोगी गिरफ्तार किए गए। साथ ही, स्थानीय आबादी के बीच उनके सहयोग या संरक्षण का पक्ष भी कमजोर हुआ है और अब लोग उनकी हकीकत को समझने लगे हैं। अब जवानों से लेकर स्थानीय लोगों सहित प्रवासी मजदूरों पर लक्षित हमले करके वे अपनी उपस्थिति जताने की कोशिश कर रहे हैं। मगर यह भी सच है कि सुरक्षाबलों की तमाम चौकसी और आतंकियों पर नकेल कसने के लिए चलाए जाने वाले अभियानों के बावजूद आज भी आतंकवादी संगठनों का पूरी तरह सफाया किया जाना संभव नहीं हो सका है।

दशहरा पर्व : दशहरा शक्ति की साधना, कर्म एवं नवसृजन का पर्व

दशहरा भारत का 'राष्ट्रीय त्योहार' है। रामलीला में जगह-जगह रावण वध का प्रदर्शन होता है। क्षत्रियों के यहाँ शस्त्र की पूजा होती है। ब्रज के मन्दिरों में इस दिन विशेष दर्शन होते हैं। इस दिन नीलकंठ का दर्शन बहुत शुभ माना जाता है। यह त्योहार क्षत्रियों का माना जाता है। इसमें अपराजिता देवी की पूजा होती है। यह पूजन भी सर्वसुख देने वाला है। दशहरा या विजयादशमी नवरात्रि के बाद दसवें दिन मनाया जाता है। भगवान श्रीराम शक्ति की देवी मां दुर्गा के भक्त थे, उन्होंने युद्ध के दौरान पहले नौ दिनों तक मां दुर्गा की पूजा की, इसके बाद भाई लक्ष्मण, भक्त हनुमान, और बंदरों की सेना के साथ एक बड़ा युद्ध लड़कर दसवें दिन दुष्ट रावण का वध किया। सीता को छुड़ाया। इसलिए विजयादशमी बुराई पर अच्छाई, असत्य पर सत्य और अंधकार पर प्रकाश का एक बहुत ही प्रेरणा का पर्व है। इस दिन रावण, उसके भाई कुम्भकर्ण और पुत्र मेघनाद के पुतले खुली जगह में जलाए जाते हैं।

ललित गर्ग

भारतीय त्यौहार एवं मेले जहां संस्कृति के अभिन्न अंग हैं वहीं प्रेरणाओं से भी जुड़े हैं। एक ऐसा ही अनूठा पर्व है दशहरा। भारत के लगभग सभी भागों में दशहरे का पर्व एक महान् उत्सव के रूप में मनाया जाता है, जिसे विजयदशमी भी कहा जाता है। यह पर्व बुराइयों से संघर्ष का प्रतीक पर्व है, यह पर्व देश की सांस्कृतिक चेतना एवं राष्ट्रीयता को नवऊर्जा देने का भी पर्व है। आज भी अंधेरों से संघर्ष करने के लिये इस प्रेरक एवं प्रेरणादायी पर्व की संस्कृति को जीवंत बनाने की जरूरत है। बहुत कठिन है यह बुराइयों से संघर्ष करने का सफर। बहुत कठिन है तेजस्विता की यह साधना। बहुत जटिल है स्व-अस्तित्व एवं स्व-पहचान को ऊंच शिखर देना। आखिर कैसे संघर्ष करें घर में छिपी बुराइयों से, जब हर घर आंगण में रावण-ही-रावण पैदा हो रहे हो, चाहे भ्रष्टाचार के रूप में हो, चाहे राजनीतिक अपराधीकरण के रूप में, चाहे साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाने वालों के रूप में हो, चाहे राष्ट्र को तोड़ने वाले आतंकवाद के रूप में हो, चाहे शिक्षा, चिकित्सा एवं न्याय को व्यापार बनाने वालों के रूप में। यह उत्सव प्रतिवर्ष मनाते हुए जहां शक्ति की कामना की जाती है, वहीं राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों की ओर ध्यान खींचा जाता है। इससे नई प्रेरणा, नई ताजगी, नई शक्ति एवं नई दिशाएं मिलती है। दशहरा पर्व कृषि उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। भारत कृषि प्रधान देश है। जब किसान अपने खेत में सुनहरी फसल उगाकर अनाज रूपी संपत्ति घर लाता है तो उसके उल्लास और उमंग का पारावार नहीं रहता। महाराष्ट्र में इस अवसर पर सिलंगण के नाम से सामाजिक महोत्सव के रूप में भी इसको मनाया जाता है। भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में भी राजाओं के युद्ध प्रयाण के लिए यही ऋतु निश्चित एवं सर्वाधिक अनुकूल थी। शमी पूजा भी प्राचीन है। वैदिक यज्ञों के लिए शमी वृक्ष में उगे अश्वत्थ (पीपल) की दो टहनियाँ (अरणियाँ) से अग्नि उत्पन्न की जाती थी। अग्नि शक्ति एवं साहस की द्योतक है, शमी की लकड़ी के कुंदे अग्नि उत्पत्ति में सहायक होते हैं। जहाँ अग्नि एवं शमी की पवित्रता एवं उपयोगिता की ओर मंत्रसिक्त संकेत हैं। इस उत्सव का सम्बंध नवरात्र से भी है क्योंकि इसमें महिषासुर के विरोध में देवी के साहसपूर्ण कृत्यों का भी उल्लेख होता है और नवरात्र के उपरांत ही यह उत्सव होता है। दशहरा शक्ति की साधना, कर्म एवं पूजा का भी पर्व है। इसी दिन लोग नया कार्य प्रारम्भ करते हैं, शस्त्र-पूजा की जाती है। प्राचीन काल में राजा लोग इस दिन विजय की प्रार्थना कर रण-यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। भगवान श्रीराम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों- काम, क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सद्प्रेरणा प्रदान करता है। आज दशहरा का पर्व मनाते हुए सबसे बड़ी जरूरत भीतर के रावण को जलाने की है। क्योंकि ईमानदार प्रयत्नों का सफर कैसे बढ़े आगे जब शुरूआत में ही लगने लगे कि जो काम मैं अब तक नहीं कर सका, भला दूसरों को भी हम कैसे करने दें? कितना बौना चिन्तन है आदमी के मन का कि मैं तो बुरा हूं ही पर दूसरा भी कोई अच्छा न बने। इस बौने चिन्तन के रावण को जलाना जरूरी है। दशहरे का सांस्कृतिक पहलू भी है। यह देश की सांस्कृतिक एकता और अखण्डता को जोड़ने का पर्व भी है। इस वर्ष का विजयादशमी पर्व इसलिये विशेष है, क्योंकि इस पर्व की सकारात्मक क्रांतिकारी ऊर्जा से न केवल राष्ट्र में सक्रिय नकारात्मक एवं अराष्ट्रीय ताकतों को सख्त संदेश दिया जाना है बल्कि पड़ौसी पाकिस्तान-चीन आदि देशों की कुचेष्टाओं के लिये ललकारा एवं सावधान भी किया जाना है। आजादी के अमृत काल में राष्ट्र को शताब्दी वर्ष के लिये सशक्त किया जाना है। मूलभूत आस्थाओं एवं राष्ट्रीयता के दृढ़ीकरण के साथ देश में जो नई चेतना आई है, वह एक शक्तिशाली नेतृत्व का जीवंत साक्ष्य है। राष्ट्रीयता, स्व-पहचान, स्वदेशी-भावना, हिन्दू-संस्कृति के ऊर्जा के अक्षय स्रोतों की खोज में जो प्रयत्न किया जा रहा है, वह अभूतपूर्व है। जन-आकांक्षा के अनुरूप राष्ट्र को जिस युगीन परिवेश में प्रस्तुति दी जा रही है, वह असाधारण है। दशहरा शक्ति की साधना, कर्म, नवसृजन एवं पूजा का भी पर्व है। पिछले आठ दशकों में लगातार हिन्दू-संस्कृति को कमजोर करने की राजनीतिक चालें होती रही है। दरअसल हिन्दू धर्म नहीं, विचार है, संस्कृति है। हिन्दू राष्ट्र होने का अर्थ धर्म से न होकर हिन्दू संस्कृति के सर्वग्राही भाव से है। हिन्दू संस्कृति उदारता का अनन्तिहित शंखनाद है क्योंकि पूरे विश्व में यह अकेली संस्कृति है जो बहुविचारवाद यानी सभी धर्म, विचार एवं संस्कृतियों को स्वयं में समेटे हैं। चार्वाक जैसे भौतिकवादी विचारक को भी इस देश ने ऋषि की उपाधि दी गई जिसने कहा था कि 'ऋणं कृत्व घृतं पीवेत' अर्थात जो भी है वह आज है, कल किसने देखा है इसलिए आज को भरपूर ढंग से जीना चाहिए और कर्जा लेकर भी अगर यह करना पड़े तो करना चाहिए। इसके साथ ही हमारे ऋषियों ने हमें यह उपदेश भी दिया कि 'सत्यं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यं अप्रियं' अर्थात सच बोलो मगर कड़वा सच मत बोलो। हिन्दू संस्कृति की यही महानता और विशेषता रही है कि प्रिय सत्य की वकालत तो करती है मगर इसके कटु होने पर निषेध करने को भी कहती है। यह हिन्दू संस्कृति अहिंसा की संस्कृति है पर जरूरत पड़ने पर शस्त्र उठाकर स्व-रक्षा की बात भी कहती है। हिन्दू शब्द से ही स्वराष्ट्र का बोध होता है जो कि हिन्दू संस्कृति के वृहद स्वरूप का ही सौपान है। इसी विचारधारा को बल देने का सशक्त माध्यम है विजयादशमी पर्व। मराठा रत्न शिवाजी ने भी औरंगजेब के विरुद्ध इसी दिन प्रस्थान करके हिन्दू धर्म का रक्षण किया था। भारतीय इतिहास में अनेक उदाहरण हैं जब हिन्दू राजा इस दिन विजय-प्रस्थान करते थे।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विधि लगाते पर पूरा करेंगे। यह आप एक लकड़ा खाने में फिर आपके जीवन के ऐसे दोस्तों और मित्र, जहां आपके विचारे कुछ लोगों और दुश्मनों तक, आपकी विरोध करने में लगातार लगता रहेगा। एक तरफ विरोधी समझे तरह से और अंदरुनी खुले को सुलझाने तथा लगातारता उजर्ग को समझ जायेंगे, संभव परस्पर्शीय तरीके ही सौ, जहां एक लगातारता नहीं लगाए और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष
आपकी कोई चिंता दूर हो सकती है। खेतीजन और मित्रों से मुलाकात सुखद रहेगी। हालांकि आप वाणी पर संयम रखें। शाम में किसी तरह के नकारात्मक विचार आपको परेशान कर सकते हैं। गुस्से पर संयम रखें।

वृष
आज का दिन आप के लिए एकदम शुभ है। देव-दर्शन का लाभ मिलेगें। नौकरीपेशा लोगों को अधिकारियों से प्रोत्साहन मिलेगा। पदोन्नति के योग हैं और कई दिनों से अधूरी मन की मुराद भी पूरी हो सकती है।

मिथुन
किसी भी नए काम की शुरुआत आज न करें। किसी बात को लेकर मन में ग्लानि का भाव रहेगा। परिजनों के साथ वाद-विवाद न करें। दोपहर के बाद आपकी शारीरिक और मानसिक स्थिति में सुधार की संभावना है।

कर्क
आज आपको विविध क्षेत्रों से लाभ होने होने की संभावना है। व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होगा। साथी कर्मचारियों का पूरा सहयोग मिलेगा। क्रोध में किसी के साथ विवाद की आशंका बनी रहेगी। स्वास्थ्य नरम-गरम रहेगा। आज का दिन दोस्तों के साथ मौज-मस्ती में गुजरने वाला है।

सिंह
पारिवारिक कठिनाइयां भी कम होंगी। किसी धार्मिक स्थल की यात्रा हो सकती है। ईश्वर का नाम स्मरण और आध्यात्मिकता आपके मन को शांति प्रदान करेंगे। मनोरंजक एक्टिविटी में आपका मन लगेगा।

कन्या
आर्थिक लाभ भी होगा। भाई-बंधुओं के साथ प्रेम बढ़ेगा। भाग्यवृद्धि के अवसर मिलेंगे। काम की सफलता से आपका उत्साह बढ़ेगा। आज का आपका दिन खुशी और आनंद के साथ गुजरेगा। आप कुछ अधिक ही संवेदनशील रहेंगे। भागीदारी से लाभ होगा।

तुला
परिजनों के साथ वाद-विवाद होने से मन चिंता से भरा रहेगा। छाती में दर्द या अन्य कोई शारीरिक परेशानी होने से शरीर शिथिल रहेगा। निरर्थक आर्थिक खर्च से बचें। किसी तरह की यात्रा का कार्यक्रम हो, तो आज टालना उचित रहेगा।

वृश्चिक
आज आपको हर काम में सफलता मिलेगी। विरोधियों पर आप विजय प्राप्त कर सकेंगे। सामाजिक दृष्टि से आपको मान-सम्मान मिलेगा। आपकी एनर्जी कम हो जाएगी। आलस्य का वातावरण छाया रहेगा। विवाद में मानहानि हो सकती है।

धनु
व्यापार में लाभ मिल सकता है। पिता से भी आर्थिक लाभ की संभावना दिख रही है। आज किसी प्रिय पात्र और मित्रों के साथ बाहर जाने का कार्यक्रम बनेगा। मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। व्यापार में भी आपको लाभ होगा।

मकर
प्रिय पात्र और मित्रों के साथ मुलाकात होगी। पर्यटन का आयोजन हो सकता है। शादी योग्य युवक-युवतियों का रिश्ता पक्का हो सकता है। आज का दिन आपके लिए शुभ है। नौकरीपेशा लोगों का टारगेट पूरा हो सकेगा।

कुंभ
आज सुबह आपका मन क्रोधित रहेगा। शारीरिक रूप से अस्वस्थ और मानसिक रूप से चिंता का अनुभव होगा। विद्यार्थियों को अपेक्षित परिणाम नहीं मिलेंगे। दोपहर के बाद किसी प्रिय मित्र से मुलाकात हो सकती है।

मीन
आज वाणी में संयम रखें। खेतीजनों के साथ किसी बात पर विवाद हो सकता है। आप की अपेक्षा स्वयं अधिक रहेगा। किसी कल्याणकर में दिन गुजरेगा। आप नए काम की शुरुआत कर सकेंगे। खेतीजनों के साथ मुलाकात होगी। सुखद यात्रा का संयोग बनेगा।

शख्सियत

बढ़ता राजस्थान

मुकेश मित्तल
(डायरेक्टर-एमजी मोटर्स व ईशान हौंडा)

नमस्कार साथियों आज शख्सियत कॉलम में हम मिलने जा रहे हैं एक ऐसे शख्स को जिसके जन्मे ने एक नया मुकाम हासिल किया। ना केवल उद्योग जगत को एक अच्छा संदेश दिया बल्कि आमजन के लिए भी एक मिसाल बने। जी हां,आज की शख्सियत के स्टार हैं प्रमुख उद्योगपति और समाजसेवी मुकेश मित्तल। मुकेश मित्तल का जन्म 24 अप्रैल सन 1970 को अलवर में हुआ इन्होंने सन 1990 में ग्रेजुएशन करने के बाद आरबीआई से अकव्वल पहचॉस कंपनी खोली और इसे व्यापार के रूप में शुरू किया।

इसके साथ ही सन 1990 में नॉर्थ ईस्ट में गवर्नमेंट की आर्मी कैंटीन का व्यापार भी शुरू किया। सन 1994 श्रीमती स्वाति मित्तल के साथ प्रण्य सूत्र बंधन में बंधे जो कि वर्तमान में स्वाति मित्तल खुद एक सोशल वर्कर भी हैं। सन 2000 में मुकेश मित्तल द्वारा मारुति सुजुकी ऑथराइज्ड डीलरशिप ओपन की उसके बाद मुकेश मित्तल ने 2003 में हौंडा स्कूटर एंड मोटरसाइकिल इंडिया लिमिटेड की डीलरशिप लेकर अलवर के लोगों को सुविधा उपलब्ध कराई। सन 2017 से 2023 तक जयकृष्ण क्लब के एग्जीक्यूटिव मेंबर के रूप में सामाजिक कार्य करते हुए अपना योगदान दिया तथा साथ ही रोटरी क्लब में मेंबर के रूप में विभिन्न सामाजिक सेवाओं में बढ़-चढ़कर योगदान दिया और सामाजिक कार्य किया। मुकेश मित्तल को खेल के प्रति काफी रुचि है टेनिस उनका पसंदीदा खेल है जिसने प्रतियोगिता में समय-समय पर भाग लेते हैं। सन 2017 में 16 सितंबर का वह वाकया जो न सिर्फ मुकेश मित्तल के ऊपर क्रूर काल बनकर टूटा बल्कि पूरे अलवर के लिए एक दहशत का माहौल पैदा किया। जी हां 16 सितंबर को मुकेश मित्तल का उनके घर से अपहरण कर लिया गया लेकिन तत्कालीन जिला पुलिस अधीक्षक राजेंद्र सिंह चौधरी और तत्कालीन शहर विधायक बनवारी लाल सिंघल के अथक प्रयास और लोगों की दुआओं से वह शहर में सकुशल वापस लौटे । ऐसे में उन्होंने एक संदेश दिया कि समय कितना भी विपरीत चल रहा हो हम अपने आत्म बल और आत्मविश्वास के भरोसे सारी मुसीबत को टाल सकते हैं। 16 सितंबर का वह काला दिन लोगों के ज़हन में आज भी घूम रहा है,लेकिन लोगों की दुआएं मुकेश मित्तल के प्रति उनका प्यार रंग लाया और वह सकुशल वापस लौटे बहुत बेहतरीन व्यक्तित्व के धनी हैं मुकेश मित्तल इतने बड़े उद्योगपति होने के बाद भी बड़े सरल, सहज और हंसमुख स्वभाव के होने के कारण हर आदमी उनसे मिलने के बाद उनका फैन बन जाता है। दैनिक बढ़ता राजस्थान टीम ऐसे ओजस्वी उद्योगपति के उज्वल भविष्य की कामना करती है।

रूपक शर्मा

आज का इतिहास

12 अक्टूबर की महत्वपूर्ण घटनाएँ

- अमेरिका की खोज करने वाले क्रिस्टोफर कोलम्बस को मेरीलैंड के बाल्टीमोर में पहला स्मारक समर्पित 1792 को किया गया।
- ब्रिटेन और फ्रांस की सेना ने चीन की राजधानी बीजिंग पर 1860 में कब्जा जमाया।
- ब्रिटिश सरकार ने 1871 में क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट लागू किया गया जिसके तहत 160 स्थानीय समुदायों को अपराधी जाति घोषित कर दिया गया।
- अमरीकी राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट ने 1901 में राष्ट्रपति भवन का नाम एक्जीक्यूटिव मेनसन से बदल कर व्हाइट हाउस कर दिया था।
- पहली बार अमेरिका के बोस्टन में चिल्डृन हॉस्पिटल में एक बच्ची के लिए 'आयरन लंग' नाम की मशीन का इस्तेमाल 1928 को किया गया।
- अमेरिकी न्याय विभाग ने 1933 में अमेरिकी सेना से अलकार्ट्ज द्वीप का अधिग्रहण किया।
- विश्व में पहली बार सोवियत संघ ने 1964 में आज ही के दिन बिना स्पेस सूट पहनाए अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजा था।
- मध्य अफ्रीका में स्थित देश इक्वाटोरियल गिनी को 1968 में स्पेन से स्वतंत्रता मिली और यह दिन इस देश का राष्ट्रीय दिवस घोषित किया गया।
- 12 अक्टूबर-जनवरी 87 से आगामी 5 वर्षों के लिए जेवियर परेज द कुइयार सं.रा. संघ के महासचिव 1986 में निर्वाचित।
- अमेरिकी संसद ने यहां के ध्वज को नष्ट करने पर प्रतिबंध संबंधी विधेयक को मंजूरी 1989 को दी।
- मिस्र की राजधानी काहिरा में 1992 को भूकंप से करीब 510 लोगों की मौत।
- अल्जीरिया के सिदी दाउद में 1997 को 43 लोगों का नरसंहार।
- अमेरिकी संसद ने 1998 में ऑनलाइन कॉपीराइट विधेयक को पारित किया।
- पाकिस्तान में 1999 को सेना द्वारा तख्ता पलट के बाद जनरल परवेज मुशर्रफ सत्ता पर काबिज़, संयुक्त राष्ट्र की गणना के अनुसार छः अरबवाँ शिशु का सरायेवों में जन्म, अंतरिक्ष अन्वेषण यान गैलिलियो बृहस्पति ग्रह के ज्वालामुखीय चन्द्रमा आई.ओ.के. नजदीक पहुँचा।
- अंतरिक्ष यान 'डिस्कवरी' फ्लोरिडा से अंतरिक्ष में 2000 को प्रक्षेपित।
- संयुक्त राष्ट्र और उसके महासचिव कोफी अन्नान को संयुक्त रूप से नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा 2001 में की गई।
- यूरोपीय पर्यवेक्षकों ने 2002 को पाकिस्तान में सम्पन्न चुनावों में धांधली का आरोप लगाया।
- बाली के एक नाइटक्लब में 2002 को आतंकवादी हमले में 202 लोगों की मौत।
- पाकिस्तान ने गौरी-1 मिसाइल का परीक्षण 2004 में किया।

विशेष आलेख

दिल्ली सरकार के नाक के नीचे राजधानी बन गया कार्टल वाले ड्रग्स का हब!

अशोक भाटिया

दिल्ली पुलिस की स्पेशल 14 2 अक्टूबर को साउथ दिल्ली में रेड डालकर 500 किलोग्राम से अधिक कोकीन बरामद की थी, जिसकी कीमत करीब 5600 करोड़ रुपये बताई जा रही है। इसे राष्ट्रीय राजधानी में अब तक की सबसे बड़ी नशीली दवाओं का भंडाफोड़ कहा जा रहा है। इस मामले में स्पेशल सेल ने 5 अरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस स्पेशल सेल के अधिकारियों के अनुसार इससे पहले दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के महिपालपुर से 5,000 करोड़ रुपये मूल्य के 562 किलोग्राम मादक पदार्थ बरामद किए गए थे। बताया जा रहा है कि इस ड्रग्स का संबंध उसी सिंडिकेट से है। पुलिस ने बताया कि इस अंतरराष्ट्रीय सिंडिकेट का मास्टरमाइंड वीरेंद्र बसोया ने लंदन से 2 लोग भेजे थे। पहला डिमी नाम का शख्स था, जो 5600 करोड़ की ड्रग्स ठिकाने लगाने आया था। उसने तुषार से 17 सितम्बर को हिलीवरी ली थी। तुषार लंदन फरार है। वहीं, एक दूसरा शख्स भी था जो आज पकड़ी गई 2000 करोड़ की कोकीन को ठिकाने लगाने आया था। वह लंदन फरार हो गया है। अब तक कुल 7 आरोपी गिरफ्तार किए जा चुके है पुलिस के अनुसार दूसरे शख्स ने 16 सितम्बर को तुषार और सैफी नाम के शख्स ड्रग्स की हिलीवरी ली थी। इस शख्स ने तिलक नगर से एक दूकान किराए पर ली थी। पुलिस ने उसके गाड़ी का जीपीएस लेग चेक किया गया। इसी के जरिए पुलिस रमेश नगर के गोदाम तक पहुंची। यहां से 200 किलो कोकीन मिली। ये शख्स वहां से आगे गया एक होटल में रुका। लेकिन, वह कल ही लंदन फरार हो गया। सैफी को दिल्ली पुलिस ने पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस के अनुसार, कोकीन की इस बड़ी खेप के पीछे एक अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स तस्करी गिरोह का हाथ है। पुलिस को जितेन्द्र पाल सिंह के भागने की कोशिश के बारे में पता चला था। वह पिछले 17 सालों से ब्रिटेन में 'स्थायी निवासी' के तौर पर रह रहा है। उसके खिलफ पहले ही एलओसी या लुकआउट सर्कुलर जारी किया था।

अधिकारियों का मानना है कि यह विशेष ड्रग गिरोह भारत में दिल्ली और मुंबई से संचालित होता है और इसका दुबई से भी संबंध है। दिल्ली पुलिस द्वारा सदियों से पूछताछ के दौरान एक भारतीय नागरिक वीरेंद्र बसोया का नाम सामने आया है। अब पश्चिम एशियाई देश में रहता है। स्यमलिन करके दिल्ली लाए गए ड्रग्स का इस्तेमाल हाई-प्रोफाइल पार्टियों में किया जाता है। राष्ट्रीय राजधानी में हाल ही में मादक पदार्थ की बरामदगी पिछले रविवार को दिल्ली के तिलक नगर इलाके में दो अफगान नागरिकों की गिरफ्तारी के बाद हुई थी। जिनके पास से 400 ग्राम हेरोइन और 160 ग्राम कोकीन बरामद की गई थी। वह संघीय गणराज्य लाइबेरिया का नागरिक था, जो दुबई से दिल्ली आया था। उसे एनडीपीएस अधिनियम 1985 के तहत गिरफ्तार किया गया था दिल्ली पुलिस के मुताबिक, अब तक की जांच में पता लगा है कि अलग-अलग देशों से होते हुए यह कोकीन हिंदुस्तान पहुंची। फिर यह अलग-अलग प्रदेशों से होती हुई दिल्ली के महिपालपुर के गोदाम तक पहुंची। और फिर यहां से आगे एक सप्लाई चेन बनाई गई थी। उसी सप्लाई चेन का एक हिस्सा था मुंबई के कुर्ला का रहने वाला भारत, जो ढेढ़ सौ करोड़ की 15 किलो कोकीन खरीदने दिल्ली आया था। सोचने वाली बात यह है कि यदि यह ड्रग देश के आम लोगों तक , खासकर युवा तक पहुचती तो ड्रग्स का उपयोग करने वालों का हाल क्या होता ?अफीम और खासकर हेरोइन की लत बहुत जल्दी लगती है। एक बार जिसे यह लत लग जाती है, उसके लिए उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाता है। ज्यादातर मामलों में हेरोइन के लती हमेशा के लिए बर्बाद हो जाते है। इसी कारण इसे युवा पीढ़ी को तबाह करने वाले नशे के तौर पर जाना जाता है। मुश्किल यह है कि नशीले पदार्थो का कारोबार बढ़ता चला जा रहा है। गरीब देश हों या फिर विकासशील अथवा विकसित देश, कोई भी नशीले पदार्थो की तस्करी से अछूता नहीं है। भारत किस तरह नशीले पदार्थों के तस्करी के निशाने पर है बावजूद इसके ऐसा लगता है कि किसी को इस बात की चिंता नहीं कि ड्रग्स हमारी युवा पीढ़ी को खोखला करता जा रहा है, जिसके भयंकर परिणाम समाज को भुगतने ही होंगे। जितनी बड़ी मात्रा में ड्रग्स पकड़े गए हैं, उससे साफ है कि देश के बेटे-बेटियों को नशे की लत का आदी बनाया जा रहा है। ड्रग्स केस में हाईप्रोफाइल लोगों के नाम आते रहे हैं। ड्रग्स लेना आम आदमी के बस की बात नहीं, जिनके पास अकूत धन है उन्होंने अपनी अय्याशी के लिए रेव पार्टियों को ईजाद कर लिया है। इस गम्भीर मसले पर समाज का मानसिक दिवालियापन नजर आ रहा है। देश में ड्रग्स की समस्या बहुत गम्भीर हो चुकी है। भारत में हर साल दो से चार टन चरस और कम से कम 300 टन गांजा बरामद किया जाता है। इसके अलावा कोकीन, हेरोइन भी भारी मात्रा में पकड़ी जाती है। सामाजिक न्याय मंत्रालय की 2019 की रिपोर्ट के मुताबिक देश में नशे के लिए शराब के बाद सबसे ज्यादा सेवन भांग, गंजा, चरस और अफीम का किया जाता है। हर वर्ष भारत में ड्रग्स के व्यापार का आकार काफी बढ़ चुका है। ड्रग्स एक सामाजिक समस्या ही नहीं बल्कि विकिसकीय एवं मनोवैज्ञानिक समस्या है। इससे परिवार टूटते हैं और समाज संक्रमित होता है। यह एसा दलदल है जिससे परिवार, समाज और राष्ट्र जर्जर होता है। हमारी चिंता यह होनी चाहिए कि ड्रग्स फ्री इंडिया कैसे बने। इस समस्या से सिर्फ कानून बनाकर नहीं निपटा जा सकता है बल्कि इस पर नियंत्रण के लिए पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर प्रयासों की जरूरत है। कोई सेलिब्रिटी हो या आम आदमी, अभिभावकों को अपने बच्चों को भटकाव और भ्रम से बचाने के लिए उन्हें धंधेवादी बनाने की जिम्मेदारी निभानी होगी। बच्चों को केवल पैसा नहीं बल्कि भावनात्मक संरक्षण भी प्रदान करना होगा। यह तीक्ष्ण है कि पिछले वर्षों मुम्बई पोत ड्रग्स केस हो जाने के बाद भारतीय सुरक्षा एजेंसियां चेत गई हैं, लेकिन यह मानना सही नहीं होगा कि इससे नशीले पदार्थों की तस्करी थम जाएगी। हो सकता है कि नशे की खेप भारत भेजने वाला गिरोह सावधान हो गया हो, लेकिन ऐसे कई गिरोह और होंगे। यह भी तय है कि उन्हें तालिबान नेताओं के साथ पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियों का भी समर्थन हासिल होगा। वैसे तो पूरे विश्व में नशे के कारोबार को तोड़ने के लिए नारकोटिक्स एजेंसियां हैं, लेकिन उनके तमाम प्रयासों के बावजूद नशीले पदार्थों का कारोबार थमने का नाम नहीं ले रहा है। हर देश के नेता इस बात को मानते आए हैं कि इस काले कारोबार की कमर तोड़ी जानी चाहिए, लेकिन उनके प्रयासों के बाद भी ऐसा नहीं हो पा रहा है। पिछले दिनों न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक हुई।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,इण्डस्ट्रियल सेंट खरडवा,जिलाई रोक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतिष्ठा" सेक्टर-18, प्रताप नगर संगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पाठक* | प्रधान संपादक-राम विलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 रोक कार्यालय-बाईपास जिलाई, रोक फोन नं.01432-244881 जिलाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 | ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • शनिवार • 12 अक्टूबर • 2024
www.rashtriyasahara.com

उमर सर्वसम्मत नेता

जम्मू-कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस के नवनिर्वाचित विधायकों ने सर्वसम्मति से पार्टी के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला को अपना नेता चुन लिया है। नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस-माकपा के पास 49 सीटें हैं। विधानसभा चुनाव में जीत कर आए निर्दलीय विधायकों में से चार ने नेशनल कॉन्फ्रेंस को समर्थन देने की घोषणा की है। इस तरह उमर अब्दुल्ला के साथ 53 विधायकों का समर्थन है। हालांकि अभी उमर को कांग्रेस के समर्थन पत्र का इंतजार है। अगर किसी कारण उन्हें कांग्रेस का समर्थन नहीं मिलता है तो भी नेशनल कॉन्फ्रेंस की सीटों की संख्या बहुमत के जादुई आंकड़े यानी 46 तक पहुंच गई है। पिछले चुनावों की तरह इस चुनाव में भी कश्मीर की जनता ने जिस उत्साह के साथ भागीदारी की, इससे यही प्रकट होता है कि देश के शेष हिस्सों की तरह यहां के लोग भी

लोकतांत्रिक शासन पद्धति में ही अपना भविष्य सुरक्षित देखते हैं। अब यह सुनिश्चित हो गया है कि उमर अब्दुल्ला राज्य के मुख्यमंत्री होने जा रहे हैं और आने वाले दिनों में उन्हें मतदाताओं से किए गए अपने वादों को पूरा करना है। अगर युवा मतदाताओं से रोजगार से संबंधित वादे पूरे नहीं हुए तो लोकतांत्रिक राजनीति के लिए निराशा पैदा होगी। उमर अब्दुल्ला इस तथ्य से परिचित हैं कि नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन को कामजोर बहुमत मिला है, इसलिए वे केंद्र सरकार से समन्वय बना कर चलने की कोशिश करेंगे। जाहिर है कि इन हालात में उनकी सरकार कश्मीर के विशेष संवैधानिक प्रावधानों को बहाल करने का मुद्दा नहीं उठाएगी। चुनावों में उन्होंने अनुच्छेद 370 यानी राज्य के विशेष संवैधानिक प्रावधानों को बहाल करने का मुद्दा जोर-शोर से उठाया था। आने वाले दिनों में मतदाताओं से किया गया उनका यह वादा उनके लिए कठिनाई पैदा कर सकता है। उनकी सहयोगी पार्टी कांग्रेस इस मुद्दे पर शुरू से ही खामोश है। यह जरूर है कि जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने के मामले में उमर अब्दुल्ला को कांग्रेस का समर्थन मिलेगा। राज्य की जनता ने पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने का स्पष्ट जनादेश दिया है। भाजपा सहित सभी राजनीतिक दल इसके पक्ष में हैं। केंद्र सरकार को राज्य की जनता के जनादेश का सम्मान करना चाहिए। उम्मीद की जानी चाहिए कि जम्मू-कश्मीर की जनता को एक साथ दो तोहफे मिलेंगे-नई लोकप्रिय सरकार और पूर्ण राज्य। वास्तव में राज्य का दर्जा और लोकप्रिय सरकार कश्मीर में लोकतंत्र को फिर से सक्रिय करने में मदद करेंगे।

नशेबाजी का भंडाफोड़

दिल्ली पुलिस द्वारा पश्चिमी दिल्ली से दो हजार करोड़ मूल्य रुपये की दो सौ किलो कोकीन जब्त की गई है। अभी हमने भर पहले ही दक्षिण पश्चिमी दिल्ली के महिपालपुर से पांच हजार करोड़ रुपये का 562 किलोग्राम मादक पदार्थ पकड़ा गया था, जिसमें चालीस किलो गांजा थाईलैंड का बताया जा रहा है। यह गांजा हाइड्रोपोनिक तरीके से उपजाया जाता है, जिसकी दुनिया भर में बड़ी मांग है। हाइड्रोपोनिक खेती पद्धति में बिना मिट्टी के कुछ पोषक तत्वों के द्वारा ये पौधे उगाए जाते हैं। हाल के वर्षों में जब्त की गई कोकीन की यह सबसे बड़ी खेप बताई जा रही है। स्पेशल सेल ने चार बड़े ड्रग्स तस्करों को गिरफ्तार

कर अंतरराष्ट्रीय सिंडीकेट का भंडाफोड़ किया है, जिसके मिडिल ईस्ट से कंट्रोल होने की बात सामने आ रही है। पुलिस इसमें नार्को टेरर के एंगेल का भी संदेह व्यक्त कर रही है, जिसके कारण सुरक्षा एजेंसियों समेत सरकार की चिंताएं बढ़ गई हैं। एक ग्राम कोकीन तकरीबन दस हजार में मिलती है। पार्टियों, पबों और रईसों में यह बहुत प्रचलित है। हालांकि इसके ओवरडोज से हार्ट अटैक या स्ट्रोक के मामले सामने आते हैं। दक्षिण अमेरिकी देशों, म्यांमार, कंबोडिया, ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान में गैर-कानूनी तौर पर इनकी पैदावार होती है। कोकीन विभिन्न राज्यों और सीमावर्ती इलाकों से सड़क मार्गों द्वारा लाई जाती है, जबकि मारिजुआना की थाईलैंड से हवाई मार्ग से तस्करी की जाती है। मादक पदार्थों की तस्करी में शामिल संगठित अपराध गिरोहों पर शिकंजा कसना बेहद मुश्किल और जटिल है। नशे के सौदागरों ने सारी दुनिया को अपने निशाने पर रखा है। इस सिंडीकेट के तार यूके से भी जुड़े हैं। ड्रग्स का भुगतान अमूमन क्रिप्टो करेंसी के जरिए किया जा रहा है, जिसकी तफ्तीश करने में अतिरिक्त जटिलताएं आ सकती हैं। हालांकि सुरक्षा एजेंसियों और विशेष सेल ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए ऐसे गिरोह की जड़ों तक काफी हद तक पहुंच रही है जो इन पर लगाम लगाने के साथ ही दुनिया के तमाम देशों की सरकारों के लिए पथ प्रदर्शक साबित हो सकता है।

कटाक्ष/ कबीरदास

आयोग को गुस्सा क्यों आता है?

लीजिए, अब क्या चुनाव आयोग गुस्सा भी नहीं कर सकता। चुनाव में गड़बड़ी का रोना-धोना करने वालों पर अपना गुस्सा भी नहीं निकाल सकता और वह भी एकदम गांधीवादी तरीके से-चिट्ठी लिख कर। और चिट्ठी भी शिकायत करने वालों के बॉस को लिख कर! बताइए, हरियाणा में मतदान मशीनों की गड़बड़ी की शिकायत करने वालों को हड़काने के लिए, चुनाव आयोग ने कांग्रेस अध्यक्ष खरगे को जरा सी चिट्ठी क्या लिख दी, विरोधियों ने शोर मचा दिया कि चुनाव आयोग ये क्या कर रहा है? शिकायतजीवियों को धमका रहा है और क्या कर रहा है? डरेंगे, तभी तो प्रेम करेंगे, आयोग से भी और देश से भी।

तुलसीदास पहले ही कह गए हैं-भय बिनु प्रीति होइ नहीं देवा। चुनाव आयोग प्रीति होने की उम्मीद में, कम से कम वैरी की सेवा करने की गलती नहीं करने वाला है! और बेचारे चुनाव आयोग को गुस्सा आने पर ही इतना हंगामा क्यों है? अब गुस्सा सब को आता है, खून सब का खौलता है, एक पलिलक को छोड़ कर। मोदी जी का राज इस मामले में एक्स्ट्रा जनतांत्रिक है। गुस्सा खुद मोदी जी की नाक पर धरा रहता है। आये दिन कभी छाती तो कभी ताल ठोक कर, विपक्ष वालों को धमकाते रहते हैं। हफ्ते-दस दिन में अपनी तरफ आई गालियों का शिकायतनामा सुनाते रहते हैं। आलोचना-वालोचना करने वालों को उनके पुलिस वाले जेल पहुंचाते रहते हैं, सो अलग। मोदी जी को गुस्सा आता है, तो राज्य-राज्य के छोटे मोदियों को उनसे भी ज्यादा गुस्सा आता है। और गुस्सा कई बार अदालतों को भी आता है; ईडी-सीबीआई के मारे विपक्षी वार-बार जमानत मांगने चले आते हैं, तब। गुस्सा राज्यपालों को भी आता है, जब विपक्षी सरकारें न गिरती हैं, न बिकती हैं। गुस्सा एंकरों, भक्त फिल्म निर्माताओं, हाउसिंग सोसाइटी अंकलों, एनआरआई भारत-भक्तों, अडानियों-अंबानियों, सब को आता है। सनातनी साधु-संतों का गुस्सा तो खैर आने-जाने के चक्कर में ही नहीं पड़ता, सनातन जो ठहरा। अब प्लीज ये मत पूछना कि चुनाव आयोग को विपक्ष पर ही गुस्सा क्यों आता है। बेचारे को यही सोच कर तो गुस्सा आता है कि मोदी जी गुस्सा करेंगे कि उसे गुस्सा क्यों नहीं आया। गुस्सा आना जिंदा होने का लक्षण है। वर्ना कहीं मेला बांटने के टैम पर मोदी जी भूल न जाएं।

अभिशाप से मुक्ति कब

बिहार प्रति वर्ष बाढ़ से तबाही झेलने को मानो अभिशप्त है। त्योहारों की प्रतीक्षा की ही तरह प्रति वर्ष बिहार के लोग बाढ़ का भी डरते हुए इंतजार ही किया करते हैं कि मानसून आया और बस, अब बाढ़ भी आएगी ही। फिर तैयारी शुरू हो जाती है कि बाढ़ विकराल रूप धारण करेगी और लोग अपने घरों को छोड़ कर सुरक्षित ठिकानों की तरफ पलायन को मजबूर हो जाएंगे। हर साल बिहार बाढ़ की विभीषिका का दंश इस उम्मीद में झेलता है कि शायद अगले आने वाले वर्षों में उसे इस विभीषिका से कोई राहत मिल जाएगी क्योंकि हर बार राहत सामग्री के साथ-साथ उसे आश्वासन भी मिलता है कि बस, इस वर्ष के बाद आपके दुःख का समाधान कर दिया जाएगा। पीढ़ियां गुजर गईं लेकिन बाढ़ की समस्या जस की तस ही रही।

दरअसल, बिहार भारत के सर्वाधिक बाढ़ प्रभावित राज्यों में आता है। देश के बाढ़ प्रभावित कुल क्षेत्र का 16.5 प्रतिशत क्षेत्र बिहार में ही है। आबादी के हिसाब से देश की बाढ़ प्रभावित आबादी का 22.1 प्रतिशत हिस्सा बिहार में ही निवास करता है। बिहार के 38 जिलों में से 28 जिले किसी न किसी रूप में बाढ़ से प्रभावित हैं। गंगा नदी बिहार के बीच से बहती है और बिहार को दो भागों में विभाजित करती है। उत्तर बिहार में मुख्य रूप से पांच नदियां कोसी, महानंदा, बागमती, बूढ़ी गंडक और गंडक हैं, जो उत्तर बिहार में बाढ़ की विभीषिका लाती हैं तो वहीं दक्षिण बिहार में सोन, पुनपुन और फल्गू नदी बाढ़ लाती हैं।

गंगा नदी तो स्वयं ही बहुत बड़ी और सर्वाधिक प्रमुख नदी है। अधिकतर नदियां आकर गंगा नदी में ही मिल जाती है जिससे गंगा का जलस्तर बहुत अधिक बढ़ जाता है। फलस्वरूप गंगा का पानी बहुत अधिक क्षेत्रों में फैल जाता है। इस प्रकार भौगोलिक क्षेत्रफल के हिसाब से बिहार का 73.06 प्रतिशत अर्थात 68,800 वर्ग किमी. क्षेत्र बाढ़ से प्रभावित हो जाता है। बिहार में 36 हजार वर्ग किमी. से ज्यादा क्षेत्र में नदियां फैली हुई हैं। बिहार की सभी नदियों में सबसे विनाशकारी बाढ़ कोसी नदी के कारण आती है, इसी कारण से कोसी को 'बिहार का काल' तथा 'बिहार का अभिशाप' के नाम से जाना जाता है। कोसी, महानंदा, बागमती, बूढ़ी गंडक और गंडक जैसी अधिकांश नदियां नेपाल के हिमालय से निकलती हैं। नेपाल में मानसून में काफी वर्षा होती है, और पहाड़ी क्षेत्र से निकल कर जब कोसी बिहार के मैदानी इलाकों में प्रवेश करती है, तो इसकी धारा बहुत ही तेज हो जाती है। ज्यादा पानी के कारण इसका पाट भी काफी फैल जाता है। धारा के काफी तेज होने और पाट के चौड़े होने के कारण बाढ़ बहुत ही तेजी से और एकाएक आती है। इस कारण से लोगों

को बच निकलने का मौका नहीं मिल पाता और जान-माल की बड़े स्तर पर क्षति होती है। कोसी नदी मूलतः सात धाराओं से मिल कर सप्तकोसी नदी बनती है, और बिहार में प्रवेश करने से थोड़ा पहले इसे कोसी के नाम से जाना जाता है। बिहार में यह करीब 260 किमी. बहती है और फिर गंगा में मिल जाती है, लेकिन इस 260 किमी. के सफर में ही कोसी नदी बिहार में प्रति वर्ष जान-माल और कृषि का खासा नुकसान करती है।

1958 से 1962 के बीच कोसी नदी पर भारत-नेपाल सीमा के पास कोसी बराज का निर्माण किया गया। इस बराज में 56 द्वार हैं, जिनके द्वारा भारतीय अधिकारी पानी के बहाव को नियंत्रित करते हैं। हालांकि पानी का ज्यादा दबाव होने पर ज्यादातर द्वारों को खोलना पड़ता है ताकि बराज को सुरक्षित रखा जा सके। कोसी बराज के निर्माण के बावजूद 1962 के बाद भी कोसी क्षेत्र के लोगों का भाग्य नहीं बदल सका और वर्ष-प्रतिवर्ष वे कोसी का शिकार बनते ही हैं। भारत ने अपने क्षेत्र में बाढ़ से बचाव के लिए नदियों के प्रवाह क्षेत्र को ध्यान में रख कर तटबंधों के निर्माण की नीति बनाई। भारत सरकार और बिहार सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर तटबंधों का निर्माण किया भी गया है। वर्तमान में बिहार की 13 नदियों पर कुल 3,790 किमी. लंबाई के तटबंधों का निर्माण किया गया है। हालांकि नये-पुराने तटबंधों का हाल यह है कि अक्सर ये टूटते ही रहते हैं। जब भी तटबंध टूटते हैं तो अधिकारियों का रटा-रटाया जवाब यही होता है कि नेपाल ने बिना जानकारी साझा किए ज्यादा पानी छोड़ दिया जिससे तटबंध पानी का दबाव नहीं झेल सके और टूट गए। हास्यास्पद है कि कई बार तो चूहों और सियारों को तटबंधों को नुकसान पहुंचाने का जिम्मेदार ठहराया गया है। स्पष्ट है कि तटबंधों के निर्माण की गुणवत्ता और रखरखाव में कहीं-न-कहीं लापरवाही भी बाढ़ की विभीषिका के लिए जिम्मेदार है।

बिहार में बाढ़ के विकराल रूप एवं भयावहता को समझने के लिए सबसे उपयुक्त उदाहरण प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का दिया वक्तव्य है। 18 अक्टूबर, 1961 को जब प्रधानमंत्री नेहरू दिल्ली से चितरंजन उद्घाटन समारोह में शामिल होने जा रहे थे तो हवाई मार्ग से जाते हुए उन्होंने बिहार में बाढ़ के विकराल रूप को देखा था और कहा था, 'बिहार मानो एक समंदर की तरह दिखता है जिसमें बस पानी ही पानी है, और कहीं-कहीं कुछ टापू जैसे स्थान दिखते हैं। हमें बिहार को बाढ़ से बचाने के लिए गंभीर उपाय करने होंगे।' बाद में विभिन्न सरकारों ने गंभीर उपायों के नाम पर बांधों और तटबंधों के निर्माण को ही बाढ़ का समाधान मान लिया और बढ़े पैमाने पर बांधों और तटबंधों का निर्माण किया जाने लगा। भाखड़ा नांगल बांध के निर्माण से पूर्व भी इस प्रस्ताव पर चर्चा हुई थी कि भाखड़ा नांगल बांध बने या कोसी पर बड़ा बांध बने, लेकिन अंततः भाखड़ा नांगल बांध के पक्ष में निर्णय लिया गया। इतने बांधों और तटबंधों के निर्माण के बाद जमीनी हकीकत यह थी है कि ये बांध और तटबंध ही बाढ़ लाने के जिम्मेदार हैं।

बाढ़ से बचाव के लिए आवश्यक है कि नये सिरे से पुनः वन की रोपाई की जाए, नदियों से सिल्ट को निकाल कर उसके नये उपयोग का कोई कारगर तरीका ढूंढा जाए, नये जलाशयों और जलग्रहण क्षेत्रों का निर्माण किया जाए। बांध की बजाय नदियों के अधिक पानी के विभिन्न जलधाराओं में प्रवाह के रास्ते बनाए जाएं। बाढ़ को सिर्फ प्राकृतिक आफत न मान कर मानव-जनित आपदा के रूप में भी देखा जाए क्योंकि बाढ़ के इस रूप के लिए सिर्फ प्रकृति और भौगोलिक स्थिति ही जिम्मेदार नहीं हैं, बल्कि जंगलों की कटाई और बिना दूरदृष्टि के नदियों से छेड़छाड़ भी प्रमुख कारण हैं।

(लेख में व्यक्त विचार निजी हैं)

बिहार में बाढ़

उत्पल कुमार

बिहार में बाढ़ के विकराल रूप एवं भयावहता को समझने के लिए सबसे उपयुक्त उदाहरण प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का दिया वक्तव्य है। 18 अक्टूबर, 1961 को जब प्रधानमंत्री नेहरू दिल्ली से चितरंजन उद्घाटन समारोह में शामिल होने जा रहे थे तो हवाई मार्ग से जाते हुए उन्होंने बिहार में बाढ़ के विकराल रूप को देखा था और कहा था, 'बिहार मानो एक समंदर की तरह दिखता है जिसमें बस पानी ही पानी है, और कहीं-कहीं कुछ टापू जैसे स्थान दिखते हैं। हमें बिहार को बाढ़ से बचाने के लिए गंभीर उपाय करने होंगे'

खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्त्वपूर्ण पहल

- राष्ट्रीय खाद्य तेल-तिलहन मिशन (एचएमईओपी) भारत में खाद्य तेल उत्पादन बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है
- भारत में महंगे खाद्य तेलों के आयात पर निर्भरता क्यों से चिंता का विषय बनी हुई है। मिशन के तहत पाम, सरसों और सोयाबीन जैसे तेलों के घरेलू उत्पादन को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा
- मिशन के उद्देश्य हैं-तिलहन की खेती को प्रोत्साहन, किसानों की तकनीक सहायता, उन्नत तकनीक और बुनियादी ढांचे का उन्नयन। इसके तहत किसानों की आय बढ़ाने और टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने के प्रयास किए जाएंगे

(साभार: एक्स)

यकीन नहीं हो पा रहा कि रतन टाटा हमारे बीच नहीं रहे। कुशाग्र उद्यमी रतन टाटा में आम जन की तरह ही गुण-खूबियां-दयालुता और ईमानदारी थी, जिनसे वे असाधारण शख्सियत के मालिक थे। वे विज्ञान एवं शोध के हामी थे और इनमें विश्वास रखते थे।

कौशिक बसु, अर्थशास्त्री
@kaushikcbasu

विजयदशमी | डॉ. घनश्याम बादल

आओ, फिर से रावण मारो राम

भारतीय स्वभाव से ही विनम्र और वीरता के आराधक होते हैं। बिना बात रक्तपात की प्रवृत्ति हमारे खून में नहीं है, परंतु अगर कोई हमें सताता है तो हम चुप भी नहीं रहते। ऐसा आज से नहीं, प्राचीन काल से से होता रहा है। हम अच्छाई के प्रतीक राम को भगवान मान कर पूजते हैं तो बुराई के प्रतीक रावण का पुतला उसकी मृत्यु के हजारों साल बाद भी बुराई के प्रतीक के रूप में जलाते हैं। पाप के नाश को किए गए पराक्रम और बुराई के नाश हेतु उठाए गए हर कदम को समर्थन देने के पर्व का नाम है दशहरा।

ज्योतिर्निबंध ग्रंथ के अनुसार अश्विन माह के शुक्ल पक्ष की दशमी को 'विजय' नक्षत्र के उदय के दिन हर साल अश्विन शुक्ल दशमी को आसुरी ताकतों पर देवत्व की विजय दशहरे के रूप में याद की जाती है। सत्य के लिए लड़ने की प्रेरणा देने वाला यह पर्व राम नहीं वरन रामत्व की विजय का उद्घोष है। दशरथपुत्र राम यहां सत्य, न्याय, करुणा, नम्रता और देवत्व के प्रतीक हैं वहीं रावण असत्य, अन्याय, अहंकार और आसुरी आतंकी ताकतों का प्रतीक है। भले ही आज हमने प्रगति के नये क्षितिज छू लिए हैं, और भारत की गिनती दुनिया की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था और उभरती विश्व शक्ति के रूप में हो रही है, यहां राम की जरूरत आज भी है। राम में पराक्रम भी था और आत्म सम्मान की लड़ाई के लिए पूरी ताकत झोंक देने का माद्दा भी था। चाहे कुछ भी हो जाए, जान जाए या रहे, भाई बचे या नहीं, पर जिस पत्नी का हाथ समाज के सामने थामा है, उसके सम्मान की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जाने का संदेश देता है राम के रावण से युद्ध के बहाने दशहरा। दूसरी तरफ, रावण है जिसे अपने संसाधनों, ताकत, सत्ता, बली भाइयों और महाबलि पुत्रों का जबर्दस्त अहंकार है। जिसे अकूत संपत्ति और अजेय दुर्ग सोने की लंका में रह कर कुछ भी कर लेने और किसी को भी अपमानित, लांछित करने, लात मार कर भगा देने का घमंड विनाश के कगार पर ले जाता है, सही सलाह देने वाले भाई से अलग कर देता है तो अपराध में साथ देने वाले कुंभकर्ण जैसे भाई और देवों तक को हरा देने वाले मेघनाद जैसे बेटों के भी अंत का कारण बन स्वयं बनता है। उसके काम न मायावी बेटे अहिरावण की माया और षड्यंत्र आते हैं न ही सुरसा या कालनेमि जैसे घुरंधर और

मायावी उसे बचा पाते हैं। यहां भी दशहरा संदेश देता है कि पाप की सत्ता और संसाधन अंततः बुरे अंत के कारण बनते हैं, जबकि श्रीराम बंदर-भालुओं को एकत्र कर उसे न केवल परास्त कर देते हैं अपितु उस समुद्र पर भी पुल बांध देते हैं जिसे कभी कोई पार ही नहीं कर पाया था।

जानते हैं ऐसा क्यों हुआ? उस सारे पराक्रम और फतन के पीछे है नीयत का खेल। प्रवृत्ति और चिंतन का फर्क, अच्छे-बुरे के भेद का ज्ञान, अहंकार और चुनौती का सामना करने का जज्बा, सत् और तम् का फर्क। इन्हीं सब अंतरों को रेखांकित करता है दशहरे का महाउत्सव। एक कुत्सित प्रवृत्ति के रूप में रावण को मारने और भोलेपन और सद्प्रवृत्ति की प्रतीक सीता की रक्षा के लिए किसी भी तरह से भी संसाधन जुटाने और व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता का संचार करने का दूसरा नाम है दशहरा। यह पर्व दशहरा भी है दंडहरा भी है और दशहारा भी। प्रेम प्रकार के पापों-काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सद्प्रेरणा प्रदान करता है। किसी भी युग में और किसी भी रूप में जन्मे और बढ़ रहे 'रावणों' के बध के उद्घोष का दूसरा नाम है दशहरा। जो रावण के दस शीर्षों के प्रतीक दसों दिशाओं में फैले उसके अहंकार और मायाजाल को भेदने का सीधा संदेश लेकर आता है हर साल अश्विन माह की दशमी को विजयदशमी का त्योहार। इस पर्व का संबंध देव-दानवों के युद्ध से रहा है पर बाद में यह राम की रावण पर विजय से जुड़ गया। विजयदशमी को ही इंद्र ने वृत्तासुर को मारा था। महाभारत में भी पांडवों ने अज्ञातवास पूर्ण कर द्रौपदी का विजयदशमी के दिन ही करण किया था और महाभारत युद्ध भी विजयदशमी के दिन ही आरंभ हुआ। इस पर्व को मां भगवती के 'विजया' नाम पर भी 'विजयादशमी' कहते हैं।

तो जान लीजिए कि दशहरा केवल राम की विजय मात्र का पर्व ही नहीं है। दशहरा के पीछे भाव है सद्प्रवृत्तियों की विजय की कामना और कुत्सित भावों का नाश। आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो 'राम' भले ही कम हों पर नाना रूप धरे 'रावण' असंख्य घूम रहे हैं। आतंकवाद अपने आप में एक रावणीय प्रवृत्ति है तो उसे पालते-पोसते आतंकी संगठन रावण के कलिकाल के रूप कहे जा सकते हैं। हमें 'रावण' तो मारने ही हैं, संस्कारवान 'राम' भी गढ़ने होंगे क्योंकि जब तक 'राम' नहीं होंगे तब तक 'रावण' का मनोबल और अस्तित्व खत्म होने वाला नहीं है। आज ऐसे राम चाहिए जो देश में संपन्नता और समृद्धि लाएं। न्याय की यह पताका फहराएं। प्रतीक रूप में यही है राम राज्य की अवधारणा। अब देखें यह दशहरा भी यूं ही पुतले फूंक कर चला जाता है, या सच में परिवर्तन आता है।

शांति | संत राजिन्दर

इस दुनिया के सभी लोग शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं। शांति का अर्थ प्रत्येक के लिए अलग-अलग है। कुछेक के लिए यह सुरक्षा तथा शारीरिक तकलीफ अर्थात बीमारियों का न होना है। बहुत से लोगों के लिए यह बिना किसी डर और हमले के बिना रहना है जबकि कुछेक के लिए यह आंतरिक संतुष्टि की अवस्था में रहना है। कुछ लोग अपने चारों ओर के लोगों के साथ प्रेम-प्यार से रहने को ही शांति मानते हैं। जब हम विश्व स्तर पर शांति को देखते हैं, तब हम इसे युद्ध, झगड़े और दंगे-फसाद का न होना मानते हैं। हैरानी की बात यह है कि अनेक लोगों द्वारा लंबे समय से चली आ रही शांति की खोज के बावजूद इसको पाना हमें काल्पनिक सा लगता है क्योंकि बहुत कम लोग ऐसे हैं, जिनको अपने आप में शांति प्राप्त हुई है। वैसे इस धरती पर ऐसा कुछ भी प्रतीत नहीं होता जो हमें हमेशा की शांति दे सके। पहले हमें बारीकी से यह विचार करना है कि शांति है क्या? शब्दकोष के अनुसार दुःख और कलह से निजात पाना ही शांति है, और यह एक ऐसी अवस्था है, जिसमें सुकून और खामोशी होती है। इसी परिभाषा में इस प्रश्न का उत्तर भी छुपा हुआ है कि शांति को पाना इतना मुश्किल क्यों है? जबकि हम देखते हैं कि जीवन और दुःख साथ-साथ चलते हैं, भले ही कोई गरीब हो या अमीर, राजा हो या किसान, सबकी जिंदगी में एक के बाद दूसरी समस्याएं आती ही रहती हैं। तो ऐसी अवस्था में हम शांति को कैसे पा सकते हैं? अगर हम अपनी बाहरी जिंदगी में शांति ढूंढते हैं, तब हमें कुछ ही क्षणों की शांति प्राप्त होती है। निश्चित रूप से हमारे जीवन में ऐसे मौके भी आते हैं, जब हम अपने नजदीकियों के साथ आनंद विभोर होते हैं, या कुछ ऐसे क्षण होते हैं, जब हम अपनी उपलब्धियों पर खुशी का इजहार करते हैं। देखा जाए तो ऐसे क्षण कुछ समय के लिए ही होते हैं। स्वाभाविक है कि हमारी जिंदगी फिर से दुःखों और परेशानियों से भर जाती है। ऐसे में हमें लगता है कि इस जीवन में हमेशा की शांति पाना असंभव है क्योंकि ज्यादातर हम अपनी जिंदगी में बारी-बारी से सुख-दुःख के क्षणों से गुजरते हैं। संतों-महापुरुषों के अनुसार यह पक्का है कि हम सच्ची शांति इसी जिंदगी में पा सकते हैं। शांति हममें से प्रत्येक से शुरू होती है।

रीडर्स मेल

अपने अंदर के पाप मिटाएं

दशहरा क्यों मनाया जाता है? इसका जवाब यही मिलेगा कि इस दिन भगवान श्रीराम जी ने रावण का वध किया था और हर कोई यह भी जानता है कि रावण असुर था। वह अपनी शक्तियों का दुरुपयोग मानवता को नष्ट करने के लिए करता था। इस दिन रावण, कुंभकर्ण, मेघनाद के कागज के पुतले जला कर हम खुशी-खुशी दशहरा मना लेते हैं, लेकिन हम यह कभी नहीं सोचते कि हमारे अंदर जो रावण लालच, लोभ, लालसा, मोहमाया, क्रोध, स्वार्थ, बेईमानी, अनैतिकता, झूठ, फरेब, कुदरत के विरुद्ध जाना, प्रकृति का दोहन करने की कुप्रवृत्ति और न जाने कितनी ही व्याधियां हैं, उनका अंत कैसे होगा? इसी कारण आज हमारे समाज, देश और दुनिया में गलत कामों की बढ़ोतरी हो रही है, जिन्हें पाप की परिभाषा दी जा सकती है। अगर धरती पर पाप ऐसे ही बढ़ता गया तो वो दिन दूर नहीं, जब स्वर्ग जैसी धरती नरक बन जाएगी। दशहरा मनाने का मतलब यह होना चाहिए कि हम उसके इतिहास और शिक्षा को समझें। हमें भगवान श्री राम जी के आदर्शों पर चलना चाहिए।

राजेश चौहान, जालंधर

कब रुकेगी हिंसा

मणिपुर जातीय हिंसा की आग में झुलस ही रहा है। घोर चिंता का विषय अत्याधुनिक विदेशी हथियारों का अराजक तत्वों के हाथ पहुंचना है जो यह समझने के लिए काफी है कि संघर्ष को कितनी बाहरी मदद मिल रही है? मैतेयी और कुकी समुदाय एक दूसरे को टारगेट करके हिंसा से नुकसान पहुंचा रहे हैं। आगजनी, तोड़फोड़ आदि से संपत्ति को नुकसान होना लाजिमी है। दोनों समुदाय के बीच चलती वर्चस्व की लड़ाई में देश के लिए ऐसी चिंता उभर रही है जिसे अगर समय रहते नहीं समझा गया तो यह देश की एकता एवं अखंडता के लिए बड़ा खतरा साबित हो सकता है। राज्य सरकार के 6 माह में हिंसा पर नियंत्रण के दावे हास्यास्पद ही नहीं दुख का भी विषय हैं। इस दौरान घटने वाली घटनाएं और जान-माल के नुकसान की भरपाई आखिर कैसे होगी? सरकार को सख्त लहजे में कार्रवाई करना चाहिए।

अमृतलाल मारू 'रवि', इंदौर, मप्र

कश्मीर में भाजपा फायदे में

8 अगस्त को जम्मू-कश्मीर के चुनाव परिणाम ने 5 अगस्त, 2019 को जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35 ए की समाप्ति पर अपनी मोहर लगा दी। कुछ विरोधी इन परिणामों को अनुच्छेद 370 के पक्ष में देख रहे हैं, लेकिन ऐसा है नहीं। क्योंकि यदि इन परिणामों का विश्लेषण ईमानदारी से किया जाए तो इन्हें भाजपा के पक्ष में ही कहा जाना चाहिए। इन चुनावों में भाजपा ने विधानसभा की 90 सीटों में से केवल 60 सीटों पर ही अपने प्रत्याशी उतारे थे जिनमें से उसे 29 पर सफलता मिली। भाजपा के मतदाताओं की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2014 में जहां भाजपा को 22.98 फीसद मत मिले थे वहीं 2024 में भाजपा को 25.65 फीसद मत मिले। साथ ही, यह भी विचारणीय है कि इन चुनावों में एक तरफ कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस मिल कर लड़े थे जबकि भाजपा अकेले मैदान में उतरी थी। यदि कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस अलग-अलग लड़ते तो परिणाम और भी भाजपा के पक्ष में होते।

डॉ. नरेन्द्र टोंक, मेरठ
letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
सहारा इण्डिया माया कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया काजी द्वारा सहारा इंडिया माया कम्युनिकेशन लेन, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, राजमंत्र टावर, स्टाफ हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।
समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - राकेश सिंह*।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23362368, 23362369, 23362371, 23362372, फैक्स - 23362370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2560750
वर्ष-34, अंक 59
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी सलाहें के लिए उत्तरदायी

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 204

आत्मविश्वास में इजाफा

संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के निवेशकों को राहत देते हुए भारत ने उसके साथ द्विपक्षीय निवेश संधि (बीआईटी) के कुछ प्रावधानों को शिथिल कर दिया है। इसमें निवेशकों के लिए विवाद की स्थिति में समाधान के स्थानीय उपायों का उपयोग करने की अवधि को पांच वर्ष से कम करके तीन वर्ष करना शामिल है। इसका अर्थ यह हुआ कि अगर भारतीय न्याय व्यवस्था इस तय अवधि में किसी विवाद को हल कर पाने में नाकाम रहती है तो निवेशक अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता का सहारा ले सकते हैं। यह भारत के बीआईटी मॉडल में एक बड़ा बदलाव है जिसमें स्थानीय समाधान उपायों के लिए पांच वर्ष की अवधि का प्रावधान है और यकीनन ऐसा करके निवेशकों का आत्मविश्वास बढ़ाने का प्रयास किया गया है। भारत-यूएई बीआईटी के दायरे में शेयर और बॉन्ड जैसे पोर्टफोलियो निवेश भी हैं। उम्मीद है कि इससे संधि के दायरे का विस्तार होगा और पैसिव वित्तीय होल्डिंग वाले निवेशक इन्वेस्टर स्टेट डिस्प्यूट सेटलमेंट (आईएसडीएस) प्रणाली की मदद से विवादों को हल कर सकेंगे। अप्रैल 2020 से जून 2024 के बीच यूएई ने भारत में कुल 19 अरब डॉलर का निवेश किया। यह देश में आने वाले कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश यानी एफडीआई का करीब तीन फीसदी था।

बीते वर्षों के दौरान मध्यस्थता संबंधी कई निर्णय भारत के खिलाफ गए हैं। इन निर्णयों में भारत की विदेशी परिसंपत्तियों जिनमें राज्य के स्वामित्व वाली संपत्तियां शामिल हैं, को जब्त कर लिए जाने का खतरा भी शामिल रहा। उदाहरण के लिए भारत ने मध्यस्थता संबंधी कुछ विपरीत निर्णयों को मानने से इनकार कर दिया। इसके कारण देवास और केयर्न कंपनियों ने तत्कालीन सरकारी कंपनी एयर इंडिया की विदेशी परिसंपत्तियों को जब्त करने की कार्रवाई की। एक अन्य चर्चित विवाद में वोडाफोन द्वारा 2007 में हचीसन से भारतीय मोबाइल सेवा प्रदाता की खरीद करने के बाद पूंजीगत लाभ कर के दावे को लेकर समस्या खड़ी हुई थी। कर कानूनों में अतीत से प्रभावी होने वाले बदलाव करने से हालात और अधिक जटिल हो गए।

आखिरकार आईएसडीएस मध्यस्थता प्रणाली के मेजबान देश के नियमन के बजाय निवेशकों के अनुकूल होने से जुड़ी चिंताओं के कारण भारत ने 2015 के आखिर में मॉडल बीआईटी ढांचे को अपनाया। इसमें विदेशी निवेशकों को भारत के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता अपनाने के पूर्व कम से कम पांच साल तक स्थानीय उपायों का पालन करने, लगाए गए किसी भी कराधान उपाय को बाहर रखने तथा सर्वाधिक तरजीही मुल्क (एमएफएन) वाले हिस्से को बाहर रखने की आवश्यकता है।

संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन के आंकड़े दिखाते हैं कि अंतरराष्ट्रीय विवाद निस्तारण के 1,332 ज्ञात मामलों में से 361 सरकारों के पक्ष में गए जबकि 268 फैसले निवेशकों के पक्ष में गए। इससे यह धारणा ध्वस्त हो गई कि आमतौर पर अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता के मामले सरकार के बजाय निवेशकों के पक्ष में जाते हैं।

अतीत में कई देश मॉडल बीआईटी में स्थानीय उपचार प्रावधान समाप्त होने पर असहजता प्रकट कर चुके हैं। मध्यस्थता में विवेक कम करने की कोशिश के कारण मॉडल बीआईटी विदेशी निवेशकों के हितों के बचाव में नाकाम साबित हुई है। सरकार के नीतिगत हस्तक्षेप हालात को और जटिल बनाते हैं।

नीतियों में स्थिरता होनी चाहिए और वे ऐसी होनी चाहिए कि अनुमान लगाया जा सके। बार-बार नीतियों में बदलाव कारोबारी माहौल पर असर डालता है। भारत-यूएई बीआईटी में संशोधित प्रावधानों के कारण निकट भविष्य में भारत के विरुद्ध मध्यस्थता के मामले बढ़ने का जोखिम है लेकिन यह निवेशकों का आत्मविश्वास बढ़ाने का काम करेगा और अन्य देशों के लिए भी ऐसा ही किया जाना चाहिए। इसके अलावा भारत को अपनी न्यायिक व्यवस्था में भी सुधार करने की जरूरत है ताकि विवादों को तेजी से निपटाया जा सके। इससे कुल मिलाकर निवेशकों का भरोसा जीतने और कारोबारी सुगमता बढ़ाने में मदद मिलेगी।

अजय मोहंती

नवाचार पर वैश्विक जुनून से कदम मिला सकेगा भारत?

जब पूरी दुनिया नवाचार के क्षेत्र में झंडे गाड़ने के प्रयास में जुटी है तब प्रतिभाओं से भरा भारत इसमें क्यों पिछड़ रहा है और होड़ में आने के लिए उसे क्या करना चाहिए, बता रहे हैं अजित बालकृष्णन

किसी भी शैक्षिक पत्रिका के पन्ने पलटिए, किसी ऑनलाइन समाचार वेबसाइट या अखबार में प्रकाशित लेख पढ़े अथवा किसी समाचार के शीर्षक पर नजर डालें तो आप देखेंगे कि कि तमाम व्यवसाय अपने एकदम नए और अनूठे उत्पाद या सेवाएं शुरू होने का दावा कर रहे हैं अथवा सरकारें नवाचार से जुड़े निवेश या कानून की घोषणा कर रही हैं। आपको अचरज होने लगता है कि नवाचार के लिए यह कैसा पागलपन, कैसा जुनून है!

जब मैंने अपने कारोबारी मित्रों से पूछा तो उन्होंने तुरंत कहा कि नवाचार उनके उत्पादों और सेवाओं को प्रतिस्पर्द्धियों के उत्पादों और सेवाओं से अलग बनाने के लिए जरूरी है। जब मैंने राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर नीति निर्माण से जुड़े अपने मित्रों से बात की तो उन्होंने कहा कि नवाचार ऐसे उद्योग तैयार करने के लिए जरूरी है, जो आर्थिक वृद्धि को गति देते हैं और इस प्रकार रोजगार एवं सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में इजाफा करते हैं। 'जीडीपी' शब्द की बात करें तो हमारे कॉलेज के दिनों में हम सब यही मानते थे कि यह शब्द केवल शिक्षाविदों के काम का है। लेकिन आज की दुनिया में यह पेशेवर जगत से दूर बैठे लोगों के लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण नजर आ रहा है, जितना भारत का एकदिवसीय क्रिकेट विश्व कप जीतना या किसी भारतीय युवती का मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता जीतना।

इसके बाद हम अमेरिका की गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियों के बारे में पढ़ते हैं जो नवाचार और आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) जैसे उन क्षेत्रों में दबदबा रखती हैं, जिनकी आजकल जमकर चर्चा हो रही है। फिर हम सुनते हैं कि नवाचार के मैदान की इन महारथी कंपनियों की कमान भारतीयों के हाथ में है: गूगल का नेतृत्व सुंदर पिचाई कर रहे हैं तो माइक्रोसॉफ्ट को सत्य नडेला चला रहे हैं, आईबीएम की कमान अरविंद कृष्ण के हाथ में है और शायद आपको यकीन नहीं हो मगर अमेरिका में व्हाइट हाउस की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नीति समिति की बागडोर भी भारती प्रभाकर संभाल रही हैं।

यह सूची बहुत लंबी है। भारत में बड़ी टेक कंपनियों और बड़ी राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की भी कमी नहीं है। फिर भी नवाचार से जुड़ी बड़ी खबरों या सुर्खियों में भारत का नाम आगे क्यों नहीं दिखता है? इससे भी अधिक हैरान करने वाली बात यह है कि अमेरिका की इन सभी कंपनियों की अगुआई कर रहे भारतीय और भारतीय टेक कंपनियों तथा प्रयोगशालाओं की बागडोर संभाल रहे भारतीय, एक ऐसी व्यवस्था से निकले हैं, जिस पर हम सभी को गर्व है: योग्यता या मेरिट पर चलने वाली भारत की शिक्षा व्यवस्था। वह शिक्षा व्यवस्था, जो सुनिश्चित करती है कि विज्ञान हो, इंजीनियरिंग हो, प्रबंधन हो या सामाजिक विज्ञान हो, सभी क्षेत्रों में बेहतरीन कॉलेज या संस्थान में दाखिला प्रवेश परीक्षा की प्रणाली के जरिये होगा, पारिवारिक संपर्क, विरासत या भारी भरकम धन के बल पर नहीं।

इन सभी के साथ यह खबर भी अक्सर पढ़ने या सुनने को मिल जाती है कि योग्यता पर बहुत अधिक चलने वाली इस व्यवस्था के कारण छात्रों और प्रवेशार्थियों की ऐसी पीढ़ी तैयार हो रही है, जो प्रवेश परीक्षाओं में रटकर (कोटा जैसे कोचिंग सेंटरों के जरिये) पास होने में माहिर हो गई है। यही वजह है कि उसके भीतर मौलिक सोच की क्षमता ही नहीं रह गई, जो नवाचार के लिए जरूरी है।

शायद हम अन्य देशों विशेषकर उन देशों से सीख सकते हैं, जो नवाचार में आगे हैं और इसके लिए अमेरिका से बेहतर जगह कौन सी हो सकती है। हम सभी जानते हैं कि आज के दौर में कारोबारी दुनिया में अमेरिका की नवाचारी कंपनियां हावी हैं और गूगल तथा माइक्रोसॉफ्ट इसकी उदाहरण हैं। शिक्षा जगत में भी स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय और मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलजी जैसे नवाचारी अमेरिकी संस्थान अग्रणी हैं। आखिर वह कौन सी बात है जो हमारे समय में अमेरिका को नवाचार में अग्रणी बनाती है?

आप सोच भी नहीं सकते मगर इसका जवाब एक सरकारी संस्थान है जिसका नाम है- डिफेंस एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट्स एडमिनिस्ट्रेशन (डारपा)। इस संस्थान ने तकनीकी चुनौतियों को परिभाषित किया और गूगल के मूल सर्च अलगोरिदम को तैयार करने तथा चलाने वाले अल्गोरिदम के लिए जरूरी धन भी दिया। डारपा से मिली वित्तीय मदद के बल पर ही इंटेल, एनवीडिया, क्वालकॉम, सिस्को के साथ-साथ रेथियॉन, बोइंग और तमाम दूसरी कंपनियां अस्तित्व में आईं और अपने-अपने क्षेत्रों में दबदबा बना पाईं। हाल ही में एमेजॉन की क्लाउड कंप्यूटिंग परियोजना को डारपा से मिली 60 करोड़ डॉलर की मदद चर्चा में रही। संयोग से वामपंथी विचार वाले मेरे कई अमेरिकी मित्र कहते हैं कि अमेरिका को हर समय जंग इसीलिए चाहिए ताकि इस तरह की वित्तीय मदद जारी रखी जा सके। खैर, वह अलग किस्सा है। प्रिय पाठकों जो बात मुझे चिंतित करती है और शायद आपको भी करती होगी, वह भारत में भी रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) जैसे बड़े संस्थानों की मौजूदगी एवं प्रदर्शन है। पिछले साल डीआरडीओ को ही 2.8 अरब डॉलर यानी करीब 23,000 करोड़ रुपये आवंटित किए गए। उसके पास 52 से अधिक प्रयोगशालाएं हैं, जो देश भर में फैली हैं और इस संस्थान में 7,000 से ज्यादा वैज्ञानिक काम करते हैं। इसके बावजूद भारत के पास गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और एमेजॉन जैसी दुनिया भर में अग्रणी तकनीकी कंपनियां क्यों नहीं हैं?

जब मैंने यही सवाल अपने मित्रों और परिचितों से किया तो सबसे सटीक जवाब उस मित्र से मिला, जो देश के 'कारोबारी समुदायों' में से एक का सदस्य है। उसने कहा, 'भारत में नवाचार या कुछ अलग और नया करने का कोई फायदा ही नहीं होता।' मैंने भी तत्काल दूसरा सवाल दाग दिया, 'ऐसा क्यों है?' जवाब में मित्र ने कहा कि भारतीय कंपनियां निजी हों या सरकारी हों, उन्हें लगता है कि नए और अनूठे उत्पाद या नई सेवा को अपनाने में बहुत अधिक जोखिम है।

एक अन्य मित्र ने कहा कि भारत में शोध के लिए मिलने वाली रकम में बड़ा हिस्सा सरकार से आता है, जो खास तौर पर रक्षा, अंतरिक्ष एवं ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में चला जाता है। इससे निजी क्षेत्र में भी ब्यूरोक्रेसी जैसी दिक्कतें और सुस्ती आ सकती है तथा अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाने में भी धीमापन दिख सकता है। इतना ही नहीं बड़ी भारतीय कंपनियां अक्सर अधिक जोखिम भरे मगर अधिक फल देने वाले नवाचार के बजाय कम जोखिम वाले सेवा पर आधारित मॉडल को तरजीह देती हैं।

और अंत में, भारत बेहद ऊंचे कौशल वाले कई इंजीनियर तथा तकनीकी ग्रेजुएट तैयार करता है किंतु उनमें से ज्यादातर अमेरिका जैसे देशों में चले जाते हैं, जहां उन्हें तकनीक में नवाचार के अधिक मौके मिलते हैं। जो वहां नहीं जाते, वे देश के ही भीतर सेवा क्षेत्र में खप जाते हैं। भारत की शिक्षा व्यवस्था भी समस्या के रचनात्मक समाधान पर सोचने के बजाय रटने पर जोर देती है। जाहिर है कि भारत को तकनीक के मामले में अधिक नवाचारी देश बनाना हमारे ही हाथों में है!

धर्मेंद्र प्रधान: समर्पित कार्यकर्ता का शानदार सफर

हरियाणा विधान सभा के चौंकाने वाले चुनाव नतीजों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने पहले से बेहतर प्रदर्शन करते हुए 90 में से 48 सीटें जीत लीं और अब उसे निर्दलीय विधायकों की कोई आवश्यकता नहीं। यह अलग बात है कि जीतने वाले तीन निर्दलीयों ने भाजपा को समर्थन का ऐलान किया है। उनमें कम से कम देवेंद्र कादियान के लिए यह घर वापसी है। कादियान भाजपा में थे, लेकिन पार्टी से टिकट नहीं मिलने पर बगावत करते हुए सोनीपत की गन्नौर सीट से चुनाव लड़े और भाजपा के अधिकृत प्रत्याशी दिनेश कौशिक को हरा दिया। उन्होंने यह कहते हुए बगावत की थी कि भाजपा में टिकट खरीदे और बेचे गए हैं। एक अन्य विधायक राजेश जून बहादुरगढ़ से कांग्रेस के बागी उम्मीदवार थे, जो अब भाजपा का समर्थन कर रहे हैं। हरियाणा चुनावों को इतनी बारीकी के साथ संभालना और बाद में बागियों का समर्थन पाना अगर मुमकिन हुआ तो उसके पीछे केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान हैं, जो हरियाणा में पार्टी के चुनाव प्रभारी थे।

बागियों को संभालना बहुत मुश्किल होता है और सत्ता में मौजूद भाजपा के लिए तो और भी मुश्किल था। निवर्तमान विधायकों के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर होना लाजिमी है और उन्हें दोबारा टिकट नहीं देने पर बगावत और भारी नुकसान की आशंका भी होती है। पहली कोशिश तो यही होती है कि ऐसे विधायकों को बागी न बनने दिया जाए। बातचीत से कामयाबी न मिले तो डराने और ललचाने की कोशिश की जाती है। कुछ मामलों में दूसरे दलों के बागियों को भी जमकर बढ़ावा देना पड़ता है। कांग्रेस ने सभी 28 विधायकों को दोबारा टिकट दे दिया। उनमें से 14 हार गए। किंतु ज्यादा बागियों से जूझ रही भाजपा ने कई से बातचीत और सौदेबाजी की, जिसकी बागडोर प्रधान के ही हाथ में थी। उन्होंने एक महीने से भी ज्यादा वक्त तक हरियाणा में डेरा डाला और साम-दाम-दंड-भेद का इस्तेमाल कर बागियों को अपने पाले में रखने की पुरजोर कोशिश की।

कहने की जरूरत नहीं कि उनकी कोशिशें सौ फीसदी कामयाब रहीं। कादियान तो एक उदाहरण भर हैं (पैसे लेकर टिकट देने के उनके आरोप अब अनदेखे किए जा रहे हैं), प्रधान की असली चुनौती यह पक्का करना था कि भाजपा के बागी चुनाव हारें और पार्टी टिकट पर लड़ रहे प्रत्याशी जीतें। नायब सिंह सैनी सरकार में मंत्री रहे रंजीत चौटाला जैसे भाजपा के ज्यादातर बागी हार गए। यह ऐसा हुनर है, जो प्रधान ने ओडिशा की राजनीति में लंबा समय बिताते हुए सीखा है। वह मध्य ओडिशा के तलचर से हैं। उनके पिता देवेंद्र प्रधान राजनीति में सक्रिय थे और अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में मंत्री भी रहे थे। धर्मेंद्र तलचर कॉलेज में पढ़ते समय अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता बन गए थे और कॉलेज के पहले ही वर्ष में छात्र संघ के अध्यक्ष भी बन गए।

भाजपा के युवा कार्यकर्ता के लिए ओडिशा में काम करना मुश्किल था। वाजपेयी और लाल कृष्ण आडवाणी का बीजू पटनायक के साथ जो रिश्ता था, उसके कारण भाजपा राज्य में सत्तारूढ़ दल पर हमलावर नहीं हो सकती थी। हालत बिल्कुल वैसी थी, जैसे दोनों हाथ पीछे बांधकर लड़ने के लिए कहा जाए। जो दो नावों यानी भाजपा और बाद में बीजू जनता दल पर पैर रखकर भी संतुलन साध पाए, वे राजनीति में प्रधान जैसे जुझारू और लड़ाके नेता के मुकाबले अधिक कामयाब रहे।

सियासी हलचल

आदिति फडणीस

अश्विनी वैष्णव ऐसे ही उदाहरण हैं। प्रशासनिक अधिकारी के तौर पर अपना करियर शुरू करने वाले वैष्णव ने नवीन पटनायक के आशीर्वाद के साथ वाजपेयी के लिए काम किया। बाद में वह राज्य सभा पहुंचे और अब नरेंद्र मोदी सरकार के अहम मंत्रियों में शुमार हैं। मगर अब भी वह अपने पुराने सरपरस्त पर हमला नहीं कर सकते, जो विपक्ष में हैं। उनके उलट प्रधान ने कदम-कदम पर संघर्ष किया। उन्होंने ओडिशा में पार्टी की जड़ें जमाईं और उसे सत्ता तक पहुंचा दिया। इस समय राज्य विधान सभा में भाजपा के सबसे ज्यादा विधायक उनके प्रबल समर्थक हैं मगर उन्हें मुख्यमंत्री नहीं बनाया गया। मोदी की पहली सरकार में प्रधान तेल एवं गैस मंत्रालय में पहले राज्य मंत्री और बाद में कैबिनेट मंत्री बने। उन्होंने उज्ज्वला योजना और एलपीजी सब्सिडी छोड़ने के अभियानों को आगे बढ़ाया। पार्टी अब इनके बारे में ज्यादा बात नहीं करती।

नोटबंदी के फौरन बाद 2017 में उन्हें कौशल विकास मंत्रालय दिया गया। नौकरी तलाश रहे लोगों के लिए वह बहुत बुरा दौर था। उसके बाद कोविड महामारी ने दूसरा बड़ा झटका दिया। अब शिक्षा मंत्री के तौर पर प्रधान नीट तथा पेपर लीक के विवादों से निपटने की कोशिश कर रहे हैं। साथ ही वह इस क्षेत्र पर अपनी छाप भी छोड़ना चाहते हैं।

प्रधान करिश्माई नेता या अद्भुत वक्ता नहीं हैं। परंतु जमीनी राजनीति और संगठन की समझ उन्हें बेहतरीन पार्टी कार्यकर्ता बनाती है। हरियाणा के पहले वह कर्नाटक, उत्तराखंड, झारखंड और ओडिशा में भी पार्टी के लिए चुनाव का काम संभाल चुके हैं। ओडिशा में शायद ही ऐसा कोई भाजपा कार्यकर्ता होगा जिसे वह नाम से न जानते हों। वह बागियों को भी नाम से जानते हैं और उनसे बातचीत के लिए खुद पहल करने से भी नहीं हिचकते, चाहे उनकी वजह से ही वे बागी क्यों न बने हों।

यह सच है कि उन्हें मंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ेगा, लेकिन आने वाले महीनों में अगर उन्हें जेपी नड्डा के बाद भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया जाए तो ताज्जुब नहीं होगा। वैसे भी पार्टी में पूर्वी भारत का कोई नेता कभी अध्यक्ष नहीं बन पाया है।

निजी जीवन में प्रधान की जरूरतें बहुत कम हैं। एक बार उन्होंने बिजनेस स्टैंडर्ड से कहा था कि पेट्रोलियम मंत्री रहते हुए उन्हें अक्सर बाहर खाना पड़ता था लेकिन उन्हें घर का सादा खाना पसंद था, बिल्कुल वैसा खाना जैसा उनकी मां बनाया करती थीं। उन्होंने कहा कि वह उड़िया हैं, इसलिए उन्हें मिठाई तो पसंद होंगी ही।

उनके समर्थक कहते हैं कि प्रधान अपने साथ काम करने वालों के साथ जिस तरह व्यवहार करते हैं, उसमें बिल्कुल गृह मंत्री अमित शाह की झलक मिलती है। हो सकता है कि वे सही कह रहे हों।

आपका पक्ष

जैविक खेती को मिलना चाहिए बढ़ावा

फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीक से खेती जरूरी है, क्योंकि इससे किसानों को ज्यादा फायदा मिलने की उम्मीद रहती है। हमारे देश के किसान अब आधुनिक तकनीक से कृषि कार्य करने लगे हैं। लेकिन अगर विज्ञान का उचित प्रयोग किया जाए तो यह प्राणी जाति के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है और अनुचित प्रयोग अभिशाप भी बन जाता है। कुछ किसान अपनी फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए कुछ ऐसी दवाइयों, खादों का प्रयोग करते हैं, जो उनकी फसलों को किसी भी रूप में खाता है, उस पर उनका विपरीत असर भी पड़ता है।

फल, सब्जियों की पैदावार या इनकी संभाल करने के लिए भी जो रसायनिक खादों और अन्य रसायन का प्रयोग किया जा रहा है, जो शरीर के लिए बहुत ज्यादा हानिकारक है। यह जानलेवा बीमारियों को बढ़ावा दे रहा है। कृषि के क्षेत्र में भी विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है और

फसलों पर रसायन के अधिक प्रयोग का असर लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ता है, इसलिए जैविक खेती को बढ़ावा देने की जरूरत है

इसमें भी कोई दो राय नहीं है कि आधुनिक तकनीक से कृषि के क्षेत्र में बहुत सुधार नहीं हुआ है, लेकिन यह भी सच्चाई है कि अगर विज्ञान वरदान है तो यह अभिशाप भी बन सकता है। आज फसलों कि पैदावार बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों का प्रयोग किया जाने लगा है। रासायनिक खादों का खतरा प्राणी जाति की सेहत के लिए मात्र खेती की पैदावार से ही नहीं है, बल्कि यह रासायनिक खाद खेतो से पानी के साथ बहकर पीने वाले पानी में मिलकर प्राणी जाति के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। कुछ किसान तो फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों का बेतहाशा प्रयोग करते होंगे? अगर समय रहते रासायनिक खादों की जगह जैविक खादों का प्रयोग फिर से शुरू नहीं किया गया तो वो दिन दूर नहीं है जब हरी भरी सब्जियां, फल और अनाज भी सेहत के दुश्मन इस कदर बन जाएंगे, जिसका फिर कोई इलाज भी असंभव हो जाएगा। जैविक खाद का प्रयोग बढ़े इसके लिए सरकारों को किसानों के लिए विशेष योजनाओं की सौगात देनी होगी। किसानों को इस कार्य के लिए तकनीकी और आर्थिक सहायता देनी होगी। किसानों को पशु पालन के लिए जागरूक करने और इसके लिए भी सरकारों को कुछ नीतियां बनानी चाहिए, ताकि किसान जैविक खाद तैयार कर सके।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

युग द्रष्टा रतन टाटा

युग द्रष्टा, दूरद्रष्टा, अनमोल रतन, उद्योग शिरोमणि रतन टाटा के निधन के बाद पूरे देश ने जो उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी है वह अतुलनीय है। उनके दिशानिर्देश, मार्गदर्शन और संरक्षण में टाटा समूह ने देश के लगभग सभी उद्योगों में अपना योगदान दिया है और साथ ही प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में टीसीएस और सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में सरकारी क्षेत्र में शासन को सुलभ बनाया है। रतन टाटा ने सभी कारपोरेट निर्णय शीघ्रता से लिए और उनकी सफलता भी सुनिश्चित की। टाटा नैनो ने वाहन के क्षेत्र में छोटी गाड़ियों के लिए परिवर्तनकारी भूमिका निभाई। रतन टाटा की विदाई एक सम्राट की तरह राजकीय सम्मान के साथ हुई है और देश भर के लोगों ने उनके लिए एक मर्यादा पुरुष की तरह श्रद्धांजलि दी है।

विनोद जौहरी, दिल्ली

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

ऑस्ट्रेलिया के नौसेना कमांडर रियर एडमिरल क्रिस्टोफर स्मिथ शुक्रवार को भारतीय नौसेना के पूर्वी क्षेत्रीय बेस आईएनएस सतपुड़ा पहुंचे।

कल्पमेधा

अज्ञानी होना उतनी शर्म की बात नहीं है, जितना कि सीखने की इच्छा न रखना।

- बेंजामिन फ्रैंकलिन

एकता की आवाज

दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संगठन आसियान के लाओस शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने एक बार फिर एकजुटता की जरूरत रेखांकित की। यह सम्मेलन ऐसे समय में हो रहा है, जब दुनिया के कई देश परस्पर संघर्ष में उलझे हुए हैं और इसके चलते अनेक आर्थिक समस्याएं चुनौती बन कर खड़ी हो गई हैं। विकसित कहे जाने वाले देश भी मंदी और सुस्त अर्थव्यवस्था से पार पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने ऐसी स्थिति में दक्षिण एशियाई देशों से परस्पर सहयोग और शांतिपूर्ण वातावरण बनाए रखने की अपील की। दक्षिण एशिया के सभी देश चीन की विस्तारवादी नीतियों के चलते किसी न किसी रूप में असहज महसूस करते हैं। इसलिए सभी ने शिखर सम्मेलन के मंच से चीन की खुल कर आलोचना की। प्रधानमंत्री ने चीन का नाम लिए बगैर कहा कि हमारी नीति विकासवादी होनी चाहिए, न कि विस्तारवादी। दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती सक्रियता के मद्देनजर उन्होंने समुद्री गतिविधियों के संबंधित कानूनी ढांचे 'अनक्लोस' के तहत ही संचालित किए जाने पर बल दिया। निगरानी की आजादी और वायु क्षेत्र सुनिश्चित करने की जरूरत भी रेखांकित की। इस पर एक ठोस और प्रभावी आचार संहिता बनाने तथा क्षेत्रीय देशों की विदेश नीति पर अंकुश लगाने की कोशिशों पर विराम लगाने के उपाय तलाशने की जरूरत भी बताई।

दरअसल, चीन की विस्तारवादी नीतियों के कारण न केवल दक्षिण एशिया, बल्कि दूसरे कई देशों में भी कई तरह की परेशानियां पैदा हो गई हैं। चीन ऐसा जानबूझ कर करता है, ताकि तेजी से विकास कर रहे और विकसित देश संघर्षों में उलझे रहें और वह उनके बाजार में अपना वर्चस्व कायम रखे। मगर चूंकि भारत अब विकसित देश बनने के पायदान चढ़ रहा है और उसके प्रयासों से वैश्विक दक्षिण देश अपना एक नया बाजार बनाने की दिशा में बढ़ रहे हैं, चीन की चिंता स्वाभाविक रूप से बढ़ गई है। दक्षिण चीन सागर में उसने इसीलिए अपनी गतिविधियां तेज कर दी हैं। कुछ समय पहले हुए क्वाड सम्मेलन में भी भारत, अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया ने दक्षिण चीन सागर में चीन की गतिविधियों पर नकेल कसने की जरूरत रेखांकित की थी। दरअसल, अब विकसित देशों को भी महसूस होने लगा है कि दक्षिण एशियाई देशों के सहयोग के बिना चीन को टक्कर देना संभव नहीं है। इन देशों को एकजुट रखने में भारत की अहम भूमिका है।

हालांकि आसियान का गठन आर्थिक मामलों में पश्चिम के विकसित देशों, चीन और रूस के वर्चस्व को तोड़ कर अपना एक बाजार विकसित करने और इस क्षेत्र में शांति और सहयोग बनाए रखने के मकसद से हुआ था। इसका असर भी दिखने लगा है। फिलहाल जिस तरह रूस और यूक्रेन लंबे समय से संघर्ष कर रहे हैं और उसके चलते पूरी दुनिया में आपूर्ति शृंखला बाधित हुई है। फिर इजराइल और हमास के संघर्ष का दायरा बढ़ा है और उसमें विश्व की दूसरी ताकतों के भी कूद पड़ने की आशंका जाहिर की जा रही है, आसियान देशों की भूमिका आने वाले समय में और महत्त्वपूर्ण होने वाली है। निस्संदेह अगर आसियान देश इस स्थिति में एकजुटता और परस्पर सहयोग बनाए रखते हैं, तो इस क्षेत्र को वैश्विक संघर्षों की आंच कम से कम प्रभावित कर पाएगी। प्रधानमंत्री के इस बयान से शायद ही कोई देश असहमत होगा कि यह समय युद्ध और संघर्ष का नहीं, बल्कि परस्पर सहयोग और सामंजस्य का है।

किसकी जिम्मेदारी

सड़क के किनारे या किसी पार्क में गड्ढे, खुले नाले या मैनहोल में गिर जाने से बच्चों की मौत की घटनाएं अक्सर सामने आती रही हैं। खासकर बरसात में जलजमाव की वजह से सड़क किनारे किसी गड्ढे या नाले का कई बार पता नहीं चलता और राह चलते लोग उसमें गिर जाते हैं। गौरतलब है कि पांच दिन पहले उत्तर-पश्चिम दिल्ली के अलीपुर इलाके में एक खुले नाले में गिरने से पांच वर्षीय बच्चे की मौत हो गई। वहां निर्माण कार्य कराने वाले ठेकेदार ने कई जगह न केवल नाले को खुला छोड़ दिया था, बल्कि वहां आसपास न तो कोई घेरा लगाया गया था और न कोई चेतावनी के संकेत लगाए गए थे। जाहिर है, यह ठेकेदार से लेकर संबंधित सरकारी महकमे और उसके अधिकारियों की स्पष्ट लापरवाही है। अब राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने ऐसे कुछ मामलों को आधार बना कर दिल्ली सरकार के मुख्य सचिव, पुलिस आयुक्त, दिल्ली विकास प्राधिकरण और नगर निगम आयुक्त को नोटिस जारी कर चार हफ्ते में विस्तृत रपट मांगी है। आयोग ने कहा है कि ऐसी घटनाएं नगर निकाय के अधिकारियों की स्पष्ट लापरवाही है और यह पीड़ितों के मानवाधिकारों का उल्लंघन है।

यह समझना मुश्किल है कि नाले का निर्माण कराने वाले ठेकेदार और अन्य लोगों को इतनी साधारण बात समझ में क्यों नहीं आती कि खुला नाला कभी भी किसी की मौत की वजह बन सकता है। दिल्ली में पिछले कुछ दिनों में खुले नाले या मैनहोल में गिर कर लोगों की मौत हो जाने की पांच घटनाएं हो चुकी हैं। विडंबना यह है कि सरकार या संबंधित महकमों को लंबे समय से कायम इस गंभीर समस्या पर गौर करने की जरूरत नहीं महसूस होती। जब भी खुले नाले, गड्ढे या मैनहोल में गिर जाने से किसी की जान चली जाती है, तब सरकार की ओर से औपचारिकता के लिए कुछ कदम उठाने की घोषणा की जाती है, लेकिन कुछ दिनों बाद फिर वैसी ही कोई घटना हो जाती है। किसी भी जगह नाले के निर्माण या मैनहोल की साफ-सफाई के दौरान उसे खतरनाक तरीके से खुला छोड़ देने की वजह से किसी की मौत की जिम्मेदारी तय की जानी चाहिए।

प्रदूषण से मुक्ति के प्रयास

सितंबर माह के आंकड़ों के मुताबिक पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश से पराली जलाने के कुल 75 मामले उजागर हो चुके हैं। हैरत की बात है कि 15-25 सितंबर के बीच पिछले वर्ष की तुलना में हरियाणा-पंजाब में पराली जलाने की घटनाएं पांच से ग्यारह फीसद तक बढ़ी हैं।

मनीष अग्रहरि

बीते 24 सितंबर को सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में पराली जलाने के मुद्दे पर वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) से जवाब तलब किया कि पराली जलाना फिर से क्यों शुरू हो गया? सर्वोच्च न्यायालय ने पूछा कि 'सीएक्यूएम एक्ट की धारा-14 के तहत जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ क्या कदम उठाया गया है।' अदालत ने पंजाब और हरियाणा की सरकारों को भी फटकार लगाते हुए कहा कि दोनों राज्यों ने पराली जलाने वाले किसानों के खिलाफ कोई कठोर कार्रवाई नहीं की है। दरअसल, सीएक्यूएम की धारा के तहत पराली जलाने पर अधिकारियों, कर्मचारियों को सजा का भी प्रावधान है। सवाल है कि क्या अकारण सर्वोच्च न्यायालय को पराली जलाने पर एक जिम्मेदार संस्थान को फटकार लगानी पड़ी!

क्या सरकार के तमाम प्रयासों के बावजूद पराली प्रबंधन विफल हो चुका है? क्या कृषक जन-मन अब भी पूरी तरह से पराली प्रबंधन पर पुरानी परिपाटी से चल रहा है? जाहिर है, कुछ न कुछ कुप्रबंधित जरूर है। सितंबर माह के आंकड़ों के मुताबिक पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश से पराली जलाने के कुल 75 मामले उजागर हो चुके हैं। हैरत की बात है कि 15-25 सितंबर के बीच पिछले वर्ष की तुलना में हरियाणा और पंजाब में पराली जलाने की घटनाएं पांच से ग्यारह फीसद तक बढ़ी हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष इसी अवधि में जहां हरियाणा में पराली जलाने के तेरह मामले पाए गए थे, इस बार बढ़ कर 70 हो गए। इसी तरह पंजाब में पराली जलाने के मामले आठ से 93 तक पहुंच गए। हरियाणा में करनाल, कुरुक्षेत्र और यमुनानगर सर्वाधिक प्रभावित जनपद हैं। वहां कुल 70 मामलों में 31 मामले पाए गए। इसी तरह पंजाब के कुल 93 मामलों में से 58 मामले तरनातरन, गुरुदासपुर और अमृतसर में पाए गए। अनवरत पराली दहन से बिगड़ती आबोहवा का खमियाजा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र को भुगतना पड़ता है। सर्दियों के शुरुआती दौर में ही दम घुटने-सा लगता है। अभी बीते 24 सितंबर तक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वायु गुणवत्ता सूचकांक 203 तक दर्ज किया गया। ऐसे हालात में सुप्रीम को फटकार स्वाभाविक है।

ऐसा नहीं कि सरकार ने विगत वर्षों में पराली दहन को लेकर कुछ नहीं किया। पर शासन, प्रशासन, सरकारी संस्थाओं और पराली जलाने वाले किसानों के बीच संबंध में जरूर कुछ कमी रह जाती है। पिछले वर्ष सुप्रीम कोर्ट के हवाले से केंद्र सरकार ने सूबे की सरकारों को पराली जलाने के दोषी किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का लाभ न देने का सख्त निर्देश दिया है। पराली जलाने पर निगरानी के लिए हर वर्ष 15 सितंबर तक 'कंसोर्टियम फार रिसर्च आन एग्रो इकोसिस्टम मानिटरिंग एंड माडलिंग फ्राम स्पेस' (क्रीम्स) द्वारा सेटेलाइट से निगाह रखी जाती है। इससे 'गूगल लोकेशन' के साथ पराली जलाने का पता लग जाता है। राष्ट्रीय हरित

अधिकरण (एनजीटी) ने पराली जलाने पर दो एकड़ से कम क्षेत्र के लिए ढाई हजार रुपए, दो से पांच एकड़ क्षेत्र के लिए पांच हजार रुपए और पांच एकड़ से अधिक क्षेत्र के लिए पंद्रह हजार रुपए तक अर्थदंड का प्रावधान किया है। दुबारा पराली जलाने पर संबंधित किसान के खिलाफ कारावास और अर्थदंड का भी प्रावधान है। इसी तरह धान काटने के यंत्र कंबाइन हार्वेस्टर में 'स्ट्रा मैनेजमेंट सिस्टम' (एसएमएस) अनिवार्य कर दिया गया है। बिना एसएमएस वाले कंबाइन के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई का प्रावधान है। विगत वर्षों में विभिन्न सूबों में हजारों किसानों के विरुद्ध पराली जलाने पर एफआइआर भी दर्ज कराई गई है।

> **पराली जलाने से मृदा में मौजूद अनेक लाभदायक सूक्ष्मजीव नष्ट हो जाते हैं। एक अध्ययन के मुताबिक एक टन पराली जलने से मृदा में मौजूद 5.5 किलो ग्राम नाइट्रोजन, 2.3 किलो ग्राम फास्फोरस, 25 किलो ग्राम पोटैशियम, 1.2 किलो ग्राम सल्फर समेत अन्य उपयोगी पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान की रपट के मुताबिक उत्तर भारत के राज्यों में पराली जलाने के कारण तकरीबन दो लाख करोड़ रुपए की आर्थिक हानि होती है।**

पराली जलाने से मृदा में मौजूद अनेक लाभदायक सूक्ष्मजीव नष्ट हो जाते हैं। एक अध्ययन के मुताबिक एक टन पराली जलने से मृदा में मौजूद 5.5 किलो ग्राम नाइट्रोजन, 2.3 किलो ग्राम फास्फोरस, 25 किलो ग्राम पोटैशियम, 1.2 किलो ग्राम सल्फर समेत अन्य उपयोगी पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान की रपट के मुताबिक उत्तर भारत के राज्यों में पराली जलाने के कारण तकरीबन दो लाख करोड़ रुपए की आर्थिक हानि होती है। एक अन्य जानकारी के मुताबिक दिल्ली में पराली प्रदूषण की वजह से 'एक्यूट रेस्पिरेटरी इंफेक्शन' (एआरआइ) ग्रामीण क्षेत्रों के मुकाबले बच्चों और बुजुर्गों में ज्यादा होता है। प्रदूषण का स्तर उच्च होने के कारण दिल्ली वासियों की जीवन प्रत्याशा में लगभग साढ़े छह साल की कमी आई है। पराली जलने से कार्बन मोनो आक्साइड, कार्बन डाई आक्साइड, मीथेन, पानी सायक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन जैसी विषैली गैसें उत्सर्जित होती हैं। इन प्रदूषकों के प्रसार से 'स्माग' का एक मोटा आवरण निर्मित होता है, जिससे ब्रोंकाइटिस, तंत्रिका और हृदय संबंधी, यहां तक कि कैंसर जैसे रोगों का खतरा बढ़ जाता है।

इस समस्या का समाधान केवल सरकारी तंत्र के भरोसे नहीं किया जा सकता है। इसके लिए किसानों को जागरूक बनाना होगा। किसान कम अवधि वाली धान की प्रजातियां लगाएं, जिससे पराली जलाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी, और अगली फसल के लिए पराली विघटन को पर्याप्त समय मिल जाए। पिछले वर्ष हरियाणा सरकार ने धान की सीधी बिजाई के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया था, जिससे 30 सितंबर तक वहां की मंडियों में आठ लाख टन धान बिकने आया था। इससे इतर, धान की कम अवधि वाली प्रजातियों, जैसे पीआर-126, पीबी 1509 आदि बोने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करना चाहिए। 'हैप्पी सीडर' का प्रयोग किया जाए, जिसमें पराली का बंडल बनकर ऊपर आ जाता है, गेहूं की बुवाई हो जाती है और पराली का बंडल पलवार के रूप में खेत पर बिछ जाता है।

इसके अलावा 'पैलेटाइजेशन' को अपनाया जा सकता है। इसमें पुआल को सुखाकर गुटिका के रूप में बदल दिया जाता है, उसे कोयले के साथ मिलाकर थर्मल पावर प्लांट और उद्योगों में ईंधन की तरह प्रयोग करते हैं। इससे एक ओर जहां कोयले की बचत होती है, वहीं दूसरी ओर कार्बन उत्सर्जन में कटौती होती है। 'गौठान' छत्तीसगढ़ का एक नवीन प्रयोग है। इसमें पांच एकड़ सरकारी भूमि में दान की गई पराली एकत्र कर गाय के गोबर और प्राकृतिक एंजाइम मिला कर जैविक खाद बनाई जाती है। पराली को 'कंप्रेस्ड बायो गैस प्लांट' (सीबीजीपी) में भेज दिया जाए तो ईंधन तैयार हो जाता है। दिल्ली के पूसा संस्थान ने 'बायो वेस्ट डिकंपोजर' तैयार किया है। इसके उपयोग से खेत में मौजूद पराली शीघ्र अपघटित होकर खाद के रूप में परिवर्तित हो जाती है। इस तरह सरकारी तंत्र के अलावा सभी की समग्र संजीदगी से पराली से पार पा सकते हैं।

इंसानियत का विस्तार

मुनीष भाटिया

अगर हम अपनी सारी क्षमताओं और उपलब्धियों को एक तरफ रख दें, लेकिन अपनी इंसानियत को नहीं सजाएं, तो वास्तव में हमारी जीवन यात्रा अधूरी रह जाती है। किसी की परिस्थिति को समझने और उससे संबंधित होना इंसानियत की एक महत्त्वपूर्ण निशानी है। जब हम दूसरों की समस्याओं और चुनौतियों को समझने की कोशिश करते हैं, तो हम एक संवेदनशील और सहानुभूति से भरे हुए व्यक्ति बनते हैं, बल्कि हमें यह भी अहसास होता है कि हमारी अपनी समस्या कितनी छोटी हो सकती है। दूसरों की स्थिति और अनुभवों को समझना हमें अधिक सहानुभूतिशील और करुणामय बनाता है। यह हमें न केवल बेहतर इंसान बनाता है, बल्कि हमें समाज में एक सकारात्मक बदलाव लाने की प्रेरणा भी देता है। इंसानियत का सार वास्तव में यही है कि हम एक-दूसरे की परिस्थितियों, दुखों और खुशियों को समझें और उनके प्रति संवेदनशीलता दिखाएं।

हमारे विकास और हमारी उपलब्धियों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह है कि हम एक इंसान के रूप में क्या हैं। यह विचारशीलता, संवेदनशीलता और एक-दूसरे के प्रति सम्मान और दया की भावना को समेटता है। जब हम अपनी इंसानियत को प्राथमिकता देते हैं, तो हम सच्चे मायनों में जीने लगते हैं और हमारे कार्यों में एक गहरा अर्थ आ जाता है। इस दृष्टिकोण से सच्चे अमीर और सफल वही हैं जो अपने जीवन में पूर्णता और मानवता को महत्त्व देते हैं, न कि केवल बाहरी उपलब्धियों या स्वार्थ को। भावनाएं एक व्यक्ति की अंतरात्मा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होती हैं, जो हमारे अनुभवों और संबंधों को गहराई प्रदान करती हैं। उनकी सच्ची समझ के लिए हमें अपनी संवेदनशीलता को जागृत करना पड़ता है और दूसरे के अंतर्मन को जानने का प्रयास करना पड़ता है। जब हम यह कर पाते हैं, तो हम न केवल अपने जीवन को समृद्ध करते हैं, बल्कि दूसरों के साथ भी एक गहरे स्तर पर जुड़ पाते हैं।

> **यह मान लेना कि केवल हम ही किसी खास काम को सही तरीके से कर सकते हैं, वास्तव में एक भ्रम हो सकता है। आज के समय में इतने सारे विकल्प और संसाधन उपलब्ध हैं कि बहुत सारी समस्याओं के समाधान या काम करने के तरीके अलग हो सकते हैं।**

अक्सर हम अपनी अपेक्षाओं और इच्छाओं को पूरा न होने पर निराश हो जाते हैं, जबकि हम यह नहीं सोचते कि कितने लोग हमारे कामों, व्यवहार और हमारी क्षमताओं से उम्मीदें रखते हैं। जब हम अपनी समस्याओं और असफलताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो अक्सर यह भूल जाते हैं कि हमारे पास दूसरों के प्रति भी जिम्मेदारियां हैं। यह समझ कि हमसे कितने लोग उम्मीद रखते हैं और उनके प्रति हमारी जिम्मेदारी है, हमें अधिक संवेदनशील और जिम्मेदार बना सकती है। यह समझ हमें न केवल व्यक्तिगत स्तर पर प्रभावित करती है, बल्कि सामूहिक स्तर पर भी सकारात्मक प्रभाव डालती है। समाज में सकारात्मक बदलाव और सुधार तभी संभव है जब हम एक-दूसरे के साथ समझदारी और समर्थन के साथ पेश आते हैं।

यह मान लेना कि केवल हम ही किसी खास काम को सही तरीके से कर सकते हैं, वास्तव में एक भ्रम हो सकता है। आज के समय में इतने सारे विकल्प और संसाधन उपलब्ध हैं कि बहुत सारी समस्याओं के समाधान या काम करने के तरीके अलग हो सकते हैं। यह मान्यता कि हम ही सब कुछ कर सकते हैं, कभी-कभी आत्म-सीमा की ओर इशारा करती है। हम सभी अपनी-अपनी जगह महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन यह समझना भी जरूरी है कि अन्य लोग भी उन समस्याओं का समाधान निकाल सकते हैं, जिन्हें हम अभी तक नहीं खुलझा पाए हैं। यह दृष्टिकोण हमें और अधिक खुला और सहायक बनाता है और समस्याओं को सुलझाने में नए और प्रभावी तरीकों को अपनाने में मदद करता है। जब लोग मिलकर काम करते हैं और एक-दूसरे के दृष्टिकोण और भावनाओं की कद्र करते हैं, तो इससे काम की गुणवत्ता में सुधार होता है और आपसी विश्वास व समझ भी बढ़ती है।

सहयोग का मतलब सिर्फ साथ काम करना नहीं, बल्कि एक-दूसरे की मदद करना और विचारों का आदान-प्रदान करना भी है। जब भलाई और मदद बिना किसी स्वार्थ, लालच या अपेक्षा के की जाती है, तो इसका प्रभाव और अधिक गहरा और वास्तविक होता है। ऐसी भलाई न केवल दूसरों के दिल को छूती है, बल्कि हमें भी आत्मिक संतोष और खुशी देती है। स्वार्थ और लालच से मुक्त होकर की गई मदद में एक सहजता और ईमानदारी होती है, जो इसे और अधिक मूल्यवान बनाती है। इस तरह की भलाई से न तो किसी के प्रति अहसान जताने की जरूरत होती है और न ही किसी प्रकार की मनचाने की प्रवृत्ति होती है। यह मदद खुद में एक पुरस्कार होती है और इससे दोनों पक्षों को सच्ची खुशी और संतोष प्राप्त होता है। जब हम बिना किसी अपेक्षा के किसी की मदद करते हैं, तो यह दिखाता है कि हम अपने मूल्यों और मानवता के प्रति सच्चे हैं। यह न केवल हमारे संबंधों को मजबूत करता है, बल्कि हमें आत्मिक रूप से भी समृद्ध बनाता है। यह हमारे जीवन में संतुलन और शांति लाता है और हमारे संबंधों को मजबूत और सार्थक बनाता है।

हमारी स्थिति और हमारी अपेक्षाओं की तुलना में दूसरों की उम्मीदें भी महत्त्वपूर्ण होती हैं। जब हम दूसरों की उम्मीदों और विश्वास को पूरा करने की कोशिश करते हैं तो हम न केवल अपने रिश्तों को मजबूत करते हैं, बल्कि एक जिम्मेदार और प्रभावशाली इंसान भी बनते हैं। किसी की परिस्थिति से रूबरू होना और उसके दर्द, संघर्ष या खुशी को समझना ही इंसानियत का मूल है। जब हम दूसरों की भावनाओं और परिस्थितियों को समझने का प्रयास नहीं करते, तो हम अपनी इंसानियत का एक महत्त्वपूर्ण पहलू खो देते हैं। एक सच्चा इंसान होने का मतलब है कि हम अपने अनुभवों के लिए संवेदनशील हों, साथ ही दूसरों की भावनाओं और परिस्थितियों के प्रति भी सहानुभूतिशील रहें।

दुनिया मेरे आगे

कंटीली राह

पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को दिल्ली पहुंचने पर हिरासत में ले लिया गया। सवाल है कि क्या देश में गांधी की समाधि राजघाट तक जाने का रास्ता कांटों भरे रास्ते से गुजरता है। यह राजनीतिक रूप से गलत कैसे हो गया? उनको हिरासत में लिए जाने पर लद्दाख बंद करके वहां के निवासियों ने अपना विरोध जताया। बयाना थाने में सोनम वांगचुक और पदयात्रियों को रोका गया था। इनको रोकने का कारण यह बताया गया कि जम्मू-कश्मीर और हरियाणा विधानसभा चुनाव के कारण दिल्ली पुलिस ने छह दिन के लिए धारा 163 लागू रखी है। पांच या उससे अधिक लोगों के एक जगह एकत्रित होने और प्रदर्शन करने पर रोक लगा दी गई है। जो भी हो, सोनम वांगचुक को रोक कर दिल्ली पुलिस ने कड़वी यादें ताजा कर दीं। चाहे वह महिला पहलवानों को घसीटने वाली घटना हो या किसानों को रोकने के लिए सड़क पर कीलें गाड़ी गई हों या फिर सीमेंट की ऊंची दीवारें बना दी गई हों। सोनम वांगचुक को रोकना यही याद दिलाता रहा कि कुछ भी नहीं बदला है।

- मोनिका रणवा, जम्मू

चुनावी चुनौती

हरियाणा चुनाव का प्रतिकूल असर उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों में इतनी जल्दी दिखाई देगा, यह कांग्रेस ने भी नहीं सोचा होगा। उसके लिए यह गंभीर चिंता का विषय है। उत्तर प्रदेश में दस विधानसभा सीटों के लिए उपचुनाव होने हैं। इसके लिए सपा ने कांग्रेस की बिना सहमति और चर्चा के छह विधानसभा सीटों पर उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं। शिवसेना ने भी कांग्रेस को नसीहत दी है। बिहार में पार्टी के ही नेता तारीक अनवर ने भी कांग्रेस को कटघरे में खड़ा किया है। आम आदमी पार्टी ने भी कांग्रेस पर दबाव बनाते हुए उसे अहंकारी करार दिया है। मीडिया में भी कांग्रेस की अंदरुनी कलह, कमजोर चुनावी प्रबंधन, टिकटों का गलत बंटवारा और सीलजा प्रकरण को बड़ी कमजोरी बताया गया। वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों में कांग्रेस को सबसे बड़ी चुनौती इंडिया गठबंधन के घटकों को एक साथ लेकर महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में जीत दर्ज करने की होगी।

- वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

अनमोल रतन

रतन टाटा भारतीय उद्योगपतियों में अकेले थे जो मानवीय, परोपकारी और संवेदनशील दिखाई पड़ते थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन देश की आर्थिक प्रगति को समर्पित कर दिया। सादा जीवन उच्च विचार में विश्वास रखने वाले रतन टाटा का जीवन उपलब्धियों से भरा था। उन्होंने उद्योग की दुनिया में भारत को एक सम्मानजनक स्थान दिलाया। लखटकिया नैनो कार लाकर इन्होंने औद्योगिक जगत में नई क्रांति का सूत्रपात किया। देश की आर्थिक प्रगति में उनकी भूमिका रही। उन्होंने असफलता से सफलता की कई कहानियां लिखीं। उन्होंने नाकामियों से कभी हार नहीं मानी। अपनी विलक्षण दूरदृष्टि से कारोबार को आगे बढ़ाया। वर्ष 2008 में होटल ताज पर हुए आतंकी हमले में आहत कर्मचारियों के परिवारों के साथ इन्होंने जो मानवीय दृष्टिकोण अपनाया, वह अविस्मरणीय था। भले ही इन्हें भारत रत्न से नहीं नवाजा गया हो, लेकिन सच्चे अर्थों में ये भारत के रतन थे। इनका इस तरह सहसा चले जाना एक युग का अवसान है।

- नलिन खोईवाल, इंदौर

स्वदेशी की रौनक

एक समय था जब त्योहारों पर बाजार में आयातित वस्तुएं और चीन के दोयम दर्जे के सस्ते सामान भरे पड़े रहते थे। बाजार में चीन की कम गुणवत्ता वाली चीजें लगातार आ रही थीं। मगर आम जनता अब स्वदेशी उत्पादों की ओर आकर्षित हो रही है। ग्राहक बाजार में खरीदारी के समय स्वदेशी उत्पाद पर नजर डालते हैं। स्थानीय उत्पादन, स्थानीय कारीगरों-कलाकारों और हस्त शिल्पियों को भी बढ़ावा मिल रहा है। उनकी मेहनत के दाम मिल रहे हैं। उनकी कला भी निखर रही है। स्थानीय कल-कारखानों और व्यापारियों को ग्राहक मिल रहे हैं। निर्यात बढ़ रहा है। देश का धन देश में ही विकास के काम में आ रहा है। स्वदेशी सामान की खरीदारी में जोरदार उछाल आया है। हम सभी प्रण कर लें कि त्योहारों पर हम सिर्फ स्वदेशी उत्पाद की ही खरीदारी करेंगे और देश के विकास में सहभागी बनेंगे।

- अरविंद जैन, उज्जैन

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

www.readwhere.com

मैं बेशक दूसरे देशों में पर्यटक की तरह जाऊं, लेकिन भारत में तीर्थयात्री की तरह आता हूं। -मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

बच्चों के भी अधिकार

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) का यह खुलासा बेहद गंभीर और चिंताजनक है कि देश के करीब साढ़े ग्यारह लाख बच्चों पर बाल विवाह का खतरा मंडरा रहा है, जो बच्चों की सुरक्षा व अधिकारों पर ध्यान दे रहे निकायों के लिए भी चुनौती है। वर्ष 2006 के बाल विवाह निषेध अधिनियम के तहत देश में बाल विवाह पर प्रतिबंध होने के बावजूद रिपोर्ट बताती है कि 2022 में देश में एक हजार से अधिक बाल विवाह के मामले सामने आए हैं, जो वाकई क्षोभ का विषय है। देश के दक्षिणी राज्यों में साक्षरता का स्तर अपेक्षया बेहतर होने के बावजूद कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों के बाल विवाह के मामलों में शीर्ष तीन में आने से सवाल खड़ा होता है कि क्या हमारी शिक्षा प्रणाली लोगों को जागरूक बनाने के अपने वास्तविक उद्देश्यों को पूरा कर पा रही है। उल्लेखनीय है कि बाल विवाह की शिकार बनने वाली लड़कियों का प्रतिशत 1993 में 49 से घटकर 2021 में 22 फीसदी तक आ गया है। वहीं बालकों की शादियों का प्रतिशत 2006 के सात फीसदी से घटकर 2021 में दो फीसदी रह गया है, जो इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों की कामयाबी की ओर इशारा करता है। लेकिन एक तथ्य यह भी है कि 2016 से 2021 के दौरान बाल विवाह को खत्म करने के मामलों में प्रगति थम-सी गई है, जो दर्शाता है कि यह सामाजिक बुराई अभी भी प्रचलित है, जिसे बिल्कुल भी स्वीकार नहीं किया जा सकता।

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग का कहना है कि वह एक करोड़ से भी ज्यादा बच्चों तक पहुंचा है। जाहिर है कि बच्चों की पहचान और उनकी स्थिति के आकलन करने में आयोग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लेकिन इसके बावजूद आंकड़े बताते हैं कि अभी बाल विवाह की कुप्रथा के खिलाफ लड़ाई खत्म नहीं हुई। कम उम्र में विवाह से बच्चों का बचपन तो छिनता ही है, उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा संबंधी अधिकारों का भी हनन होता है। बालिकाओं के मामलों में तो मुश्किलें और भी ज्यादा हैं, क्योंकि इससे उनकी शिक्षा, वित्तीय

स्वतंत्रता और स्वास्थ्य संबंधी जटिलताएं बढ़ती ही हैं। एनसीपीसीआर की रिपोर्ट लैंगिक भेदभाव और बाल विवाह के अब तक समाज में जड़ें जमाए होने का ही इशारा करती है। बच्चों के अधिकारों की रक्षा एक नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी भी है, इसलिए रिपोर्ट के निष्कर्षों को ऐसी चेतावनी की तरह देखे जाने की जरूरत है, जिसकी और अनदेखी नहीं की जा सकती।

विजयदशमी हमें कौन-सा संदेश देती है?

विजयदशमी अनैतिकता पर नैतिकता और मानवता की विजय का पर्व है। यह हमें प्रेरणा देता है कि हम सिर्फ अपनी चिंता न करें, बल्कि व्यक्तिगत स्वार्थ और फायदों से उठकर मानव कल्याण के लिए कार्य करें तथा दूसरों के हित का भी ध्यान रखें, तभी सही मायनों में यह मानवता की विजय का पर्व होगा।

विजयदशमी हमारे देश का प्रमुख पर्व है और यह अनेक मिथकों से जुड़ा है। यह रावण पर राम की विजय का पर्व है और शक्ति पूजा का भी। विजयदशमी से ही रामराज्य का अभ्युदय हुआ है। राम ऐसे मिथक हैं, जो भक्ति के दोनों संप्रदायों से जुड़े हैं, यानी राम तुलसी के भी हैं और कबीर के भी हैं। यह अजीब बात है कि राम दोनों के प्रेरक बने। उनका जो रामराज्य था, वह गांधी का स्वप्न बना। दूसरी ओर चरखा चलाने के कारण गांधी स्वयं को जुलाहा भी कहते थे, और चरखा कबीर से भी जुड़ा हुआ है। इस तरह से गांधी जी भक्ति की सगुण और निर्गुण, दोनों धाराओं से जुड़े हुए थे। विजयदशमी का त्योहार एक तरफ हमारी मध्यकालीन परिपाटिकता या इतिहास पूर्व परिपाटिकता और मिथक से जुड़ा हुआ है, तो दूसरी ओर स्वाधीनता आंदोलन से, जिसका नारा ही था-रामराज्य।

विश्वनाथ त्रिपाठी
वरिष्ठ साहित्यकार

अब यह जो राम का व्यक्तित्व है, वह अपने आप में अनूठा है। शायद इसलिए राम विश्व के अवतारों में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं, क्योंकि अगर राम का जीवन देखें, तो शायद ही हमारे पुराणों में कोई दूसरा ऐसा व्यक्तित्व हो, जो आजीवन इतना ज्यादा दुखी रहा हो। एक ओर तो राम लोकनायक हैं, रामराज्य के स्थापक हैं और दूसरी ओर वह आजीवन दुखी हैं। वाल्मीकि रामायण में प्रभु राम कहते हैं वाल्मीकि से, मेरी तरह इतना दुखी व्यक्ति वसुंधरा पर कोई नहीं है। यानी जब राज्य मिलने वाला था, तो राज्य नहीं मिला, वनवास मिल गया; वनवास में गए, तो पत्नी का अपहरण कर लिया गया और जब रावण से लड़ने के लिए गए, तो लगभग हारने के कगार पर पहुंच गए थे। आप तुलसी के राम को छोड़कर वाल्मीकि के राम और निराला (*राम की शक्ति पूजा*) के राम को देखें-*'धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध/धिक साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध।/जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का न हो सका।'* यहां हमें राम आशंकित दिखते हैं कि मैं कुछ कर नहीं पाऊंगा।

मिथकों की एक विशेषता यह होती है कि वे कहने को तो काल्पनिक

होते हैं, लेकिन वे जीवन के सत्य का सार होते हैं। *राम की शक्तिपूजा* में निराला ने राम को स्वतंत्रता आंदोलन का नायक बना दिया, या यों कहें कि ब्रिटिश साम्राज्य से लड़ने वाला योद्धा बना दिया। इस कविता में कहा गया है कि *अन्याय जिधर है उधर शक्ति* यानी दैवी शक्ति अन्यायी (ब्रिटिश राज) के पास है। कहने का तात्पर्य यह है कि राम का मिथक ऐसा है, जो आज भी प्रासंगिक है। वह लोकनायक हैं और वह हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के नायक के प्रतीक बनकर भी आते हैं।

उनका दुख आगे भी जारी रहता है। राम जब रावण वध करके अयोध्या लौटते हैं और गद्दी पर विराजते हैं, तो उन्हें सीता को वनवास देना पड़ता है। इस तरीके से एक बड़ी विचित्र बात यह है कि सीता और राम जीवन में ज्यादा देर तक साथ रह ही नहीं पाते। मेरे गुरु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते थे, वाल्मीकि रामायण में क्रौंचवध की जो कथा है, वह रामकथा का वस्तु-निर्देश (पहले से ही घटित होने वाले घटनाक्रम का संकेत) है। जिस तरह से क्रौंच पक्षी के जोड़े का मिलन नहीं हो पाता है, उसी तरह से राम और सीता भी जैसे ही साथ रहने की सोचते हैं, तो किसी न किसी वजह से उन्हें अलग होना पड़ता है।

विजयदशमी का पर्व हमें बताता है कि भले ही राम का जीवन दुखी रहा हो, लेकिन उनके जीवन से जो हमें नैतिक संदेश मिलता है, वह मनुष्यता की विजय का है। इसलिए विजयदशमी मानवता की विजय का पर्व भी है। इसे दशहरा इसलिए कहा जाता है कि दशमुख रावण, जो अनैतिकता का प्रतीक है, नैतिकता के प्रतीक राम के हाथों मारा जाता है। मिथक अथवा पर्व-त्योहार का महत्व हमारे जीवन में इसलिए होता है कि हर युग में वह हमें अपने संकट से उबरने का एक संदेश देता है। तो आज विजयदशमी हमें कौन-सा संदेश देती है?

आज मानवता के सामने सबसे बड़ा संकट है कि मनुष्य अपने-आप में सिमट गया है, आत्मकेंद्रित हो गया है, मानो मनुष्य का मनुष्य से कोई संबंध ही नहीं रह गया है। इसके अलावा, आज मानवीय और सामाजिक मूल्यों का बहुत ज्यादा क्षरण हो गया है। मैं इस त्योहार के अवसर पर इसे राजनीति से परे रखना चाहता हूं, लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं, जिनके माध्यम से मैं अपनी बात स्पष्ट करना चाहता हूं। हाल के इतिहास में हमने देखा है कि जब दो देशों या दो पक्षों के बीच में संघर्ष या टकराव होता था, उनके बीच में सुलह-समझौते की गुंजाइश होती थी। इस समय इस्राइल गाजा पर लगातार हमले कर रहा है, लेकिन कोई उसे रोकने वाला नहीं है, चाहे रूस के पुतिन हों, या अमेरिका के जो बाइडन हों। इस्राइल को अमेरिका समर्थन दे रहा है, तो रूस यूक्रेन को तबाह कर रहा है। समझौते का कोई उपाय नहीं दिखता और इसका खामियाजा पूरी मानवता को भुगतना पड़ रहा है। सब अपने-अपने फायदे देख रहे हैं। इस तरह से व्यक्ति से लेकर महाशक्तियां तक आत्मकेंद्रित हो गई हैं।

जिस तरह से व्यक्ति परिवार और समाज की चिंता छोड़कर केवल अपनी चिंता करता है, अपना सुख देखता है, उसी तरह से ये राजनीतिक शक्तियां भी, जिनका कर्तव्य है सामाजिक चिंता करना, अपने ही हित को देखती हैं और मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों की परवाह नहीं करतीं। सामाजिक मूल्यों की, मानवता की, पर्यावरण संरक्षण की किसी को कोई चिंता नहीं है और यह हमारे समय का सबसे बड़ा संकट है।

इस महान संकट की घड़ी में विजयदशमी का त्योहार हमें मानवता की विजय का संदेश देता है और मानवता की विजय का मतलब है सामाजिक चित्त की विजय। विजयदशमी का त्योहार रावण पर राम की विजय का संदेश देता है। विजयदशमी का त्योहार शक्ति के शिखर से जुड़कर मानव कल्याण का संदेश देता है। उसी तरह से आज की जो राजनीति है, वह शांति का आह्वान कर इस संकट पर विजय प्राप्त कर सकती है। विजयदशमी का यह त्योहार हमें प्रेरणा देता है कि हम सिर्फ अपनी चिंता न करें, बल्कि व्यक्तिगत स्वार्थ और फायदों से ऊपर उठकर मानव कल्याण के लिए कार्य करें तथा दूसरों के हित का भी ध्यान रखें, तभी सही मायनों में यह मानवता की विजय का पर्व होगा। edit@amarujala.com

नोबेल पुरस्कार

संघर्ष और प्रेम के बीच लफ्जों की लय

हान कांग को यह सम्मान उनके गहन काव्यात्मक गद्य तथा मानवीय जीवन की नाजुकता को उजागर करने वाले रचनात्मक प्रयासों के लिए दिया गया है।

इस बार साहित्य का नोबेल पुरस्कार दक्षिण कोरिया की युवा लेखिका हान कांग को देने की घोषणा हुई है। इससे यह भी पता चलता है कि साहित्य की दुनिया में भी नई आवाजें आ रही हैं, क्योंकि दक्षिण कोरिया को इस आवाज को तथा उसके साहित्य को मान्यता देना एक नई पुरवाई की तरह है, जो उसके समूचे साहित्य में भी दिखाई देती है।

दक्षिण कोरिया की 53 वर्षीय युवा लेखिका हान कांग ने जितना गंभीर साहित्य रचा है, उसकी मिसाल दुनिया भर की जुबानों में लिखे गए साहित्य में नहीं मिलती है। नोबेल स्वीडिश अकादमी ने कहा है कि लेखिका हान कांग को यह सम्मान उनके गहन काव्यात्मक गद्य के लिए तथा उस गद्य की ऐतिहासिक प्रासंगिकता और मानवीय जीवन की नाजुकता को उजागर करने वाले रचनात्मक प्रयासों के लिए दिया गया है।

दक्षिण कोरिया में 27 नवंबर, 1970 को जन्मी हान कांग की पुस्तक *वेजिटेरियन* को 2016 में बुकर इंटरनेशनल प्राइज भी मिल चुका है, जो दिमागी बीमारियों के बारे में है। कांग ने अपनी पढ़ाई जनिसन विश्वविद्यालय से की है। अपने साहित्यिक सफर की शुरुआत 1993 में उन्होंने कविताओं की किताब *विंटर ईयर्स* के साथ की थी। उनका पहला कथा संग्रह *लव आफ येसूई* 1995 में प्रकाशित हुआ। 1998 में उसकी अनेक किताबें आईं, जिनमें *ब्रेथ फाइटिंग, प्रीक लेसन, ह्यूमन एक्टस, व्हाइट बुक एंड थे* इत्यादि शामिल थीं। इन किताबों ने दुनिया भर में बसे हुए पाठकों के प्यार के साथ-साथ अन्य विधाओं पर उनकी लेखनी को एक नया स्वरूप बख्शा है। *वेजिटेरियन, योर कोल्ड हैंड, संग सांग, ब्रेथ फाइटिंग* आदि पुस्तकों ने दुनिया भर में धूम मचाई। उनका ऐतिहासिक बायोग्राफिकल उपन्यास *व्हाइट बुक* पढ़ते हुए लगता है कि यह समकालीन कहानी का एक बेहतरीन नमूना है, जिसके बारे में स्वीडिश अकादमी ने भी जिक्र किया है।

कृष्ण कुमार रत्तू

दुनिया भर में उनकी लिखी पुस्तकें अनुवाद के जरिये अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। उनकी बेहद चर्चित पुस्तकों में *वेजिटेरियन* यह पुस्तक है, जिसका जिक्र बार-बार होता है। हान ने इसे जिस तरह से जिंदगी तथा मानवीय मूल्यों की नई व्याख्या करते हुए अपनी विशिष्ट शैली में रचा है, वह सचमुच अद्भुत है। वह अभिभूत कर देने वाले शब्दों की जादूगर हैं। विश्व साहित्य का एक बड़ा पाठक वर्ग उनकी रचनाओं को रुचि से पढ़ता है। हान के अनुसार, आज जिंदगी में सब कुछ बदल रहा है और दुनिया त्वरित गति से बदल रही है तथा साहित्य के लिए जगह घट रही है। इन दिनों आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सोशल मीडिया तथा डिजिटल मीडिया के प्रयोगों ने जिस तरह से किताबों की दुनिया बदली है, उससे दुनिया में साहित्य की भूमिका कैसी रहेगी, उस पर भी उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा है कि जब तक आदमी का वजूद इस दुनिया में रहेगा, वह अपने शब्दों के साथ जिंदगी की परिभाषाओं को ढूंढता रहेगा। चूंकि यह साहित्य में ही संभव है, इसीलिए साहित्य अमर है और रहेगा। उन्हें नोबेल मिलने से एक बात तो साफ है कि सच्चा, विवेकशील, निर्मल तथा जिंदगी की संभावनाओं को तलाशता हुआ शब्दिक संसार सदैव जिंदा रहता है। उन्हें दुनिया भर के कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, परंतु उनके अनुसार, उनके लिए पाठकों का प्रेम सबसे बड़ा अवॉर्ड है।

-हिंदी, पंजाबी के लेखक, ब्रॉडकास्टर तथा दूरदर्शन के पूर्व उप महानिदेशक

मैं ऐसे समय की कल्पना कर रहा हूं, जब हम रोबोटों के लिए यही होंगे, जो आज इन्सानों के लिए कुत्ते हैं। -वालीड शैनन

कुछ लोग चिंतित हैं कि एआई हमें हीन महसूस कराएगा। लेकिन फूल को देखकर अगर इन्सानी दिमाग कमतर महसूस करता है, तो यह सही भी है। -एलन के

आसमान नीला क्यों है

एक ही बात सत्य है कि मनुष्य जन्म लेता है, जीता है और मरता है। इसलिए मनुष्य की आत्मा के लिए एक चुनौती है कि वह इस विशाल रहस्य को समझने की कोशिश करे, जो हमारे चारों ओर है।

मुझसे व्याख्यान के लिए जब विषय चुनने के लिए कहा गया, तो मैंने 'आकाश नीला क्यों है' विषय चुना। सौभाग्य से, आज प्रकृति भी दयालु है। जब मैंने ऊपर देखा, तो पाया कि आकाश नीला है। लेकिन हर तरफ नीला नहीं है, क्योंकि बहुत सारे बादल हैं। मैंने यह विषय इसलिए चुना, क्योंकि इसे देखने के लिए आपको प्रयोगशाला में जाने की जरूरत नहीं है। बस आप ऊपर आसमान की ओर देखें, नीला आकाश नजर आएगा। और मुझे लगता है कि यह विज्ञान की आत्मा का उदाहरण है। आप अपनी आंखें और कान खुले रखकर और इस दुनिया को देखकर ही विज्ञान सीखते हैं।

सी.वी. रमन

विज्ञान की असली प्रेरणा मेरे लिए हमेशा से प्रकृति के प्रति प्रेम रही है। वास्तव में, हम इस दुनिया में जहां भी नजर दौड़ाते हैं, प्रकृति में होने वाले सभी प्रकार के चमत्कार देखते हैं। खासकर मैं जो कुछ भी देखता हूं, वह बिल्कुल अविश्वसनीय है। मुझे लगता है कि वैज्ञानिक भावना का सार पीछे और परे देखना है और यह महसूस करना है कि हम जिस दुनिया में रहते हैं, वह कितनी अद्भुत है! और जो कुछ भी हम देखते हैं, वह हमारे लिए जिज्ञासा का विषय नहीं है, बल्कि एक चुनौती है। क्योंकि न स्वर्ग है, न नरक है, न पुनर्जन्म और न ही अमरता है। केवल एक ही बात सत्य है कि मनुष्य जन्म लेता है, जीता है और मरता है। इसलिए मनुष्य की आत्मा के लिए एक चुनौती है कि वह इस विशाल रहस्य को समझने की कोशिश करे, जो हमारे चारों ओर है। हमारे देश की युवा पीढ़ी को इस बड़ी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। विज्ञान पूर्ण भाईचारे के लिए सबसे अच्छा अवसर प्रदान करता है। विज्ञान के सभी लोग भाई हैं।

जीवन धारा

अब मैं अपने विषय पर लौटता हूं, 'आसमान नीला क्यों है?' दिलचस्प बात यह है कि इस सवाल का जवाब देना आसान है। अगर आप किसी वनस्पतिशास्त्री से पूछें कि पत्ते हरे क्यों होते हैं? तो आपको उत्तर मिल जाएगा, 'क्लोरोफिल'। बस इसी तरह से आपको सभी वैज्ञानिक सवालों का जवाब मिल जाएगा। आप निश्चित रूप से ऐसे जवाब देकर परीक्षाएं पास कर सकते हैं, लेकिन यह असली जवाब नहीं है। जैसा कि मैंने पहले कहा, प्रकृति की वैज्ञानिक चुनौती सिर्फ खोज करने के लिए सोचना नहीं है, बल्कि इस रहस्य को समझने की कोशिश करना है।

एआई संचालित रोबोट धर्म-अधर्म नहीं देखता

तालिबानी लड़ाकों ने जब एक छोटी लड़की को आगे कर दिया, तो इन्सानी सैनिकों ने लड़की को बचा लिया। लेकिन अगर उनकी जगह एआई संचालित रोबोट होता, तो क्या वह यही करता?

जोना एम कैसेल
द न्यूयॉर्क टाइम्स

मुझे अच्छा लगता है, जब मैं फोन को अपना चेहरा दिखाकर अनलॉक कर सकता हूं, या जब एलेक्सा को अपनी पसंद का संगीत सुनाने के लिए कहता हूं, या जब मैं यह देखता हूं कि अमेजन मेरे सामने मेरी पसंदीदा चीजें ही पेश कर रहा है। मोबाइल ऐप को पता है कि मुझे कब गाड़ी की जरूरत है। यहां तक कि किराने की दुकान पर जाने की जरूरत भी अब महसूस नहीं होती। अपनी इच्छा से भले ही मैं कुछ खाने के लिए बना लूं या घर की सफाई कर लूं, लेकिन मेरे मोबाइल ऐप मुझे यह सहूलियत भी देते हैं। लेकिन एक अनचाहा विचार मुझे आजकल परेशान कर रहा है कि जिंदगी को आसान बनाने वाली यह तकनीकी क्या किसी की जान भी ले सकती है। रूस की कलाशनिकोव कंपनी ने एक सेल्फ लर्निंग मशीनगन बनाई है। इसका एआई संचालित सॉफ्टवेयर टारगेट की फोटो या वीडियो देखकर उसकी पहचान करता है और जितना अधिक इसका इस्तेमाल होता है, उतनी ही ज्यादा यह सटीक निशाने लगाने लगती है। इस्राइल-हिजबुल्ला और रूस-यूक्रेन युद्ध में तबाही मचाए हुए तकनीकी संचालित ड्रोन से हर कोई वाकिफ है। तकनीक ने तो हथियारों को और भी ज्यादा खतरनाक बना दिया है, क्योंकि यह हथियारों को मशीन बना देती है। अब तो एआई का इस्तेमाल इन्सानों को मारने के लिए होने की बात हो रही है। एआई विशेषज्ञ स्टुअर्ट रसेल एआई के संभावित खतरों को लेकर आगाह करते हुए कहते हैं कि रोबोट हत्यारे हो सकते हैं। उन्होंने इसको लेकर एक फिल्म भी बनाई है, जो वाकई भयभीत करने वाली है। स्टुअर्ट की फिल्म में दिखाया गया है कि एआई से संचालित रोबोटों का एक समूह एकाएक हमला बोल देता है। लाखों लोगों की जान लेने वाला यह सामूहिक विनाश परमाणु हथियारों की तरह है। इसे बनाना आसान और सस्ता है। इसे एक-दो नहीं, बल्कि हजारों, लाखों की संख्या में बना सकते हैं। साथ ही यह उन लोगों को पहचानकर मारता है, जिन्हें आप लक्षित करते हैं। विशेषज्ञ भले ही अभी कहते हैं कि ऐसा नहीं होगा, लेकिन हम एआई युक्त मशीनें बना रहे हैं, जो बहुत ही डरावनी हो सकती हैं। आप एआई से कैंसर, ट्यूमर या अन्य और भी बीमारियों का पता लगा सकते हैं। लाखों लोगों का एक साथ उपचार भी हो सकता है। लेकिन, मेरा मानना है कि सेनाओं को एआई का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। लेकिन यह पहले से ही हो रहा है। हथियार बनाने वाली सभी तकनीकों की हकीकत यह है कि ये हथियार के साथ सड़कों पर उतरकर खुद फैसले लेकर हत्याएं कर सकती हैं। इन्सानी सैनिक थकते हैं और उनमें भावनाएं होती हैं, उनके निशाने चूकते भी हैं और जख्मी भी होते हैं। लेकिन मशीनों में ये सब चीजें नहीं होतीं, वे केवल मशीन की गति से ही प्रतिक्रिया देती हैं। स्वचालन की बढ़ती प्रवृत्ति की वास्तविकता को समझने के लिए दशकों पहले के अमेरिकी गृहयुद्ध की ओर जाना होगा, जिसमें गैटलिंग गन का इस्तेमाल हुआ था। गैटलिंग गन को चलाने के लिए चार लोगों की जरूरत होती थी और यह सौ सैनिकों के बराबर गोलीबारी कर सकती थी। गैटलिंग गन का आविष्कार तो जीवन की रक्षा के लिए हुआ था, लेकिन इसका विपरीत असर पड़ा और इसने कई लोगों की जान ली। डेढ़ सौ से ज्यादा वर्ष बाद भी यही चिंता बनी हुई है। मुझे अफगानिस्तान युद्ध का वाकया याद है, जब तालिबानी लड़ाकों ने एक छोटी लड़की को आगे कर दिया। इस दौरान इन्सानी सैनिकों ने मानवता का परिचय देते हुए उस लड़की की हत्या नहीं की। वहीं यदि इस जगह पर एआई संचालित रोबोट होता, तो निश्चित रूप से वह उस लड़की की हत्या कर डालता, क्योंकि रोबोट को इसी तकनीक से तैयार किया गया है कि युद्ध में सामने जो आए, उसको मार दो। एल्गोरिदम के दौर में युद्ध इसीलिए ज्यादा डराते हैं।

न्यूरल नेटवर्क

न्यूरल नेटवर्क एक मशीन लर्निंग मॉडल है, जिसे डाटा को इस तरह से प्रोसेस करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो मानव मस्तिष्क के कार्य और संरचना की नकल करता है। न्यूरल नेटवर्क अपने में जुड़े नोड्स या कृत्रिम न्यूरॉन्स के जटिल नेटवर्क हैं, जो जटिल समस्याओं से निपटने के लिए सहयोग करते हैं और जो भाषण व दृष्टि पहचान जैसे सुविधाएं भी देते हैं। इसकी मदद से कंप्यूटर मनुष्यों के समान छवियों को पहचान व उनमें फर्क कर सकते हैं।

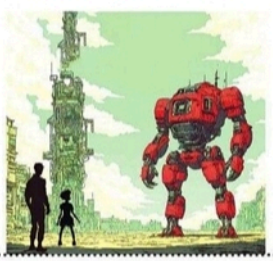

क्वांटम कंप्यूटिंग

यह एक तेजी से उभरती हुई तकनीक है, जो विभिन्न आंकड़ों और मौसम इत्यादि की एक साथ गणना कर तुरंत नतीजा सुझाती है। आज के पारंपरिक कंप्यूटर बाइनरी शून्य और एक अवस्थाओं के रूप में जानकारी संग्रहीत करते हैं, लेकिन क्वांटम कंप्यूटर क्वांटम बिट्स का उपयोग करके गणना करने के लिए प्रकृति के मूलभूत नियमों पर आधारित होते हैं। यह क्यूबिट्स पर काम करता है। क्यूबिट्स यानी कंप्यूटर बिट्स, जो सामान्य कंप्यूटर में गणना करने वाले बिट्स की तुलना में काफी तेज होते हैं। ये नई वैज्ञानिक खोजों, जीवन रक्षक दवाओं और आपूर्ति गृंखलाओं में सुधार इत्यादि के अवसर प्रदान कर सकते हैं।